A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया संस्करण

दुध-पानि फराक फराक

𑒠𑒳𑒡-𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒤𑒩𑒰𑒏

कथा एवम् पाण्डुलिपि : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल



पलल्वी प्रकाशन

छाया एवम् सम्पादन/सङ्कलन : उमेश मण्डल

दुध-पानि फराक फराक/कथा-पाण्डुलिपि-छाया सङ्कलन

सं. उमेश मण्डल



दुध-पानि फराक फराक

दुध-पानि फराक फराक

(मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया पोथी)

कथा एवम् पाण्डुलिपि : जगदीश प्रसाद मण्डल

छाया एवम् सम्पादन/संकलन : उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-89-8

दाम : 500/- (भा. रू.)

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

DUDH-PAIN PHARAK PHARAK

A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

कथाक सत्तैर-

पोथीक मादे

सगर राति दीप जरय'क शातांक आयोजनक माहौल रहने एकाएक मन बनल, मन बनल माने विचार एलापर, जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण एबक चाही। ओना, जहियासँ टंकन/सम्पादन/प्रकाशन कार्य आरम्भ केलौं तहियेसँ सभ पाण्डुलिपिक छाया प्रतिकेँ संजोगि-संजोगि रखैत एलौं हेन। एक बेर किछु पोथीक लोकार्पण सिडीमे सेहो करेने रही। मुदा वर्त्तमानमे मित्र नवरत्न वेंगानीजीक विचार भेलैन जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण हेबक चाही, माने एकटा आरो पोथी विमोचन हेतु 'सगर राति दीप जरय'क शातांक समारोहमे बढ़ि जाएत। ओना, आयोजनमे मात्र दू दिन समय बँचल अछि, तथापि काजमे हाथ लगा देलौं। छाया-चित्र तैयार रहबे करए, मुदा एकर महत्वपर अपन नजैर नइ गेल छल। गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)केँ पुछलयैन। ओहो कहला जे सम्हरैए तँ जरूर कएल जाए, ई एक नव कार्य होएत, तेतबे नहि कथा विधामे सम्पूर्ण पोथी ऐ रूपमे अपना ऐठाम पहिल होएत।

बहुत उत्साहित भऽ कऽ ई पोथी अपने लोकनिक हाथमे दऽ रहल छी। उत्साह एतेक जे समरोहक अफरा-तफरीक बावजूदो मात्र दू दिनमे ऐ कार्यकेँ, नव कार्यकेँ करैत अपने लोकनिक सेवामे समर्पित कए रहल छी।

उमेश मण्डल

मो: 6200635563

निर्मली (सुपौल)

20.12.2018

कथा – अप्पन गाम – पृ०-१

अट्ठाइस (अठाइस) बर्ख ~~नोकरी~~ बंगलोर में नोकरी केला पश्चात
शुभलाल भाएक मन (जीह) ऐना उचौट गेलनि जे एको
क्षण रहब पहाड़ जेँका बुझि ~~पड़लनि~~ पड़ानि (पड़ैत)। सात
दिन सँ एहेन विचार मन में एलैन आ दिनो-दिन असाध्य रोगक
रोगी जेँका विचार मे मजबुती अबैत गेलनि आ रहैक
विचार (बंगलोर में) मे उड़-बिड़ी लगौ लगलैन। ऑफिस
जाइ सँ पुर्वे डेरे पर मन मे आबि गेलैन जे काल्हि
गाम लै विदा भ' जाएब। बिड़हाएल मने शुभ
लाल भाए ऑफिस विदा भेला। रास्ता भरि यैह मन मे उठ-
बैठैत रहलैन जे आइ वोलनटरी रिटायरमेंटक
लै आवेदन दइये देब। मात्र अढ़ाई बर्खे नोकरी शेष
अछि तैं बीच मे कोनो तरहक बाधा नहिये हएत। ओढ़ना पाँचा बरखे पुर्वे तक मने-मन ~~विचारि~~
अधिकार ओढ़ने। विचारलीन जे केकरो पुछबै तखन ने ओ कुश-कुशा
पाछा रंग-बिरंगक विचार द' द' मनाहियो करत। नीक केलौं
जे आबन तक ने पत्नीयेलग बजलौं ~~छेन~~ आ ने दुनू
बेटेक कान मे देलौं हेन।

ऑफिसक रंग-रुप जेना शुभलाल भाए कैँ जेना बदरंग
बुझि पड़ैत रहनि। जे ऑफिस कहियो शुभलाल भाए कैँ कातिकक
लक्ष्मी-गणेशक पुजनोत्सव जेँका लगौ छलनि ओहए ऑफिस
आइ उजड़ल-उपटल ओहन विरान लगौ लगलैन जेना कोनो
देश कोनो देश कैँ उजाड़ि-उपारि बेनगन कौ-ए। ऑफिस
बीच के नव-पुरान संगी सब रहनि (रहैन) तिनको सबहक
चेहरा बदरंगे बुझि पड़ैत रहैन। जहिना परिवार मे
पत्नीक संग वा बेटाक संग कोनो विचार मे विभेद
अबिते चेहराक सूरत मे बदरंगी अबै लगौ-ए आ
बढ़ैत-बढ़ैत एते बढ़ियो जाइ-ए जे एक-दोसरक
हत्यारा सेहो बनियो जाइ-ए। ऐना करब जे एहेन
परिवेश कैँ रोकलौ त जा सकिते अछि, हँ, रोकल जा
सकै-ए मुदा परिवेश कैँ रोकै सँ पहिने ओकर पाबशता संग परबरिस कैँ सेहो
बुझै पड़त। खैर जे अछि,
शुभलाल भाए अप्पन टेबुलक कुरसी पर बैसि आगू

पृ- 2

दिशि (तकलनि) तकलैन त कागजक फाइल सब पर नजरि पड़ैत अछि जे मनुष्य अपन समर्पण अपना लेकात ओहि दुनिया बदलि जाइ छै आ ओ दोसर दुनियाक लोक केना भ' जाइ-ए से त ओ जनइ मुदा शुभकलाल भाए से सब किछु नै बुझलनि (बुझलैन आ) अपन विचार पर आनि अटैक गेला। जँ भॉलनटरी रिटायरमेंट नहि देत, तखन कि करब। धनतंत्रक धनिक तंत्र मे जखन जीबै छी तखन अनेको वरन्नो लगा सकै-ए आ अनेको लांछना सेहो लगा सकै-ए (त सकित आदि)। कँ घेरि सकै-ए। तखन? जेना-जेना शुभकलाल भाए अपना दिशि बदल (देखा) अबैत तेना-तेना मन सेहो सकता लगलनि (सकताइते देलैन)।

किछु कालक गुम्मीक पद्धति शुभकलालक भाएक मन मे ठहलनि जे जखन विचार बना (मन मे सोचि) लेलौं जे अपन गाम जाएब तखन जेबे करब। वृन्दावनक ओइ मरुभूमि मे रहि कृष्ण-राधिकाक संग कदमक गाछ पर बैस बाँसुरि टेरि (टेर) सकै- (देखा) छथि तइ सँ त हमर गाम बहुत नीक अछि। बेचारी सबकेँ (राधिका सबकेँ) डिबिया मे खानक मटिया तेल नहि रहने कठगौनी- कौरक बिमा (बीमा) केँ पीस-पीस तेल निकालि डिबिया जरबै पड़ै (छेलै तेहम) छै, हमर गाम त बिजली सँ जगमगाए ए। टेबुल पर बैसल शुभकलाल भाएक मन मे ठहलैम जे जखन ऑफिस आनि गेल छी तखन, पहिल विचार इ कौक अछि जे आजुक ड्यूटि केला पर पद्धति (सेवानिवृत्तिक) आवेदन करब आ कि ड्युटी करौं सँ पहिने करब। जेना-जेना शुभकलाल भाएक मन मे विचार मौइनि (मौइन) (चलैल) चलतीन तेना-तेना जखन जेँका विचार मे चिकनपन अबैत रहैन। (विचार केँ फलिया वान्ह सँ बान्हि) विचार पक्का क' लेलनि जे ऐगाम सँ (भाइ) मैसे जाएन। जखन पत्राचार ले पोस्ट-ऑफिस अछिये तखन अगिला सब काज ओही माध्यम सँ होएत रहत। भॉलनटरी रिटायमेंटक आवेदन लिखि लिख शुभकलाल भाए चुप-चाप नेने गेला आ अपन अफसरक फाइल मे लगा चौहि ऑफिस सँ घुमि अपनइ

पृ०-२

~~सोझे अधिक डेरा दूर आगि गेला~~।
डेरा दिश कदम बढ़ौलनि।

कार्यालयक (ऑफिसक) अंतिम गेट (फाटक) लग पहुँचते जहिना भकुआएल कें भक्क टुटने नजैर बदैल जाइ-छै, जहिना दिशांस लगलाहा कें दिशांस छुटिते बदलल-बदलल दुनिया देख पड़ै लगै छै, तहिना शुभलाल भाए कें भेलनि। जिनगीक एकटा ओहन बान्ह तोड़ैक सीमा पर पहुँच गेल छी; जेहन एक दिशि स्वतंत्र जिनगीक प्रखर ज्योतिक प्रखरता पसरल अछि तँ दोसर दिशि मनुष्यक जिनगीक गुलामीक मारीपनक कालिमा पसरल अछि। दुनूक अपन दुनिया छै, जइमे दोहरी सब किछु छै। संकल्प सेहो छै, विकल्प सेहो छै। संकल्पवान सेहो छथि आ विकल्पवान तँ छइहे।

गेटक सीमा टपिते शुभलाल भाएक मन मे उठलैन अप्पन गाम। दुनियाँक बीच जते मानवक संग आनो-आनो जीव-जन्तु अछि ओकरो तँ अपन-अपन देशो छै ओहिना आनो भेषो छै अपन दुनियो छै, अपन मनियो छै अपन मनियाक ओहिना कनियो-सुकन्यो छै आ दुरकनियो तँ छइहे। कन्या-सुकन्या मन मे अबिते जेना कोनो फूलक गाछ मे फूलक कोढ़ीक आगमन होइते फूलक आशा-पूरक आगमन होइ छै, ~~अहिना भऽ जाइ-ए~~ तहिना शुभलाल भाए कें सेहो अपन गामक आशाक फूलक कोढ़ी जकाँ अपन कोढ़ बिहुँसलैन। बिहुँसते मन गवाही देत कहै लगलैन, जे गाम-गाम, मिथिलाक धाम छी, तखन जँ मिथिलाक गाम कें छोड़ि देता आ तखन ऐहेन जिबठगर मन गामेक सँ जे सोहरियै-समदाउन सुनबै, कतौ वा कोनो कता तेइ सँ कते-दूर तक मिथिला कें अंग्रेज पोता वा बैवे छथि, से तँ मने-मन सब जनबे करै छी। आइ एकसम शदीक कुहियै मिथिलो आ मिथिलाक गामो कें देखैक जरूरत अछि। जहिना एक दिशि पहाड़क पानिक उपद्रवक संग मोनसूनक (समुद्री) उपद्रव अछि जइ सँ धार-धुरक छाड़का रहने पानि बेसम्हार भऽ जाइ-ए जइ सँ गामक-गाम उजैड़-उपैट जाइ-ए। तइ संग गाम सँ पड़ाएन भेने गामक सम्पत्ति सेहो कमैक गेल। मनुखे रहने बजारो बनै-ए आ बजार मेटाइतो अछिये। तैं सब करामाती हमही-अहाँ ने छी।

पृ०-४

जखन मनुष्य होइक नाते अपन गिनतीक श्रेणी दुनियाक बीच रखैत छियै, बढ़िया विचारो आ काजो तैं दुनि जखन दुनियाँक बीच रखै छी तखन दुनियाँक सब किछु सँ नै संबंध बनबै पड़त। जाबे संबंध नहि बनत, ताबे निर्णायक दौड़ मे पहुँच देना सकै छी। अहिना बेसी काज सोंका मे ऐने ~~सब सब अकद्दि (अकैद्दै)~~ मन अकद्दै लगै-ए तहिना विचारक दौड़ मे शुभलाल भाएक मन मे सेहो अकद्दी उठलैन। अकद्दी उठिते मन कुहुकनि अनेरे जे दुनियाँ दिशि देखैत-देखैत अपने रस्ता भोतिया जाए, सेहो केहेन हएत। जाबे इजोत मे आँखि तकै छी ताबेक दुनिया आ भोतिआएल-अन्हराएल मे देखबै एके थोड़े हएत।

अकुछल मन मे स्वच्छतल बिचार शुभलाल भाएकेँ उठलैन। उठलैन ई जे सबसँ पहिने पत्नी कैं अपन आजुक क्रियाक रूप देखबैन। विआहक पद्धति आइ धरिक संगीये (टा नहि संकल्पित संगी)। कम सँ कम जँ दुनू परानी एक विचार मे रहब तँ एते त आशा बनिये जाएत कि नै जे सीता हरण भेला पद्धति भगवान-रामो दुइये भाए गंगा कातक जंगल सँ ल'क' जेंका तकक बोन-झाड़ टपि लेथी तखन हम ~~कि~~ छी। (किअए ने गामक जिनगी अपन जिनगी सन टपि सकै छी।) पचपन-साठिक उमेरक सीमाक बीच छी, ओहुना अढ़ाइ-सालक (नोकरी पद्धति) बेकम्मा भइये जाएब। कम सँ कम एतेक गिनती त हमरो अपना गामक धरतीक नसीब भइये जाएत ने जे भाए भीखो-दुख काटि ओहुना जन्मक रजिष्टर मे नाम दर्ज अछि तहिना मृत्युक रजिष्टर मे सेहो भइये जाएत। (येह ने भेल धरती-पर जीवन-मृत्यु।)

डेरा मे (ओना शुभलाल भाए एकटा मकानो बना नेने छथि, मुदा ओ अखनो धरि घरक श्रेणी मे नइ एलैन हेँ डेरे) अनुसार, पत्नीओ आने दिन जेकाँ ओछैली (घरवारी जेँका पत्नी कुर्सि पड़लैन।) मुदा कुसमय पतिक आगमन सँ किछु अचोंभित भेने ओछैली ~~जेकाँ~~, जइ सँ शुभलाल भाएक चेहरा पर नजैर (टिकले ने केलैन) पहुँचबे नै जेइबे हृदयक फूल कैं देखि पेबितथि। शंकासुमन रहने, भेलानि जे मन-तन ने ते खराब (भेलैन) अछि

कथा - अप्पन गाम - पृ० ५

अगुआ कें किछु नहि बजली। पत्नीक (अपराजीतक) संबंधक विचार शुभ-लाल भाएक मनमे एकाएक जागि गेलनि। धरती पर जते मनुख्य अछि सभकें स्वतंत्र रूपे जीबैक अधिकार अछि मुदा तइ लै जीबैक दुनियाँक रखगाता अछिये। तखन तँ भेल जे दोसरक अपेक्षा पत्नी तँ बंधन सहितक करार (वैवाहिक संबंध) केनहि छथि जे आबेजीब संगे सजीव आ मृत्युक पद्धति एक-दोसरकेँ शरीरान्त करब। ओना शुभ-लाल भाएक मनक चेतनशीलता मे सेहो सोच उठि पड़ल छलैन। आइ धरिक पत्नीक नैहर बेवहारक संबंध शुभलाल भाएक छलैन तइ मे मीठपन सेहो जागि चुकल छलनि। मनकेँ (शुभलाल भाएक मन कें) तेना विचार पकड़ि लेलकनि जे टस सँ मस हेबाक कोनो विकल्प कें ओ एकसिरे खारिज क' देने छला। अपन नोकरी सँ भोलनटरी रिटायरमेंटक चर्चो नहि कएत शुभलाल भाए बजला - 'काल्हि गाम जाएब।'

'काल्हि गाम जाएब', इ कि भेल, ने अखन छठि पावनि अछि आ ने दुर्गापुजा, ने केतौ बिआह-दानक लगन अछि आ ने कियो तेहेन मरबे केलनि अछि जे तइ सराध मे जेता। तखन कोन एहेन धड़फड़ी गाम जाइक भ' गेलनि जे जेता। तैं आगुक आशाक बात सुनै लै अपराजित मुँह दिशि (दिस) देखै लगली। पत्नीक कोनो प्रतिक्रिया नहि देख शुभलाल भाएक मन मे एकाएक उठलैन जे एते त' समझदारी पत्नी मे अबिये गेलैन हेन जे बात (आगुक बात) सुनै लै ततपर (तत्पर) भेली। अपन जिनगी कें समुद्रक रेत पर देखलेत शुभलाल भाए अतीतक मुस्की मारलैन। अतीतक मुस्की भेल पैछला खुशीक इजहारक मुस्की। बजला - 'मन अछि कि बिसैर गेलौ, जे जखन आठ दिन एक गाम (माने अपराजितक सासुर) भेना भेल रहै तहिया ....।'

अपराजित ओना किछु मन पाड़ै लगली तहिना अतीतक बौन दिस बिदा भेली। अइ सँ चौहराक रूप सुतन्ता (सुतनता) सँ जगनता दिस बदलै लगलनि। मुदा नीक जकाँ

पृ०- ६८

धियान नइ टुटने ~~चुके~~ मन मारने छैली। खिलैत मुस्की दइत (दैत) शुभलाल भाए बजला - किए विआहक तीन साल पछाति दुरागमन भेल रहै से मन अछि कि नइ?'

अपराजित - ' से किआए ने मन रहत।'

शुभलाल भाए - और (आरो) कि सब मन अछि।'

'आरो कि सब मन अछि,' से कि कोनो एके-दुइये टा बितल भेल जे कि मन अछि आ कि बिसरलौं। अही गुन-धुन मे अपराजित तत्मत् करै लगली जइ सँ बकारे ने फुटैन। अवसरक लाभ उठबैत शुभलाल भाए बजला - ' जेठ मासक एकादशी कैं दुरागमन भेल रहै। समय खुब सुभियस्त रहै, आमो खुब फड़ल रहै।'

दुअन्नी हँसी मुँह सँ निकालैत अपराजित बजली- ' ओही साल हम अमौट (अम्मट) बपाड़ब सीखलौं।'

अमौट (अम्मट) सुनि शुभलाल भाए बुझि गेला जे पत्नीक मन खटपन-मिठपन ~~खट-मिट्ठी~~ मे रहल छथि, बजला - ' आठ दिन ~~जखन~~ ~~हमस ऐनाम (माने अपराजित सासुर) ऐना~~ पीउर सँ पीयर ऐना भेल रहै, भोरहरबा मे जे पुरबा हबा उठल, ~~जखन भाए कैं कहलियै जे~~ भाए, सबटा पकलाहा गुलाब खास आम खसि पड़ल, तखन कहने रहुँथि ने जे घरवाली नीक रहत।' राति- बिराति हमर जाएब

घटनौं त घटना छी। पूबकि तेज लहकी उठल छल, ~~मसक~~ ~~सब~~ जेहि गाछी- कलम मे बगबार सुतै छैला, से त छैलाहे जे नइ सुतै छैला तइ मे शुभलाल सेहो छैलाहे। आम सन पवित्र सबजीन फल, ~~फल~~ तइ मे दु टा आम (फल) अपराजित दिन मे खेने छेली ~~तइ मे दिनो मे दु टा गुलाब खास अपराजित खेने छेली~~ जेकरा खेबा मे जते ~~जते~~ समय ~~काल~~ ~~खाइ~~ मे लगल छलैन तइ सँ बेसी समय ओकरा निहारै (निङहारे) मे लगल छलैन। तैं देखल- ~~सुन~~ बुझल रूप मन मे अतीतक टटके गरल्लनि। ~~टटके गरल छलैन।~~

माइयक (सासुक) आदेश सुनि अपराजित ~~ओहन~~ पत्नीक रूप मे आमक गाछी जाइ जेकाँ पतिक संग तैयार भेल छेली। ~~तैयार भेली~~ एक त ओढ़ना ओ डमेर ओढ़ने हेउ-

पृष्ठ-6

जइ मे लोक कें किछु करैक उत्कंठा जगिते रहै छै। तइ मे संगी भेटने त आरो प्रखर भ' जाइ-ए।

जीवनक चारि मे अपराजित कें ठाढ़ होइते शुभलाल भाए विचार केलैन जे आब अपन विचार कें खोलि बजै मे कोनो असौकर्ज नहि अछि। अतीत मे ओझराएल अपराजित भविष्य दिस देखैक-सुनै-बुझैक जिज्ञासा मे जिज्ञासु बनि पति दिस देखै लगली। शुभलाल भाए बजला- 'कालि भोरक गाड़ी गाम जाइले जरूर पकैड़ लेब। गाम जेबै नइ कब आब गामे मे रहब।'

पुरुष परीक्षाक अंतिम बेला मे जहिना जसनन सम्भुक मोड़क धारक बीच लोक पड़ै-ए, जेठाम निकलैक बाट सॉकरो रहै-ए आ असौकर्जो होइ-ए, मुदा भसैक (गलत धारक) धारक रूप, निकराल अछिये तहि बीच जे समय अछि, घड़ी ने पुरुषपरीक्षक भेल। अपराजित गाम बिसैर जेकाँ गेल छेली।

तइ मे सासुरक गाम। अपन जन्म सँ बालपन होइत किशोरपन तक माए-बापक छाँह मे रहली, सासुर ऐला मासेक दिनक पछाति पतिक संग (सासुर मे) गाम मे रहने समये कम भेटलनि। तइ मे मास दिनक ओहन जिनगी जे आँगन सँ बहरा नइ सकली, तखन जँ सासुरक गाम माने पतिक गाम बिसैर गेली त समीचीने भेल। ओना आब तक अपराजितक मन सँ छुटि हटल छेलैन जे बंगलोरक शहरी जिनगी, जेकर अभ्यस्त भ' गेल छी, आ ग्रामीण जिनगी मे केहेन दूरी बनिये गेल अछि, मुदा मनुखो त मनुखक छी दुनियाँक दोनो दूरी कें मेटाइयो सकै-ए आ बनैबतो अछिऐ।

ओना शुभलाल भाए अपन विचार कें संकल्प बना सोचि विचारि नेने छेला जे जँ पत्नियो संग जाइ ले तैयार नइ हेती तइओ असकरो गाम जेबे करब। अपन भार उत्सुक कैने अपराजित बजली-

- आब कि बुझै छियै जे ओइर समय अछि जे डेरा मे ताला खोसि दइ छेलियै, दुनू आ दुनू परानी हाथ मे झोड़ा-बैग लटकौने बिदा होइ छलौं। दु-टा बेटे-पुतोहु अछि, आ कि असकरे छीजौं आकि कें बिदा भ जा

पृ०-८

ओना झुमलाल भाएक मन में ठीठ गेलनि जे कि अपने परिवार बंधन सँ मुक्त छी वा बंधन में छी। मुदा नइ दिस सँ अपना कें मोड़ि झुमलाल भाए अपन गामक सिमृत (स्मृति) में तेना भसि रहल छैला जे फले-फलैं, सुफले-सुफल नर्जेरिक आगू दौड़ रहल छलनि। समयक चपेटि गाम दिस (दिशि) नइ बदल जा रहल अछि सेहो केना, नइ बदल जा सकै-ए। ओ त बदिये रहल अछि। जहिना मिथिलाक लोक आन गाम गेला तहिना आनो-आन गामक लोक त मिथिलाक बजार में जीविकोपार्जन कइये रहला अछि। अनेको संस्थानो आ व्यापारिक रूप में कइये रहला अछि।

अपन विचार में दृढ़ता अनैत झुमलाल बजला- 'हँ, से त परिवार में छीहे। तेँ एकबेर कहि त जरूर देबइ। किअए अपना सिर अजस लेब जे काल्हि दिन ओहइ जे उनैह केँ कैहे जे जखन अपन बाप-दादाक डीह जगबे, जे आबन मरनासन्न भ' गेल अछि, जाएब तखन परिवारक सब किअए ने जाएब।'

विस्मित होएत अपराजित बजली- 'गाम मे आब कि अछि जे जाएब?'

नव चिन्तनं सँ चेतल चेतना में जहिना उदीयमान बल होइ छै तेहने बल जेना झुमलाल भाएक विचार मे सन्हिया गेल छनि। बजला- 'गाम में नइ अछि।'

समाप्त
६।११।०१८

कथा - क्रान्तियोग - पृ०-१

गामक हवा-पानि खा, टहैल-बुलि जीवन काका दरबज्जा पर अबिते पत्नी कें चौकठि लागल ठाढ़ देखलैन। ओना मन मे पहिने ई उठलनि जे किछु बात परिवारक जरूर छी तें पत्नी केबाड़क चौकठि लागल ठाढ़ छथि नहि (नइ) त आबन काम अंगना-घरक काजक कें छी, कोनो काज मे लागल रहितथि। मुदा लगले विचार बदलि (बदैल) गेलैन। विचार बदलैक कारण भेलैन जे जीवन काका कें, जना कोनो नव चीज भेटला भेल होनि तहिना मन खुशी पर खुशी हेवे जइ से रंग-रंगक विचार मनःस्थिति कें सेहो खुशिया-खुशिया अपना रंग मे रंगैत रहै ए, तहिना भेल छलैन। ओसार (दरबज्जाक ओसार) पर चढ़िते बजला - 'पहिने एक गिलास पानि पिआउ, पछाति चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।'

'विचार करबाक अछि' सुनि कामिनीक (पत्नी) आन्तरिक मन पहिने ठमकलनि पाछु हटकलैन, मुदा लगले पाछु उनैट तकली त बुझि पड़लैन जे किछु बात जरूर छी। आन दिन अपना मने कि विचार करै छेला कि नइ करै छेला से कहाँ कहियो कहै छला। सैह ने हुकुम (आदेश) दइ छेला जे अमुख काज करू, कि वा अमुख काजक कि भेल? मुदा विचार करबाक अछि, कहला अछि। खुशी हास्य मे विनोद चोरि (छोड़ि) कामिनी छाती बजली - 'हम कोन ओकील छी जे विचार करब।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन मे कनी कचकचोर जरूर भेलैन मुदा चोट लगला पर जेहन मन चोटाउ-ए, से नहि (नइ) भेलैन। अपनो मन गवाही देलकनि जे अखन तकक जिनगी मे पत्नी कें विचारवान बुझि विचारिये कहियो बुझि कोनो विचार केलो अछि। तें जे पत्नी बजली त कोनो अनचितो त नहिये बजली अछि। पत्नीक बात कें विचार मे विचरित करैत जीवन काका बजला - 'जइ ओकर नइ छी, सैह ने विचारक दुनू परानी मीलि विचार करब। अपन उठैत जिनगीक रंग आ पतिक लुकैत विचारक भंग देख मे गाड़ैत मन मिलबैत बजली - 'चाहक ओरियान त चुल्हि कम कें सब किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटा मे पानि सेहो आनि कें रखने छी। बैसू. लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।'

सोफरन्नी पर बतीस अन्नी फेकैत, वा नइहरा पर नैहरा फेकैत जीवन काका बजला - 'शुभ काज मे विलंब करब मूर्खता भेल। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब ओकर पाछूक समाच...

पृ० 2

(परसब) तावे अइ दुनू के चाह बनि जाएत।' अपन काज कैं विसवासक रंग चढ़बैत कामिनी काकी बजली- ' से किए (किअए) ने बनत। मैया त दु गिलास दुध-पानि औंटक अछि।'

कहि कामिनी काकी आंगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटा मे पानि रखने रहथि, लोटा- गिलास नेने कामिनी काकी देवजा पर पहुँच पतिक आगू मे राखि देली। ओना मन मे नव- नव विचार जरूर उठैत रहैन मुदा चाह बनाएब कैं जरूरी बुझि किछु ने बाजि चोटे आंगन घुमि गेली।

अधा गिलास पानि पीबैत- पीबैत जीवन काका कैं विचारक तरंग तेना तरंगित कए देलकनि जे गिलास चौकी पर रखिते पछिला जिनगी (अपन दुनू परानीक जिनगी) दिस मन डुमरि कऽ घुमड़ि पड़लैन। मन मे उठलैन अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तइ संग पारिवारिक जिनगी, मुदा अंतहीन रस्ताक अछैत ओर- छोर नइ भेट रहल तहिना मन मे उठि लगलैन दुनू परानीक बीच- तीस बर्खक संजिनगी हेतैन। मुदा अंतहीन रास्ता (रस्ता) कैं तँ लोक खतिया कैं खुटिया अपन अपन रस्ताक सीमाकें तँए कहैये लइ छए।

आवन तक माने पचास बर्खक जिनगी तक जीवन काका ओहेन बेह जिनगी धारण केने आबि रहल छला जे गाम- समाजक छलैन। ओना मन मे ई बात जीवन काका कैं जरूर उठलेन जे अधा जिनगी रीब- रीबे मे चलि गेल। रीब- रीबक माने भेल जे जहिना मिरचाइक गुण सुआद कड़ुपन होइ- छै जँ ओइ मे कड़ुपन नइ आएल रहल वा ओकरा मे कड़ुपन रहबे ने केलै तैयो भेल रीब- रीब। मिचाइये के गुण- स्वभाव जकाँ मनुक्खो दऽ त अछिये। जे मनुख केलक- खेलक किछु ने आ खाइत पीबैत, सुतैत- पड़ैत जिनगी बीतल खेलक ओकरे जिनगी ने रीब- रीबाइले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण- पोषण बौंते किछु आगू धरि डेग उठबैत चलै। ओना डेगो- डेगोक अपन- अपन गुण अछि। एक भेल जे आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीच मे तेसरो तँ अछिये जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछु दिस ससरल, बीच मे डगमगल चलैत रहल। ओना आगू दिस डेग बढ़ाएब आ [illegible] पाछु दिस ससरबक कारण अपन- अपन रहैत अछि। एके कारण [illegible]

पृ-३

नइँ अछि। आजु दिन बढ़ैक कुनू अछिञा कुनू कारण अछि तहिना पाछु दिन ससरबक सेहो दू टा कारण त अछिये। माने दू जे अहिना आजु दिन उचित (दुरुस्त) ढंग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन ढंग जइ मे अपना संग परिवारो - समाजक मंगल कामना (उद्धार) निहित अछि, आ दोसर अछि जे जइ मे केको मंगल कामना (उद्धार) नहि भए अमंगले भेल। तहिना पाछु दिन ससरबक सेहो कारण अछिये। पहिल भेल बिना किछु कैने-धैने ठाढ़ो आ सभे निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ माने पछुआएल कऽ देलक तहिना दोसर रूपो कारण इहो त अछिये जे सभे संग चलै मे पानि-पाथर बिगाड़िक एते चोट दान पड़ल जे लाखो कोशिश केलाक पछातियो ढंग (जिनगी) पाछु घुसकि गेल। माने भेल जे जइ साधनक संग ढंग आगू बढ़एब ओ साधने छीना गेल आ सभक थपेड़ (थपेर) ओकरा थोपरा दऽ निच्चा उताड़ि देलक। तही बीच चाह नेने कामिनी आबि पहुँचली। पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल बिरहीन जेकाँ बिहाएल छन्हि। मुदा जगले कामिनीक मन मे, एकटा नव बिचार उठलैन। बिचार उठलैन जे अहिना माइर (मारि) खाएल आ चोटाएल पति कऽ पत्नियेँ एहन औषधि छथि जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित कऽ ओइ पर मरहम (मलहम) पट्टी कए सकै-ए। आन दोसर त ओइ तरहक नहियेँ कए सकै-ए। कौशिक अनमोल माइयोंत मात्र बेटाक बेथा देख अपन नयनधार मे भीनि कोड़ि बेथा बाँटै चाहै छथि मुदा तीतक रोगक स्वाद तीते सँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठो सँ छोड़ाएल जाए, ई त संबंधे पर निर्भर अछि। चाहक गिलास जीवन काका कऽ हाथ मे पकड़बैत कामिनी बजली—

'आन दिन सँ कनी बेसी चीनियो, चाहो पत्ती आ दुधो दऽ चाह अनलौं हेन, तैँ कनी सुआदि-सुआदि पीबो आ रसिक जेना रसो ग्रहण करै।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन बेथा (मनक बेथा) कऽ मनेक मन सँ मनबैत मुस्कुराइत बिहुँसैत बजला—'अहाँ हाथक चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब त एहन सुआद केकरा हाथक चाह मे भेटत जे पीबो नइ करबै।' कामिनीक हाथक अपन सुतरल बिचार बात देख कामिनीक मन ...

(कलैशा) छुरिया डरि एलीन। डरिआइते बजली- अपनो मन होइ-ए जे दुनू परानी एकठाम बैसि सँगे पीबितौं।'

विचरणक दुनियाँ मे बौआइत जीवन काकाक मन एबे कैना बजला- 'ऐहेन दिन कहिया पाएब जे दुनू गोरेक (माने दुनू परानी) चाहोंं एक रंग रहत आ एकठाम बैसि सुआदि-सुआदि चाहपीबैत गप-सप करब।'

पाछु ससरैत माने विचारकेँ पाछु ससरैत कामिनी बजली- 'अपना सौंहतगर लागत। बुझि पड़ैए।'

'अपना सौंहतगर' सुनि जीवन काका कैँ विचारक बाइन (बनावट) सुबालि बुझि पड़लेन। बजला- 'किअए ने लागत। बुझि पड़त।'

नहला पर दहला फेकैत कामिनी बजली- 'अपना जँ कनी-मनी (प्रेमवश) नीको लागत त परिवारो आ समाजो धुरछी करबे करत कि ने?'

डम्हाएल आम होउ आ कि लताम वा कोनो आन फल डम्हेला पद्धति औ पुन:। स्विच्छा नहि बनि आगू दिस बढ़ि बौनेबे-पकबे करैए। तेठाम जँ परिवारे (माने परिवारेक लोक) आ कि समाजे जँ नादानी वा नबउमकी करबे करत जे आगू स्विच्छा बनत, एहनो विचारकेँ जँ धुरछी करत त ओकरा मानबो त जीवन रेखकेँ पाछु दिस मोड़ब भेल कि ने। परिपक्व होइत जीवनकाकाक विचार फुरि पड़लेन। फुटिते मुँह सँ निकललेन- 'परिवारे आ कि समाजे जेकरा धुरछी करैए, ओ सोंहत आ हँसैए जँ ओकर गुण-दोष कैँ परखने अपना कैँ लोक-लाज सँ लज्जित बुझैत त खन एको डेग आगू ससरब कठिन अछि।'

ओना जेहेन विचार कामिनीकाकीक मन मे तरंगित भ रहल छलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक विचार सुनि मन ठमकलेन। ठमकैक कारण भेलैन जे एक दिस पतिक विचार अछि, जे जीवन साथीक रूप मे हाथ पकड़ि माए-बाप (माता-पिता) लग सँ अननेँ छथि। माइयो-बाप (मतो-पिता) स्वेच्छा सँ दान-स्वरूप जीवन दान देने छथि, तेठाम हमरा दोसर के अछि, जे जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौल कैँ लोकलाज माने अपन जिनगीक लाज कैँ अपने विचार किछु विचारणो बिना मानि रखबो त धोखा छी, निघोक सँ डेग उठाएब तखन ने भेल जखन अपन अगिला जिनगीक लेल अपन अगिला ओइन डेग जे जिनगी कैँ गढ़ाइने ओ

कथा - क्रान्तियोग - पृ०-५

हेलैत, तोड़ैत वा कुदि क फनैत टपब अछि। मनक कल्पनात्मक विचार मे विचड़ैत कामिनी काकी बजली - 'अखन एते प्रेम सँ चाह बनौने छी, तइ बीच जँ कोनो कवि-काठी फेक मन कैँ (चाह पीवैक मन कैँ) दुइर कऽ दियौ, इहो हमरा सन (माने पटनी सन) हेत। लोकक लोटा केहेन हेत।

कामिनी काकीक सहगर विचार सुनि जीवन काका बजला - जँ गपे-सप मे चाहक - चाह आ (चाहक) ओकर गुण सुआदकैँ सुआदक इच्छा आ ओकर सुआद पानि बना लेब एखन सेहो केहेन हेत।'

ओना कामिनी काकी आ जीवन काकाक बीच आवन धरिक जे जिनगी रहलेन ओ ने तीते रहलेन आ ने मीठे रहलेन। तीत-मीठ दुनू रहलेन ने दुनू कुदा जँ हजारो-लाखोक संख्या मे किअए ए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी संख्या मे पाँच अछि। ओइ मे सँ एकटा मिथिलांचल मे खेलौं, दोसर असाम मे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरल मे खेलौं चारिम गुजरात वा राजस्थान मे खेलौं, पाँचम पंजाब वा कश्मीर मे खेलौं, कि ओकर गुण-सुआद जगह बदलने गुणो-सुआदो - गुण घटैत जाएत आ कि ओहिना रहत जे मिथिलांचल मे छल। एकर माने इहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदह मे इ गुण छै। इ गुण सब ठामक सब वस्तु मे छै। (प्यारा कदेल) चाहक गिलास ठोर मे (मुँह मे) सटौने कामिनी काकी जीवन काका लग पहुँचली। ओना कामिनी काकीकेँ चाहक गिलास मे मुँह सटौने देखि जीवन काकाक मन मे कनी कुभाव उठलै, कुभाव भेल। कुभाव इजे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लग सँ पीवैत-पीवैत दलान तक भरि पोख पीब लेती। इ तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद बुझलियै, तावे चाहो ससरि कऽ पेट मे गेल जइ सँ मन मे फुहरामी जगल। फुहरामी केँ आगिते फुहरपन विचार उठल। ओना कनी-मनी जीवन काकाक मन कड़ुएलनि, जरूर जइ सँ क्रोधक विनबिनी (बीन-बीनी) जगलेन मुदा अपन मन तँ फुहराम रहैत कौन। क्रोध कैँ घोंपैत विचार जखन मन मे फुरलेन। विचार फुरैत मन - विचरण कैँ जगलेन जे क्रोधक भाव नीक कि अधलाह। क्रोध तँ कतौ सँ बाहर सँ लोक मे नइ अबै ए, ओ तँ लोकक मन मे सुतल जगल रहै ए। मनोविकार (मनक विकार) छी ओ जे सब मे रहबे करैत आ रहैते अछि।

पृष्ठ - ६९

मुदा एकटा विचारणीय प्रश्न त अछिये जे जँ क्रोध सौसरे आना अधले छी तखन ओकरा किअए ने (माने सामुहिक रूप मे) ओकरा पानि बहैक नाली वा कचड़ाक ढेर मे फेक देल जाए। प्रश्न अछि क्रोधक रूप कें देखब। मनक विकार कहियौ आ कि शरीरक उर्जा शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध त छी जरूर। मुदा ओकर सीमा-सरहद कि अछि आ कते अछि, तेकरा त देखै पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्पशक्तिक प्रहरी (सिपाही) छी त दोसर दिस पौरबैर-फारकंड, धार-समुद्र मे डुमबैबला सेहो छी। तैं क्रोध अज्ञानीक अज्ञान पैदा करैबला छी त ज्ञानीक ज्ञान संकल्पक संगी सेहो छी। तैं क्रोध कैं सँ क्रोधी नहि बनि क्रोधी जिनगी धारण करबाक जिनगीक पथ कें प्रदर्शित करै-ए।

रसे-रसे जीवनकाकाक मनक कुवाथ सँ जे क्रोध चढ़ि हुल हलैन सेहो से समन हुअए लगलैन। समन होइते (क्रोध कमिते) मन मे उठलैन जे जहिना जाँत मे, जेइ मे तर-उपर दु पट्टा होइ छै, दु चक्की रहितो बीचक जे कील होइ-ए ओ एकटा कें सक्कत सँ पकड़ने रहै-ए आ दोसर के कील रहितो कुह रखबाइ जे छोड़ि दइ-ए। तहिना बीच मे ने पीसनिहारि वा पीसनिहार बाम हाथ से डबरा चलबैत दहिना हाथे ओइ मे झीक दइ-ए। मुदा ओ त अन्नक झीक त उपरका होइ-ए। तखन डबरा जे झीकै ए, माने हाथ से जे झीक के डबरा कें चलबै छी ओ कि भेल? मुदा लगलै जीवनकाकाक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी लै जँ जाँतक झीका-झीकी मे लागि जाएब तँ जिनगी ससैर कें पहाड़ पर सँ निच्चा खाधि मे खसि पड़त। तैं दहिना हाथे झीक देलौं आ कि वामा हाथे-माने जाँत मे अन्न देलौं, ऐहेन-ऐहेन खींच-खाँच कें विचारे सँ सरिअबैत चलब, तखन नीको जखने ऐहन-ऐहन विचार कें सरिअबैत चलब, तखन भाकुर मात्र जेकाँ सुरकुमिया मारि चलि सकै छी नइ त छोट-छीन हल्लुक-फल्लुक रहितो रचना मात्र जेकाँ खढ़-पात मे तेनाकेँ ओझराएल जे ओझराएल जाल सँ चलबैत बिदा भेलौं, ततै रहि जाएब। मने-मन जीवन-काका सामंजस्य करिते छलाह कि दुनू गोटेक हाथक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथ मे गिलास (खाली) पकड़बैत बजला-
'अहींक लगाएल पानो खाएब।'

पानो खाएब सुनि कामिनी काकी कें सुतरलनि। सुभ्यै बजली- 'सासुर मे नइ कहियो पान लगेलौं तैं कि कुम्हरो छी जे पान नइ लगबै अबै-ए।'

कामिनी काकीक मन त ओते फरगर (फरगर) नइ रहैन मुदा

पृ०- ६

जे आवेश रहैन- मुदे बर्जेक जे प्रवाह रहैन नबू से कुछ पड़लेन जे प्रवाहित अवेगित छी जरूर छथि तैं प्रवाहित प्रवाहक आवेगित आवेगक वेग कैं अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला - अनेरे नै अहाँ मीठों के तीत बनबै लगै छी। हमर विचार अछि जे जहिना हुम पान लगा कुँ‌ऊँ खा मुँहके लाल बना मुँह लाली मुँह मिलानी, नौन लल्का तिलकोर ताकबो भाव देब-देब खेबो लाव।'

औना जीवनकाका अपना सुद्दिये बर्जैत रहैथ मुदा कामिनीकाकी क मन जीवनकाकाक पान लगाएब सुनि मोड़नी जकाँ मोड़ि देने रहैन। तैं मने मन सोंचै लगली जे नैहर मैं पान त जरूर लगबै देलौं। देव स्वरूप पिता कैं कुछे देलिएनि; जन्मदाता सेहो देलाह, हुनका पान लगा खुअबै देलिएनि। मुदा ऐठाम त दुनू परानी मीलि मैं तेसरक जन्मदाता छी तैठाम त अनाड़ी छीहे। अनाड़ी ई जे ओहन पत्नी जे नै पान लगबै छथि आ नै खाए छथि। बजली- 'किअए नै पान लगा कैं खुआएब। मुदा लगाएब सोझा मैं। पहिने गिलास आंगन मैं रखने अबै छी।'

औना जीवनकाकाक मन मैं उठलेन जे सोझा मैं पान लगौती (माने पत्नी) आ जैं एके खिल्ली हमरे टा ले लाबैथ तखन कि हेब। ओ त पान नई खाइ छथि। मन आगू बढ़ि अरवार (अरवाद) मास पकैनां ध-ध जरैत जेठक स जरल जेठक रौद मैं तपल धरती अरवाढ़क पाइनिक (वर्षाक) फुहार पड़िते फुहराम भ' सृजन शक्ति सिरजैत पकड़ैत सृजन करै-ए लगै-ए आ जरैत धरती हरिया लगै-ए। ओना तीन मौसमक बीच धरती कैं छह रूपक रूपो आ रंगो बनै-ए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धर्मी (धरमो) छै आ रूप धरमो दइहै जइ सँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूप मैं अन्तर अबिये जाइ छै। जाड़क मौसम सँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौलक पद्धतिक मिलाकि रूप मैं अन्तर आबिये जाइ-ए। तहिना गरमी सँ बरसात आ गरमी बरसातक बीचक जे मधु मास अछि भरले ओ जाड़-गरमीक मधुमास सँ भिन्न परिस्थिति मैं भिन्नै तैयार भेल हुअए, मुदा छी त ओहो मधुमासे। तहिना जाड़ बरसातक बीचक सेहो अछिये।

गिलास धो क' रखि कामिनी काकी लपकल आंगन सँ दरवज्जा पर आबि धमकली। अबिते बजली- 'लाउ, कहाँ अछि पानक समचा।'

गमछाक खूँट मैं बन्हने जीवन काका पानक सब समान रखने रहथि, कन्हा पर सँ गमछा उतारि, खूँटक मैं बान्हल पोटरी

पृ. ८

खोलि चौकी आगू मे चौकी पर रखला। अपने कनी पाछु घुसैक दैवाल (दरबज्जाक देवाल) मे ओंगठि क' गेला। आगू मे पानक समान, बगल मे माने आगू दिस सौंसा-सौंसी बैसि कामिनी काकी पानक पत्ती (पौलीथीनक झोरा) खोलि पान निकालि एक खिल्ली पानक (पानक) बैसार केलैन। ओना मन मे इ जरूर रहैन जे देखियौ जे कि (पति) बाजि रहला अछि। तैं पानक खिल्ली माने पानक पत्ता (पात) बैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि क' आंगन दिस बढ़ली।

देवाल मे ओंगठल जीवन काका आगू मे पसारल पानक पात देख मने-मन विचार करए लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच विषमता अछि रहत, जे जीवन संगिनी सेहो छथि, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। ऐहन खाइ (खाधि) त' जिनगीक डगर मे अनेको अछि। जाबे तक आचार ऐहन-ऐहन खाइ बनल रहत (जाबे तक) ताचार चौमास खेत जेकाँ समतल समभूम केना बनत। जाबे आचार से नइ बनत ताबे ताचार समरूप समउपज केना उपजि सकैए। माने इ जे जाबे तक विचार एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हेतै-(माने एक गहराइ) ताबे तक समरूप विचारक निर्णय मन मे केना उठत आ ओहन समरूप निर्णय कौत समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकै छी आगू बढ़ लेल-माने दोसर-तेसरक संग, त' एकरूपताक एकरूपता अछिये। जँ से नइ हेतै तँ अनुसार जगह मे (माने समस्याके) एक रूप जँ भइयो सकै छी त' ओहन परिचित जगह मे तँ एकरूपता भंग भइये जाएत जइ सँ संगपना मे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाट-(जिनगीक संग चलैक) मे विघ्न-बाधा उपस्थित हेतै तखन चलब त' दुस्कर भइये जाएत। असकर चलब, दोसकर (दोसकर आ दशाकर) चलब आ दुस्कर चलब मे अन्तर अछिये। मुदा लगले मन मे (जीवन काका क) उठलैन जे आबन जे परिस्थिति आगू मे उपस्थित भ' गेल अछि ओहुना सोलहन्नी मानियो लेब जल्दबाजी (धड़फड़ी) हेतै। जँ पानक पात पसारि चून लगौने रहितथि तखन थोड़-बहुत मानलो जा सकै छल, मुदा आबन त' पहिलुके (प्रथमे) डेग उठौलैन अछि, जइ मे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली पसारैक वा बैसबैक, तखन किअए ने इएह (पहिने) पर आबन रहै दिअनि जे आगू कि कए रहला अछि। जँ सुरेसँ गतिये दोसरो खिल्ली बैसबैत छथि त' बढ़ियाँ। जखन पान संगे पीलौं, तखन जँ पानो खाएब त' इ कोन नइका मत भेल जे मन हानि हेतै।

कथा- क्रान्तियोग - पृ०- √

जीवन मने- मन अपन जीवन-आकार हारि-जीतक विचार कौँत चुप-चाप आँखि के कनी छोट कौँत माने दुनू पीपनी कैँ नि(हिअबैत) चिन्तक रूप जकाँ दैनाल मे आँगठल पत्नीक प्रतिक्षा (परतीक्षा) करै लगला। तइ बीच आंगन सँ पत्नी (कामिनी काकी) सेहो पहुँचथि पहुँचते अपन जगह - माने पहिने जेना बैसल छेली, पकड़ि जेना बिसैर गेल होथि तहिना पानक पन्नी (पोलीथिनक झोरी) कें हौंइ-हौंइ झाँड़ै लगली। ओना मन मे इ बात जरूर नचैत रहैन जे देखियौ, अपना बेर मे पति कते इमानदार छथि। अनका कैँ सबकेँ एक कहै-ए, बुढ़ा करइलो गेल अछि जे पंडित होइ जो गाल बजाबा'। गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा कैँ देबैन (माने पति कैँ देबैन) ओ हमरे लगौलहा पान सँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल।

ओना जीवनो काका गबदी कँ गबदिया गबदी मारि पत्नीक लीला-भूमि देखै चाहै छेला मुदा कामिनियो काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारलनि जे शिकार कैल छी, आ शिकारी कैँ छी - माने दु टा शिकारी जँ दुनो एकटा शिकार पर बाण (तीर) फेकलक फेकै आ दुनू तीरक बीच तिरिआएल शिकार खसल खसै, तँ ओहिनाम निर्णय करब कठिन भइये जाइ-ए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल छैल। कामिनी काकी दोसर बाण (तीर) छोड़ैत बजली- 'पान मे दइ जे चुन रखने छी, ओ तेहेन मरचून जकाँ माने सुरसुरी गेने, बनि गेल अछि जे पात मे लागबो कठिन अछि तेँ कनी पानि देने आंगन सँ अबै छी।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन मे उठलैन जे किछु बाजी। बाजी इ जे कहिऐनि चाहै भेल इच्छा आ पान भेल पौनाइ पेनाइ। माने इच्छाक पूर्ति हैब। मुदा फेर लगलै मन मनाही कैलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तेँ राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्ता मे नाच देखब सभे नोकसान करब हैत। भाए अखन परीक्षा दइ ले विदा भेलौं तखन सभे सँ पहिने नहि पहुँचब त अपन कैँ तैयार केना करब। इ त नहि जे जेना लोक बजै ए जे भोजक बेर कुम्हर रोपबै काज चौड़े चलत। मुदा जँ अहि विचार कैँ ए रूपे राखल जाए जे भोज मे कुम्हरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तखन ने कुम्हरक संग न्याय भेल से त नहियेँ अछि। विचारक जोन मे तेना जीवन काका ओझरा गेल छेला जे पत्नीक बात अनसुनिये रहि गेलैन। माने

पृ०-१०

मन जीवन काका निचाड़िये रहल छथा तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानि ढ़ढ़ुले चालि गेली।

कामिनी काकी कें परोंछ होइते माने दरबज्जा सँ आंगन दिस बढ़ने, जीवन काकाक मन मे दोसर विचार फुनः-फुना कें फुनफुसेन। फुनकते विचारें लगला जे पानक जे सरमजाम माने पात, चून, खैर, सुपारी, जर्दा, अछि ओ त परिवारक भेल माने परिवारक आमदनीक खर्च, मुख्य भेल, जे दुनू परानीक (पति-पत्नीक) भेल मुदा खेबा काल हम खाएब आ ओ (पत्नी) नइ खेती, इ त सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत त रोग भगतै आ बिनु रोगी खाएत त रोग बढ़तै। तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानी दैने दरबज्जा पर पहुँचली। दरबज्जा पर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखिये पत्नीक चेहराक चुहचुही पर देखलखिन। (देखलेन) ओना कोनो काजक कौंक तीन अवस्था होइ-ए। पहिल जँ काज सफलपूर्वक होइक संभावना रहैत तखुनका चुहचुही, दोसर काज असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखुनका चुहचुही आ चुहचुही मे स्पष्ट झलक आबिते जाइ-ए।

ओना कामिनी काकीक चुहचुही देख जीवन काका बुझि गेला जे हुनका (पत्नीक) चुहचुही सँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार हुनका हाथ छनि। माने पत्नीक सफल विचार छनि (छैन)। जीवन काकाक मन मे लगले दोसर विचार जगलेन। जगिते मन विचार जगिते विसवास सेहो जगलेन। विसवास इ जगलेन जे जहिना चाह पीबै काल कहैत छेलखिन जे दुनू गोरे (पति-पत्नी) संगे-संग एकठाम बैसि चाह पीबा। जखन एकरूपताक प्रस्ताव रखि दुनू गोरे संगे चाह पीलौं, तखन चाहक पद्धतिक ने पान भेल। जखन हुनको (पत्नियो कें) बुझले बात छनि तखन जँ पान मे कटौती भेलौ, माने हमरा ले लगौती आ अपना ले नइ लगौती, तइ मे हमर कोन दोख। किअए ने हमही छाती पर चढ़ि फटकारि क' कहबनि जे 'अँह अहाँक इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा (अधिकार) छोड़ि क' भागि रहल छी। जखन अपने हक-हिस्सा छोड़ि दियौ पड़ा जाएत तखन दोख केकर। अपन सुतरल विचार मथन सँ जीवन काकाक मन कलिएलनि। कलिआइते मनक विचार के मने मे रस सँ रसरसबैत गुड़ चाउर फकैं लगला। मुदा बाजि किछु ने रहल छथि। पान मे चून लगबै सँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा क' तकला जे किछु बाजि रहल अछि कि नहि। ओना जीवन काकाक मन मने मे मनुआ (मनमारि) क' मुरझा गेलेन जे एकटा चूक अपनो जरूर भेल अछि। ओ इ जे जखन तकक जिनगी मे (माने पति-पत्नीक) आदेश दइत (दैत) रहलएनि जे अमुक काज करू, अमुक काज ने करू। मुदा अपना विचार मे केना ऐहेन विचार

पृ०- ११

अविलानि (ऐनैन) जे अपने ई बात बुझै लगितथि जे अमुख काज कैल आछि आ अमुख काज नइ कैल अछि। ई त चिन्तनक अतल तल मे भेल जे अखन तक छुटल रहल। खैर जे (हल मुदा पाछु उनटि देबै लगाब त फेर संबंध पछुआ जाएत। तैँ नीक हैत जे विचारक (ज्ञानक) उत्स जेना मन मे (पत्नीक मन मे) रोपि दिअनि जे स्वयं ओ पत्नीक रूप मे हाट म' चलै लागथी। अगर पति अपना कैँ पतिक (पतित्वक) रूप धड़ि (धारण कैल) पकड़ि चलैथ आ पत्नी जौँ अपन पत्नीत्वक रूपक धड़ि (धैड) पकड़ि चलैथ त जिनगी मे दोषारोपण कत' हैत। जौँ एक-दोसरक बीच दोषारोपण नइ हैत तखन दुषित मन कैना बनत। आ जौँ दुषित मन नहि बनत त जिनगी दुषित भ' दुखित कैना हैत। मन कलशलेल। कलैशते जीवन काका बजला- 'चाहे-पान मे दिन बीता लेब, तखन त भेल जिनगी मोटा उठाएब आ मोटाक विचार करब। कते काल भ' गेल कृना जे। किछु विचार करब अछि।'

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली - ई से पानक खर्च बढ़ि जाएत।'

जै पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला- 'जावे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताव मुँह मे लाली कैना औत। जावे मुँह मे लाली नइ औत तावे जिनगी कैँ जिनगी कैना बुझबै।'

ओना जीवन काकाक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मंदिरक पुजारी जकाँ अपना कैँ समर्पित कैत माने अपना पराकाष्ठाक तियाग देखबैत बजली- 'अहीं ने हमर सब किछु छी। अहींक आश्रय मे ने हमहुँ बसब।'

पत्नीक सिनेह सँ बोझिल बदलैल बादल जकाँ पत्नीक रूपक विचारक रूप देख जीवन काका बजला- 'जाए दिऔ, अहिना समैक तीत-मीठ सुआद बहि बुझि गमैलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आइ सँ त से नइ अछि। जिनगी मे किछु ऐहेन काजक सँ संकल्पित हेबा अछि जे पति-पत्नीक पचहत्तर पहचान बने।'

हँसैत कामिनी काकी बजली- 'तइ ले कोनो हाथ रोकै छी, सदिकाल त हाथ पकड़िये चलै चाहै छी कि ने, जेना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घर सँ विदा कैने छेला।'

समाप्त- ~~१३.१३.१५~~ '१३।५

एक गाछ्हा आमक गाछ — पृ० 1

सुन्दरपुर ग्राम मे सौनमा बाध अछि। ओना चारू कातक बीच ग्राम अछि मुदा दछिनाह बड़िया। बाध माने ग्रामक दछिन जे बाध अछि, जे बाध मे प्रवेश करिते दछिन मुँहे बि डेग उठत। ओहि बाध मे एकटा आमक गाछ अछि, जेकरा लोक एकगाछ्हा सेहो कहै-ए।

ओना सौनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। तहूमे किअए अहिना खेत-खेतक माटि एकरंगाहो अछि आ अढ़रंगाहो त अछिये, ते दसो-पनरह रंगक (किस्म) माटियो अछि आ नीचा-ऊपर रहने सीढ़ियो त बनले अछि किने। खैर जे अछि मुदा त बाध मे अछिये। माने खेती-पथारीक ... त ऊँचगरहो खेत रहितो अनेक खेती होइए जे मे गाछीओ-बिरछी त ... एकर माने इहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अनेको गाछो होइते छै, पातो होइते छै, तहू मे माटिक जे गुणधर्म छै ओ त आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबै-ए। जँ एकरंगाह (एक माटि) रहैत त किछु समटल करीब (माने माटिक अनुकूल उपजा) रहैतै, से नइ बेसी रंगक रहने बेसी रंगक होइते छै। खैर जे रहै, मुदा ओइ बाध मे एकटा आमक गाछ छै त अछिये। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकै छै। बाध मे असकर एकगाछ्हा आमक गाछ, खूब पतरखो अछि आ नम्हरो (ऊँचगरो) अछि। ओना ओ गाछ कियो रोपलक आ कि अपने जनमल, से आइ धरि तक गौँआ नइ फड़िछा सकल अछि। कियो कहै छै बाबाक जे खवास छल ओ रोपलक, मुदा ओ बुढ़वा त मरि गेल। रोपल गाछ ने रहि गेलै, मुदा से जानिहारो हुअए तब ने। से ओकर किछु गोटे इहो त कहिते अछि जे कौआ पाकल आम आनि मुदा खेलक आ आँठी-खोइछा छोड़ि देलक, ओही आँठीक गाछ छी। मुदा जँ लोकक मन मे (माने गौँआक) जे होइत होउ, ओ परती पर जनमल त अछिये, केकरो खाप जमीन मे छै ने, तँ सबहक छी; सबहक छीहे नइ सब हाटी मे हटेबो करै-ए आ आमो चटनी से पाकल धरि

पृ० - 2

करिते अछि। गाछो ~~के कोनो खास सावक छै~~ सब रंग होइ-ए, मुदा से नइं, ओ आमक गाछ
देखलक आ कते पीढ़ी (मनुखक) देखलक आ कते आगुओ देखत। ओना आगुक निसचित बिसवास
नइ कैल जा सकै-ए, ओना पद्धला अछि, मुदा बिसवास नहियो
कैल जाए, सेहो ते उचित नहियै हैत।

ओना जहिना सौंसे बाधमे एकटा गाछ रहने एकगाछा
भेल, तहिना हमार बीघाक आमक गाछीमे एकटा बेलक गाछ
रहने एक गछहा भेल, आमक गाछी / बिआए, तहिना फुलवाड़ियो, सब मे होइते अछि। एकगाछा
रहितो ओ आमक गाछ कुड़ाक त अछिये अपन चालि-बाइन छोड़ि देने अछि। कुड़ाक ई जे
अनरनेबा आ धात्री गाछ जकाँ बिनु जोड़ (प्राग क्रिया) जीवैक
आशा नहियो रखने अछि, सैह सेहो बात नहियै अछि। असकरे
बाधमे अछि, फड़बो करै-ए, मौजरबो करै-ए, हरिएबो करै
ए, पतझाड़ो होइ-ए, मुदा जीवक बान्हि जीबो त करिते
अछि। नइ ते असकरे जना बाधमे अछि तेना से अनरनेबा
आ कि धात्री जेँका वंश उपेट गेल रहिते। सब बाबाजीवाली अहिते गेल रहितो एहना
छै जे समैक मुकाबला नइ करै-ए ओ मेटा जाइ-ए।
ओकर वंशक बाढ़ि रुकि जाइ-छै। कि माटिया मेट भ जाइ छै। पंचतत्व
मे विलीन भ' जाइ-ए।

द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एकगाछा गाछ (माने आम)
अपनाकेँ बुझैत। जहिना ~~शक्ति सील~~ शक्त शील एकलव्य अपनाकेँ शक्तिवान
बनबै ले शक्तिशालिनीक आराधना केलैन तहिना ओहो आमक
गाछ असकरे बाधक बीचला डेढ़ कठ्ठा परती पर ठाढ़
भेल अपनाकेँ बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिये।
हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँ मे कि
सबहक वंशो आ वंशवृद्धियो एके रंग थोड़े अछि। कोनो
बीआ से जनमै-ए तँ कोनो फल से, कोनो पत्ता से जनमै
ए त कोनो गाछक सीर से। केकरो सिर माइटिक तर
मे रहै छै ते ककरो पाइनिक तर मे। केकरो डारिये
मे सिर होइ-छै ते ~~अकास मे~~। केकरो फुनगी पर फुनगियाइले
दुनियाँ दिस देखते अछि। बेचारा गाछकेँ (माने आमक गाछकेँ)
मन ठहियार लगलै। ठहिआइते मन मे उठलै अनेरे दुनियाँक
कोन मे मनकेँ बौआबै छी। तइ से नीक जे अपन दिन-
दुनियाँ बात ~~बुझबो करब आ करबो करब~~ बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन छहुर
छमेक गेलै। छमकते जना तीन बड़ी पर डिसास (दिशांश)
लगितो छै, जे से पूब-पच्छिम भ' जाइ-ए आ पच्छिम
पूब तहिना दिशांश छुटबो करै जइ से उत्तर-दच्छिन
बीच इजोत लगै छै। जे कँमहर से एलौ कँमहर जेबै

पृ० - ३

आमोक मक्क कनी खुजल। खुजल ई जे अपना मे अनरनेवो आ
आत्रीयो से बेशी शक्ति अछिये। ओकए दुनू के जे जोड़ा नइ
भेटतै (भाग्य प्रिया) ते दैदौ नंगा बवाजी भ' जाएत, वंशो
रवकि जेतइ आ दुनियाँ ओहिना चिरैर-जेतै जाएत। मुदा अपना
सब किछु अछि, सब किछु अछि। सब किछु मन मे अबितै
अपन शक्तिक अपना शक मे दे खेलक।

अपना चुइन मे गाछ धुनियाँक चुनकी जकाँ जिनगीक रुइया कैं
धुनै लागल। हजारो-लाखो रंगो, भटरंगो आ चितकाबरो
वैशक ब गाछ-सब ते अछिये, तही मे ने हमहुँ एकटा भेलियै।
जखन एकटा भेलियै, तखन एकटा ने भेलियै। तखन
दोसराएत जे तेकर से अपन दोसराएत मे कहिअए ने
इजोते-इजोत जाएत। बेचारा जिनगीक बटोही जकाँ जे नमहर
जिनगीक बाट टपि आबि असोथकिते भ' जाएत तहिना बेचार
आमक गाछक मन ठमकल। देह मे शके ने कुच्छो पड़ै जे
ठाढ़ रहत। हबहु साइकिल जकाँ मनक चक्का आगू ने
आगुए घुसके आ ने पाछुए ससरै। जना जिअ आ जिनगीक हारि कबूल क' लेत। मुदा से भेल नइ, भेल ई
जे हबहु मन बाजल - आब, ई दुनियाँ देखब कठिन
भ' गेल।

पजरे मे हुबहु बजल - बूढ़ भेलहुँ कि ई, ब्रह्मा सन-सन
कते ब्रह्माकेँ देखनिहार - लोमस बाबा जोगिया ओहि क' देखैत
आ तू एतबे मे... दैआ फेइ देहुँ। एकटा पएरवला कनी नेंगरा
के चलैत, मुदा चलैत किअए ने। कोनो कि लोथ छी।

हुबहु घाटक विचार सुनि हबहु विचार कैं बेचारा आमक गाछ
विचार करै लागल। ओना गाछ-बिरिछक दुनियाँ
मे एकटा हमहुँ छी। रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि
ढालि जिनगी सबकेँ अपन अपन छै। कियो बीआ से
गाछ होइ-ए, ते कियो फूल से। एते मन मे अबिते गाछ
ठमकल। ठमकल ई जे अपन वंशक रस्ता कि अछि। एकटा
भेल पाकल आमक सक्कत आँठी से, दोसर भेटबे ने करै।
मन मे ऐ जे हमर वंश कि एक भग्गूए रहि गेल। आगू-
पाछु किछु भेटबे ने करै। भेटबो कैना करितै, अखन तक
नजैर बिआ बीये-वाला देखल-सुनल छलौं। मुदा
नजैर जखन आगू बढ़लैं तखन बुझि पड़लैं जे नहि

पृ-८

तक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छाती से डारि कलशाक
सटा देने नव गाछ मे नव डारिक संग पनिते बनि नव जीवन
सेहो त अछिये। तखन जिनगी से निराश किअए हैब। मुदा
जिनगीक लेल जे सभ-शक्ति से मुकाबला करै-पड़ै छै ओकरा
अनेको रूप मे दू कारण प्रमुख अछि। एक अछि सभ शक्ति
जे मे जिनगी निहित अछि आ दोसर अछि दानवी मानव वृत्ति।

एका-एक ओड़ एकगाछा आमक सौ गाछक मन
फुला गेल। फुला गेल कि फुलाइते अहल फुल मनकेँ अहलाएल बाजल–
बाजल–' हम लाल छी।'
जुहिआइत जूही बाजल–' जे हमें सतरंगी रंग देहले
सतरंगी चालियो ने छो। मरदक लाल अहिना बनमे, तहिना फुलबाड़ि।

मन मे उठैत खोज के रोकैत गाछ विचारै लागल। भाए सात
अरब लोक मे केकरा एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस
ताकत आ ताकि देखत। जे बोझ भरि दिन बेटा ले पसीना
छोड़बे ए ओकरा ते एते फुरसतियो ने छै जे अपना
बेटा के कम से अपनो वंशक इतिहास आ सामाजिक सरोकार
बुझा सकत। आ अनका कोन मतलब छै।

जहिना कौनो हरेलहा बात, सोचैत विचारै काज जखन
मन पड़ै छै; तखन अनेरे अपनो मन मे फुलाएल हँसी
उठै छै। तहिना ओइ एक गच्छा आमक गाछ कैँ सेहो भेल।
मन पड़लै अपन लगौनिहार रखबार, कैना असकरे बोध मे
ठाढ़ छी, जहिना सब के अन्दर-बिर्राड़ि, आँट-पावर छै, तहिना
ने हमरो ले अछि। सब आगू चुसकल मन (माने आमक गाछक)
कुदकुलएल,– हुनी सब ने अपन भाषा साहित्यक रखवारि केने
एलो अछि। अपन जिनगीक सब रूपक रखवारि अपने
सर्वांग जिनगीक अपने कौरक, चीर-फाड़ हएत तखन ने रकुदित रहै
लागले दोसर मन टोकलक–' मातृभूमि कहाँ कहै छै ओ अछि छी
ओकर रक्षक के छी?

मन उत्तरित प्रश्न आमक गाछक मन मे उठै लागल। मुदा
कलशक डारिक नव गाछक रौशनी देख मन रहैम गेल। रहैमते
फुला गेलाइ। फुलाइते उठलै–' अहाँ सँ जीव-जन्तुक संग
रमैत एलौं अछि आ आगुओ एहिना रमता जोगी
बनि (बनि) रमैत रहब। एकगाछा नइ सतगाछा बनि इन्द्र-
धनुष जका आकाश मे फुलाएब।'
समाप्त

कथा - चटिवाह - चैटवाह - चटवाह 56-1

~~अरे भोरे अपन ग्राम बड़द कें घर सँ निकालि, बाहरक थैर मे~~

भोरे बड़द कें ~~निकालि~~ घर सँ निकालि थैर मे बान्हि गाए कें घर सँ निकालिते रही कि नागेसर भाए कें दछिन सँ उत्तर मुँहें अबैत देखलएनि। ओना नजरि गाए पर छल तैँ नागेसर भाएक ~~कें नीक जकाँ~~ भाए पर अकस्मे नजरि पड़ल जहिना कें चेहराक रंग-रूप नीक जेँका नहि देख पेलौं मुदा नागेसर भाए कें त देखबे केलिएनि। हाथ सँ गाए गाइयो कें खूँटा मे बान्हैत रही आ मुँह सँ नागेसरो भाए कें कहलएनि - 'भाए, कतए कते सँ भोरे-भोर अबै छी?' ~~उ~~

ओना चारि-पाँच बर्ख नागेसर भाए जेठ छथि, तेँ सामाजिक लोक भाजे भाए कहै छिअनि। नै ओ अपन परिवारक छथि माने वंशगत परिवारक आ ने लतड़ल लत्ती जेँका दियाद बादे छथि मुदा समाजक बीच जे धारा प्रवाहित अछि तइ हिसाबे भाए कहै छिअनि। सामाजिक धारा इ अछि जे उमेरक हिसाब सँ आनो-आन कें, माने जे अपन वंशगत परिवारक नहियो रहै छथि उनको लोक बाबा, काका, भैया इत्यादि कहिते छथि। तही हिसाब सँ उमेरे उनका भाए कहै छिअनि।

गाइयक डोरी बान्हि आगू बढ़लौं ~~कि~~ तावे नागेसरो भाए रस्ता पर सँ उतड़ि दरबज्जा लग पहुँच गेला। लग पहुँचते नागेसर भाइयक चेहरा पर नीक जकाँ नजरि पड़ल। नजरि पड़िते बुझि पड़ल जे अस्सी मन पानि मन पड़ पड़ल छनि। कि भएतेँ जेहना मेघ जेँका घोघ लटकल देखलएनि। मिरमिराएत नागेसर भाए बजला - 'ओहिना गाम मे छिछिआइ छी।'

नागेसर भाएक गपक कोनो अरथे ने लागल। तइ पर मुँहो लटकल छलनि आ चेहरोक रंग उड़ल-उड़ल सन छलनि जइ सँ अनेको प्रश्न मन मे उठि गेल। मुदा एक त भोरक समय, पच-कुत्र नहियो बाजल जा सकै-ए आ दोसर दरबज्जा पर छथि। उनकर बात कें टहलबैत बजलौं - 'पहिने चौकी पर

पृ०-2

(धावज्जक चौकी पर) बैसि तमाकू खाउ, पद्धति दुनियाँदारीक गप-सप करब। 'हैतइ।'

ओना औरे-तर नागेसर भाएक मन मन्दुआएल रहबे करनि मुदा विचार कें पेटे मे दाबि कें रखने छेला। जँ आन ठाम आन गोटे लग रहितथि तखन त प्रभावशाली भाषण कैत अपन प्रभाव सँ प्रभावित कअ नेने रहितथि (रै हैतेथ) मुदा अहिना हम उनका। चिन्है छिअनि, तहिना ओहो हमरा चिन्हते छथि तैं वाणी बोल कें समेटि मने मे रखने छेला। नागेसर भाएक चेहरा सँ अनेको रूप टपकि-टपकि (टपैक) रहल छलनि, जेना मुँह किअए लटकल छनि, मोरे-मोर कतं दिढिआएल छथि, तइ पर सँ पैइसठि (पैसेंट) बरखक टपान टपल गामक एकटा प्रबुद्ध जन छथिये। गामक अस्सी सँ नवे प्रतिशत लोक उनका आदरक नजरि (नजैर) सँ देखैते छनि जेकर जीवंत रूप छनि जे नवतुरिया धिया-पुता मे कियो ओझा बाबा, तँ कियो भगत बाबा त कियो गुनी बाबा कहिते छनि। तइ संग ओइ सँ उपरका लोक माने, चैलटगर लोक, सेहो कियो भगत काका त कियो गुनी काका सेहो कहिते छनि। अनिजाति त सहजे बताह भेल छथि, जइ सँ जेतका जे नीक नाम रुचै छनि, से कहै छनि। तहिना तइ सँ उपरक माने उमरदार आदमी (लोक) सेहो भगत भाए त गुनी भाए सेहो कहिते (कैहते) छनि। मुदा हम तइ सब सँ अलग सोझे भाए कहै छिअनि, उमेरक लेहाज सँ।

नागेश्वर भाएक रूप-रंग देख अनेको प्रश्न मन मे उठि रहल छल जे पुछिएनि मुँह किअए लटकल अछि आ ठोर सँ फुफड़ी किअए उड़ि-ए। मुदा अनेरे किअए फूछ-फूस मे फूछा-फूसा संग अपनो सार्थक समय कें निरर्थक बनाबी। कहब जे टोकबे किअए केलिएनि तइ मे हुनी नजरि (नजैर) मिलानी भ' गेल। नजैर

पृ०- ३

मिलानी इ भेल जे जहिना गाड़ियक डोरी पकड़ने रस्ता
दिस तकलौ तहिना चटपटाएल नागेसभाएक मन सेहो
चटपटाएत देखलिऐनि (देखलएनि) जेना ओ मोन आ पेटक बीच
मन मे आबि गेल जे भरिसक तमाकू दुआरे हस्तमे
ढील नइ भ' रहल छनि तैं कहमछाइ छथि, तैं कहल
एनि, तमाकू खा लिअ।' मुदा तैं जँ कोनो मुसीबत
मे पड़ल छथि तँ अपने ने मुँह खोलता। ओना मुसीबतो
नीक-बेजाए दुनू होइ-ए दुनू (माने मुसीबत) के अपन-अपन भाजि छइ।
जे नीक कृति ले मुसीबत पड़ैत
ओकर महत अलग भेल, आ जँ अधला कृतिक मुसी-
बत छी तँ ओकर महत अलग भेल। आँखि मूनि
सबहक मुसीबत कें एक्के कसौटी पर तौल बाजब
ओ त आँखिमूना गुण भेल। ओना आँखि मूनो गुण सेहो
दू रंगक अछि। एकटा अछि नीक कें आँखि मूनि
मानि आँखि मूनि चलब आ दोसर भेल अधला
कें नीक मानि आँखि मूनि मानब आ चलब कानन।

ओना सँपकट्टा बा दुदुनारि कट्टा जेकाँ भीतरे-भीतर
नागेसर भाए कहमछइते छेला, तैं डुमएजे बफरि कें बाजी
मुदा चालीस सालक पैछला जिनगी दुनू गोरे कें एते
दूरी बनाइये चुकल अछि जे जहिना विषुवत
रेखा टपला पछाति लोक बुझै-ए जे हम उत्तरी
ध्रुवक यात्रा पर छी आ दछिनी ध्रुवक। तइ बीचक
लोक त बुझिये ने पबै जे दुनियाक दुटा छोरो
अछि आ दुटा धुरियो अछि, आ अपने कोन छोर पकड़ने चलि रहल छी। बड़ी कालक
पछाति, तइ बीच एकबेर तमाकू खा थुकर फेक चुकल छलौ आ दोसरो जुमक तैयारी मे थोपड़ी
द' तमाकुलक गरदो कें उड़ा चुकल छलौं, नागेसर भाए
बजला -' आब जीव कठिन भ' गेल। सौंसे दुनिया

बेर उजड़ि गेल।'

आब जीब कठिन भ' गेल, नागेसर भाएक ई विचार अपनो नीक लागल जे अपनो जीब त कठिन भइये गेल अछि, मुदा दुनिया "एके बेर दुनियोँ उजेँड़ गेल'। एकर कोनो माने माने अपन परिवारके उजड़ब लगबे करैत कैल। तहू मे अपने उजड़ब आ दुनिया उजड़ब दुनू दू भेल। दुनिया ते सदिकाल उजेड़ते रहैए आ बनिते रहैए, मुदा अपन जिनगी त से नइ छी जे सदिकाल बनत आ सदि काल उजड़त। ओकरा त अपन आधार छै, जैठाम घाटक संग बाटो बनल छै। बजलौं-'भाए इ कि कहलियै जे एकेबेर दुनिया उजड़ि गेल? जँ दुनियेँ उजेँड़ जाएत तखन रहब कैत'?

जहिना हृदयबेधी बाण लगने लोकक मन थरथरा जाइ-ए हृदय हलमलित हुअए लगै-ए तहिना नागेसर भाए के सेहो हुअए लगलनि। मन थरथर लगलनि जइ सँ मुँहक बोली बन्न भ' गेल छलनि। मुदा जाबे अपने मुँहे अपन बात नइ बजता ताबे बुझब कैना। तहू मे ओहन लालबुझक्कर नहियेँ छी भुतलगू जेकाँ अनेरे बड़बड़ा बाजब। मन मे भेल जे दोहरा कँ फेर पुछियनि मुदा लागल इहो भेल जे नइ सुनने रहितथि (रैह्थीन) तखन ने पुछब उचित होएत मुदा जखन लग मे बैसले छथि तखन नइ सुनलनि सेहो कैना मानल जाएत। भ सकै-ए जे जँ सब शब्द नहियो सुनने रहितथि तखन उनटा के ते पुछले जा सकै ए। सेहो नहिये पुछलनि। तखन किअए ने बाजि रहल छथि? मन मे इहो उठल जे भ' सकै-ए कोनो ऐहेन काज है भेल हेतनि जइ सँ जिनगी त प्रभावित होएत हेतनि मुदा लाजक संकोचे नइ बजैत होथि।

चालिस-पैंतालीस बर्खे सँ नागेसर भाए चरिवाहक काज करैत आबि रहल छथि। चालीस कि पैंतालीस वर्ख तँ डायरी मे लिखि कै नइ रखने छी जे निश्चकी कहब मुदा अनुमान सँ कहि रहल छी। किअए त जखन उठैत जुआनी नागेसर भाएक छलनि तहिये सँ देखैत आबि रहल छी नागेसर भाए गामक एक नम्बर चरि

कथा - चटिवाह - चटवाह - पृ०-५

छथि, केहनो सापक काटल बीख कें चाटिये सँ उतारि दइ छथि। तइ में केकरो ऐठाम जँ सपकटिया भेल तेठाम ओ खबरि (जानकारी) होइते अपनो वा आनोक काज कें छोड़ि दौड़ले जाइ छलाह। जाति-पाँजि, दियाद-वाद किछु नै मानै छेला। अपना कें उपकारी कहि उपकार कऽ पहुँचिये जाइ छथि। चलतियो ट्रेन जे तीन-तीन, चारि-चारि टा सापकटलाहाक नम्बर लागि जाइ छलनि।

ओना अइ गाम में विसहाराक गहबर छल तइ गामक लोक कें चटिवाह बनब असान छल। किअए त दसमी मे (दुर्गापूजा) जखन दसो दुआरि सभक खुजि जाइ-ए तखन विसहाराक गहबरक भगत (भगता, पुजेगरी) सेहो दसमीक पहिले दिन सँ गहबर मे भगतै कऽ सभ देवता रंग-रंगक डाली पहुँचते छलनि, केकरो धिया-पूता नइ होइ छल तेकर डाली, त केकरो घर मे डाइन-जोगिनक उपद्रव बढ़ि गेल, तेकर डाली त केकरो धिया-पूता बहुवारि भ' गेल तेकर डाली पहुँचते छलनि आ साँझ पहर जखन गोसाइ खेलाइ छेला, माने देवता देह पर अबै छलनि, तखन फुल-अच्छत (अक्षत) (भभूत) भभूत सँ ओकर गुहारि करिते छला। जहिया मरला माने भगत (पुजेगरी) मरला तहिया सँ भगतोइयो बन्न भेल आ गहबरो खसल। खैर जे भेल। गामोक लोक (जे चटिवाह बनै चाहै छल) आ आनो अड़ोस-पड़ोसक गामक लोक आबि-आबि चाटी धरै छल आ जेकर चाटी उठल, माने आगू घुसकि चटिवाहि कें छुऽ ऐ, ओ चटिवाह बनै छल। नागेसर भाए चनौरा गहबर सँ सीख कऽ सीख छेला। इलाका मे सबसँ जगता-जोर गहबर चनौरा गहबर कें बुझल जाइ छल। महेशनाथ छेला। ओना छोट-मोट (ग्रामीण स्तरक) स्वास्थ्य केन्द्र सेहो बनौने छेला। जइ मे डॉक्टर (एम०बी०बी०एस०) तँ नहि छल मुदा एकटा नर्स जरुर

रहै छेली। ओना ओहो तेहेन ट्रेंड (ट्रेनिंग कैल) नहिये छेली मुदा पित्ती डॉक्टर कें रहने बहुत-किछु सीख लेने छेलीहे। मरीष जी मरीषे जी छेलाह। बिआह नइ केने छेला। ई डीगर भेला जे अपने ऐनाम मरीष जी ओकाह (नर्सक) रहैक बेवस्था केने छेला। आन गामक बेचारी नर्स, ई तँ डेराक (रहैक) अरजात रहबे छनि। तइ पर सँ मदनथानाक अगवास मे ओहि ठेहि रोजनि। मुदा ऐहेन कहियो ने भेलैन जे कुत्ताक बीरब जेँका लसरि (लसैर) लगलनि।

अनहरिया परनक तृतीया (तिरतिया) इजोरिया (चान) जेँका गाम मे चान (कुइजेक) जरूर उगि चुकल छल मुदा छोट रहने (कम समयक प्रकाश) गाम अन्हारक अन्हार मे पड़िये जाइ छल। जइ सँ जिनगीक सब स्वगताक रस्ताक दुआर जरूरतक रास्ता बाधित छलै मुदा केतौ लोक पहुँच आएल छल तँ ओकरा मन-पेट नइ छैलइ सेहो त नहिये मानल जा सकै-ए। सँ त छलै, तँ अपन विचार सेहो छलहिंआ विचारक बिसवसनीयता नीय (बिसवसनीय) सेहो छलैहे। ओहो जिनगीक जुग छल जइ मे ओझा-गुनी, चटिबाइ, डानि-जोगिन सब-हक उतपति (उतपैत) भेल छल।

अपना सबहक इलाका केहेन अछि (भौगोलिक दृष्टि सँ) आ केहेन छल से त सब भोगिये रहल छी जे गामक फेदार मोरंगक दफेदार बनिले अछि। एक दिस कोशी धारक बाढ़िक पाइनिक विभीषिका जइ मे नेपालक पहाड़ो आ जंगलो झाड़ सँ बाढ़ि मे साप भसि-भसि आबियेजाइ छल। सतासी ई स्वीक (माने १९८७) बाढ़िक विभीषिका जेकाँ पहिनो भेल हुअए, तेँ भेल हुअए मुदा तीन-चारि जेनरेशन सँ नहि भेल छल, जइ मे सापक उपटान नीक बहुत बेसी छल। मुदा तइ सँ पहिने सपकटियाक संख्या बहुत बेसी छल। वैज्ञानिक ढंग, वैज्ञानिक ढंगक माने भेल आँचल-परिखल ढंग, जे विस्वसनीय अछिये।

पृष्ठ-6

तेकर बहुत बेसी अभाव छल। ओना दुनियाक आन-आन किछु देश अगुआएलो, आर किछु पछुआएल सेहो छलैए, मुदा अपना सब हजारो बर्खक गुलामी सँ लगले निकलले छलौं, तैं अभावे-अभाव सब कथुक अभाव छल।

दोसर उपरान्त सापक भूमकम (भुईंडोल) मे भेल। धरती डोलने बिल सब दबाएल जइ सँ बिल मे रहैबला साप नष्ट भेल। ओना सापोक वंशवृद्धि अलग-अलग अछि। किछु साप बच्चा दइ ए तँ किछु साप अन्डा दइ-ए। तइ संग मकौड़ी सदृश सेहो अछि। अगता बरखाक मौसम मे सापक पतौरा धरती पर अकास सँ खसै-ए जइ मे सौंपक-समय साप निकलै-ए। नवे-बेरानवेक शीतलहरी, बिनु बिषैला सँ खासकए गहूमन), कैं तेना उपटौलक जे बीछा गेल। तइ संग अस्पतालो सब मे आ प्राइवेटो रूप मे सापक बीखक इलाज शुरू भए लागल जइ सँ सपकटिया (माने सापक काटल) मृत्युक दर कमसल। आजुक आर्थिको दृष्टि सँ आ जरूरतोक दृष्टि सँ लोक सजग भेने देखा अछि जइ सँ सापक कोन बात जे दुहुनेरो कटखाहा डोंकरा टेगाम पहुँचे लागल अछि। सापे जकाँ पाँखिबला फेनगा-फेनगी सेहो जनमारा अछिये मुदा तैयो सँ लोक कैं आफियत भेटिये रहल अछि।

समय आगू बढ़ल, नागेसर भाए सन-सन कते लोकक हाथक काज छीनाएल। जखन हाथक काजे छीना गेल तखन ई हाथ कात की, आ नइ कात तँ खाएत कि अही-चौबट्टीक मोनि मे नागेसर भाए खसला अछि। खसला पद्धति सुमारक होइ छनि, जे जइ समाजक मे पेटक संग बिचारो चलै छल, से जिनगिये आ अनटि (अनेट) कैं पुनह-बिलैट गेल, आब कैते रहब? सुमारक होइ छनि जे जइ जिनगी मे भैया, कावा, बाबा बनि जीबैं छलौं तइ ठाम कौंचिगक (प्राइवेट इस्कूल) जे छौड़ा सब और सेहो-सब तेना के ताना मारै ए जे दैह

झनझुना कैं तुनतुना- तनतना जाइ-ए मुदा कहल कि। आब कि हमर औ ओमोर अछि छौंड़ा सब सें मुँह लगाबैक। सुमारक होइ छनि जे जइ ठामक चारी बले ओइन जिनगी बना चलैत आबि रहल छौंं, तइठाम कोनो पुछ नहि। जइहँतरें- तर नागेसर भाएक मनक मौम जेकाँ पिघालि (पिघैल-पिघैल) जरि रहल छनि मुदा मनमे एते शकित नहि जुटा पेब रहल छनि जे अपन जिनगीक हार केजीत दिस बढ़ता। तखन त नीके-नीक जिनगीक बीच नै जीवैत आबि रहल छी। तखन बीच रस्ता पर ओइन मोनि केना फुटि गेल जे कुरुबे नै देलों। झोंकमे झोंकाएत नागेसर भाए बजला- 'रस्ते पर मोनि फुटि गेल।

ओना रस्ता पर मोनि फुटबक एक माने भेल जे बाढ़िक समय ऐहैन होइ छै जे धारक प्रवाह मे रस्तावें दहि-दहि रहिते धारक मोड़ सेहो बनै-ए जइ सँ मोनि फुटै छै। दोसर होइ-ए जे चढ़ान सँ निचान माने उपरक जमीन सँ निचरस जमीन मे धारक चढ़ी सँ जे ऊरवाधि बनै-ए ओइह बढ़ैत -बढ़ैत मोनि बनै-ए जे नम्हरो- गहीरो बनै-ए आ छुधरो आपर बनिते अछि। मुदा ऐठाम त नागेसर भाए जिनगीक गप (विचार) कऽ रहला अछि, खेत- पथारक रस्ताक मोनि जेकाँ ओ मोनि थोड़े हएत, तैँ किअए ने नागेसरे भाए सँ बुझि ली। बजलौं- 'कि मोनि कहलिये भाए?'

हमर बात सुनिते नागेसर भाए कैं मन मे जेना खौंत फेकलकनि तहिना बजला- 'अपन मनक मोनि सेहो फरल पड़ै-ए जे अपनो सें बेसी ओकरे सबहक मोति फुटल छै। कि कहबह?'

नागेसर भाएक जिनगी ओइने बुढ़िया- बुढ़वा माछ जेकाँ भ' गेल छनि जहिना सौभरी ऋषि यमुना (जमुना) नदीक जल मे तपस्या करैत नदी माछक गति देखलनि जइ सँ जहिना विराग उत्पन (उतपन) भेलनि तहिना ते नै नागेसरो भाए

कथा - चरिबाह - चरबाह - पृ०-\/

सैहो म' रहल छनि। फेर लगलै मन मे उठल जे सौभरी ऋषि जेँका ~~थोड़~~ नागेसर भाए जलसमाधि थोड़े नेने छथि+जे विचार सँ ~~वैरा~~ वैरागपन औतनि। हिनका ते, माने नागेसर भाए कैं, गरदनि मे बड़का ढ़ोल बान्हि देवनि तइओ बकार नइ फुटतनि। मन छलकि (छलैक) गेल जइ सँ विचारक धारा एकाएक धड़धड़ाएत निच्चा खसै लगल। ~~बजलौं~~ -' मुदा तइओ खसैत-खसैत मन बजिते गेल जे जहिया सँ अहाँ कैं (माने नागेसर भाए कैं) मनाही कैल एलौ जे मनुख बनि अपन जन्म लेलौं तखन मनुखक रूप धारण करब तखने ने मानव कहाएब, से भरि दिन गुरुआइ कैत रहि गेलौं आ आब कनै छी।' मन कैं मारि बजलौं -' भाए, आब अहाँ के कोन मतलब ऐ दुनिया दारी से अछि, ने रहब ओइ टोल ने सुनब ओकर बोल', बेटा कैं सँ खरचा लिअ आ ~~सम~~, ~~सम~~- ढ़ेवजाक ओसारक चौकेदा बौसी रस्ता दिस तकैत ~~[illegible]~~ ' ~~राम-राम~~ सीताराम, सीताराम राधाकृष्ण राधाकृष्ण, ~~राधाकृष्ण~~, करु।

इमर बात सुनिते नागेसर भाएक मन जेना फुटि कैं छिड़िया गेलनि तहिना बजला -' बौआ, तोरा से लाथ कि, दुनू बेटो मुँह फुला कैं अपन-अपन बहु-बेटा ल' क' जते' नौकरी औ-ए तते चल ~~आई~~ गेल अछि। दुनू परानी ~~[illegible]~~ बुढ़वा-बुढ़िया घर मे छी।'

बजलौं -' बेटा किअए मुँह फुलौने अछि?'

नागेसर भाएक बेइमान मन इमानक धरती पकड़ि लेलकनि, जइ सँ विचार मे ~~[illegible]~~ बदलाव आबि ~~[illegible]~~ गेलनि ~~[illegible]~~। बजला - बौआ, इमान-धरम से बजै छी- दुनू बेटाक परोछक बात छी, ~~[illegible]~~ जेठका बेटा साइंस (विज्ञान) पढ़ने ~~[illegible]~~ ने खोट-कामा भइये गेल। बेर-बेर ओ मनाही केलक जे अहाँ झूठ-फुसक धंधा छोड़ू, मनुख छी मनुख जेकाँ रहू, मुदा----?

Officer

पृ०-१०

मुदा कहि नागेसर भाए चुप भ' गेला। मन मानि गेल जे बेटा लग अपन दोख कबूल नइ कें चाहै छथि, बजलौं-' छ : है जेठका बेटा (बेटा) अपन जेठपन देखौलक, ते तें फुलि रहल मुदा छोटका किअए ~~केलक~~ ?' फुलल अछि?'

नागेसर भाए बजला -' जेठका ओकरा तेना कें दुइर केलकै जे ओहो ओहिना दुरि भ' गेल। हमहु अहि ~~बोलि~~ गेलौं, आमदनियो छल आ समाज मे पूछो त छलैहे।'

बजलौं -' अच्छा आब छोडू माया जाल कें, बेटा सँ खच्चा दिया दइ छी। शान्ति सँ रहू।'

समाप्त

०६।०१८ ई०

कथा – भगैत – भगैतिया – पृ०-१

तीस वर्खक पछाति गोपालपुर गाम पहुँचते मन पड़ल पुरान भगत। कोशी धारक बीच ओ गाम बसल अछि। ऐहेन शंका नइ करब जे धारक बीच गाम केना बसल अछि। धारक पेट मे ते पानि रहै छै तइ बीच घर केना बनत आ बिनु घरे गाम केना बसत। सब कि, सौभरि ऋषि जकाँ नइ ने छथि जे जलक भीतर समाधि चौने रहता। धारक बीचक माने भेल जे गोपालपुर गामक अपन सीमा-चौहद्दीक निर्धारित जमीनक बीच अछि मुदा धारक ते कोनो सींग-नाङरि अछि नहि जेमहर मन भेलइ तेमहर विदा भेल। भलेँ नामक संग गुण-धर्म किअए ने जोड़ि धारक रहि जाए मुदा जेहेन गामक देने मुँह बनौत तइ गामक माटि ओहिना छपौने देतइ, ओ त ओकर गुण-धर्म के प्रभावित करबे करत किने। खैर जे कहौं। पहिने जे कोशी धार बहैत छल माने तीस वर्ख पहिने, ओ गाम सँ माने गोपालपुर सँ पूब उत्तरे-दछिने बहैत छल। साले-साल पछिम मुँहेँ कटनिया करैत घुसके लागल। गामक (गोपालपुरक) जीवन (माल-जाल, मनुखक) दूभर हुअए लागल, मुदा गामक लोक कैं दोसर चारे कि? ओना किछु गोटे परिवार संग गाम छोड़ि नेपाल मे बासि गेला, किछु नोकरी करैत शहर गेला ओ ओतइ रहैत घर बना लेलनि। मुदा गामो त गाम छी, कतेको लोक मिथिला छोड़ि बाहर बिदेश तक किअए ने बसल हुअए मुदा मिथिलाक जनसंख्या ओइसँ मेटा थोड़े गेल, ओ त तेहेन माटि-पानिक पा अछि जे आन देश मे दर्जन [illegible] पैदा केला पर (नाम-बच्चा) पुरस्कार भेटै-ए, मिथिला मे ओहन-ओहनकेँ मानियो ने अछि। तीस वर्खक बीच गोपालपुर गाम एकैस बेर घरारी बदललक। जे धार गामक पूब बहैत छल ओ आबन गामक पछिम देने बहैत रहल अछि, मुदा पुरनो धार सभकेँ पेट त ओहिना बनल अछिये बरसात मे पानि सँ भरबे करै-ए, तेँ कोशी धारक बीचक गाम भेल गोपालपुर।

पृष्ठ-2

तीस वर्खक ~~पद्धति~~ बीच गोपालपुर नइ आइक कारण कि भेल। जे नाम
जेबाक कारण अछि ते नाम नइ जेबाक कारण कते' सँ आयल।
भाए, अहाँ सँ लाभ कि, तीस वर्ख ~~पुर~~ पूर्व गोपालपुर सँ आवाजाही
नीक जेकाँ छल। कम सँ कम साल मे एक बेर, नइ जँ परिवार मे
कोनो काज भेल (ओहुन काज जइ मे नौत-हकारक चलनि अछि)
तँ दुइयो बेर तीनियो बेर जाइ छलौं। नइ जाइक कारण भेल
जे बादिक समय (बरसात मौसम) बहीनक सासु साप
कटने मरि गेली ओही मे नौत पुरै गेल ~~छलौं~~। रही
तीन टा धार मे, ओहिन धार जे भुतिया गेल छल माने मरैन भगेल छल, डूमै
लगलौं। तेसर बेर जखन बचलौं तखन मन करलक
जँ अपने आँखि ~~मुनि लेब~~ मुनने जाएत तखन ऐहेन-ऐहेन संबंधक
कोन बेगरता अछि। पारिवारिक संबंध अछि, बड़बढ़िया।
सब जखन परिवार मे छीहे तखन अपन-अपन परिवारक
कौत ने दोसरोक काब। ओही बादिक डरे तीस साल
सँ पछुअबैत आबि चुकल छल, तँ तीस वर्खक पद्धति
गोपालपुर गेल छेलौं। रस्ता कात मे दुखन भगत
कें देखलियनि ~~मरि गेल~~। दुनू आँखि सँ आन्हर दुखन भगत
एकचारीक दरबज्जाक चौकी पर बैसल। नजरि पड़िते
अपन मन रोकलक। मन रोकलक इ जे ~~[illegible]~~ जइ गाम पहुँचबे
ओइ गौंआ नै आगत बुझि टोकता।

आन्हर ~~भगत~~ दुखन भगत, देखबे नै केलनि ते
टोकता कि। धोरबे-धोरबी मे दुनू गोरे बीरानक-बीरान
बनल रहलौं। ओना कहब जे एहनो त बहुत लोक छथिये
जे अपन पद-गरिमा कें निमाहैत अगुआ कें नइ टोकै
चाहै छथि। भाए ~~पसन्द अपन-अपन~~ जहिना-पसीन अपन
अपन होइ-ए तहिना नै विचारो ~~हएत~~। अपन-अपन होइते अछि।
सूर्यास्तक समय भ' गेल छल। ~~बहीन मरि गेल~~
आइ सँ दस वर्ख पूर्व बहीन मरि गेल, मुदा परिवारो
बचल छै आ गामो बँचल अछिये। ओना स्वतंत्र देशक
सँ उन्नैत कौक बरबैते गाम कें छल तते त नहिये
भेल अछि मुदा किछु-किछु ~~नीक बनलो~~ त भेबे केल अछि। सड़क आ
सड़क मे पुल (~~[illegible]~~ धारक) बनने गाम अबै-जाए

पृ०-३

सुविधा बनि गेने गाड़ी-सवारीक अबाजात सेहो बनिये गेल अछि।

ओना तीस वर्ख पूर्व जे घर-घरारी बहीनक छल ओ आबन नहियें अछि मुदा ओइ सँ नीक अखुनका अछर बनि गेल छै। पुछैत-पुछैत पहुँचल छलौं। पहुँचते परिवारक कियो ने चीन्हलक। परिचय देत भेला पछाति चीन्हलक। चिन्हते हैरी आगत-भागत कऽ लागल। कुशल-छेम पुछला भेला पछाति भौज पर चढ़ल जे अपन परिचित एको गोरे, सिवा दुखन भगत छोड़ि गाम मे कियो दोसर नहि अछि। ओना बहीनक परिवार अहिना लोक सँ सम्पन्न बुझि पड़ल तहिना गुजरो-बसत सँ। अपना सँ जेठ मसियौत बहीनक सासुर गोपालपुर छी। मौसी कें एकोटा बेटा नहि दु टा बेटिये टा। मौसीओक आवाजाही अपना ऐठाम आ अपनो सबहक आवाजाही मौसी ऐठाम तहिये सँ छल जखन अपनो जन्मो ने भेल छल। अहिना मौसी कें नैहर छुटि गेल छलनि तहिना अपनो मात्रिक आ माइयोक नैहर छुटिये गेल छल। किअए त नैहरक गाम सँ कमला नदी धारक दहिना अहिना मुँहथरि भद्दा पड़ने उपरि गेल। ओ सब माने मामाक परिवार गाम सँ उपटि कलकत्ता मे कमेबो करै छथि। छथि आ भाड़ाक घर मे रहबो करै छथि।

अहिना माए मौसीक परिवार कें नैहर जेकाँ बुझै छथि तहिना मौसियो बहीनक परिवार कें नैहर बुझि नीक जेकाँ आवा-जाही रखने छली। जइ सँ अपनो सब मौसी गाम कें मात्रिके बुझै छलौं। मौसी कें दू टा लड़कीये (कन्ये) टा छलनि लड़का नहि छलनि। संजोग ऐहेन जे अपने दु भाउये छी बहीन नहि अछि। भर-दुतिया मे अरबाधि (अरबैध) कें जाइते छलौं। ओना अपना ऐठामक परम्परा मे एक-बहीन कें दोसर बहीन ऐठाम ऐवा-जेवाक व्यवहारिक चलनि (चलौन) नहि अछि मुदा परिस्थिति त सब कथू कें बदलैत चलिये अछि। तही बदलल परिस्थिति मे मौसीक आवाजाही सँहो अपना ऐठाम भेलाह आ माइयो मौसी ऐठाम अबै-जाइ छथि

पृ० - ४

मसियौत दुनू बहीनक बिआह भेल। जेठ बहीन के गाम सँ सटले दोसर गाम मे भेल तैँ आएब-जाएब असान (अरसान) छल मुदा दोसर बहीनक बिआह (सासुर) गोपालपुर भेल।

जलखै-चाह केला पछाति गप-सप करैले मन उबिया लगल। ककरा सँ गप करब? मन तेना उबिया गेल जे किछु आँखिके ने लगैत छल। गप-सपक माने भेल जे बराबरी मे दुनू दिस सँ चलै-ए। तेहेन त सँ नहि अछि। अहिना बचहन भागिन-भगिनी अछि तहिना सियनगर (चेष्टगर) मरदामरदी नहिये अछि। बच्चा सभ सँ गप-सप करैक मन नइ भेल। अखन पढ़ब-लिखब दिस धियानो ने गेल। अखन सुख-दुखक गप-सप करैक मन अछि। तइ ले ते ओहन संगी चाही। हारि-थाकि दुखन भगत लग बिदा भेलौं। तइ सँ पहिने भाँज लगि गेल छल जे दुखन भगत दुनू आँखिये अन्हरा गेल छथि। एहेन मुशीबत मे जाकर केकरो पड़ल छथि, तेहन जँ हम अपन गाम-अनगामक बड़प्पन ताकै लागी, ई नीक नहि। दुखन भगत एकचारीक चौकी पर असकरे बैसल।

मन अछि तीस बर्ख पूर्वक दिन, जखन दुखन धामिक ओइ समय मे दुखन धामि सँ मानल जाइ छेला, एकाद दिन-राति दस गोरे दरबज्जा पर बैसलो छेला खेनो-पीबो करै छला आ झालि-मिरदंग पर भगैतियो गबै छेला। आइ दुखन भगत, असगरे जिनगी हाबज्जा सँ उतीड़ (खसि) एकचारी जिनगीक बास कए रहल अछि। गाम-गाम बिजली भेलो पछाति गोपालपुर मे अखनो डिबिये-लालटेन अछि। सीसीक डिबिया के गरदनि मे ताड़ बान्हि चार सँ लटकल डिबियाक इजोत। फड़िके सँ बजलौं- धामि सरहएब, नमस्कार।

नमस्कारक उत्तर नहि दइते दुखन भगत बजला- अहाँ के चिन्हलौं नहि?

दुखन भगतक बिचार सँ मिसियो भरि मन मे कुबाध नहि भेल जे दरबज्जा पर आएल अभ्यागत के एहेन बात किअए कहलनि (बिचार बिआर केलैन)। सब कि औझ औलिक दानी भेल नाच नहि ने छथि जे बिनु परिचय उद्धो केकरो ...

कथा - भगैत - भगैतिया: पृ०-५

असीरबादी दए देता। अपन त देखल सुनल दुखन भगैत छथि जिनका जवानी दए देता जुआनी नैने चमकैत छलनि। शरीर सँ अबल भ' गेल छथि मुदा मन त ओहिना छनि जे धरमराजक भगैत गबैत-गबैत झालि-मिरदंग बनि जाइ छैथ।

एकै शब्द पाँती मे बजलौं- फलाँ, गामक फलाँ छी।'

नाम सुनितो अकचकाएल आँखिये चौकी पर ठाढ़ भ' दुखन भगत दुनू बाँहि पसारि छाती मिलबै चाहलनि मुदा तइ बीच मनाही करैत बजलौं- 'अहाँ जत' बैसल छलौं, तत' बैसि रहू, हमहूँ चौकिये पर कात मे बैइसै छी।'

जहिना बजलौं- तहिना दुखन भगत अपना-जगह पर बैसि गेला। बगल मे हमहू बैसलौं। दुखन भगत पुछलनि- 'कैह-कौसक हाल कहूँ।'

दुखन भगतक प्रश्न सुनि धुन्द भ' गेलौं जे अपने आन्हर भेल एकचारी मे असकरे बैसल कहि कहि रहल छथि तखनो कैहौ-कौसक हाल-चाल पुछलनि। विचार कें मोड़ैत बजलौं- 'यार, कि कहब कैहा-कौसक हाल, परिवारे मे तैना ओझरा गेल छी जे किम्हरो तकैक पलखतिये ने होइ-ए।'

हमर विचार जैना दुखन भगत के नीक लगलनि तहिना बजला- 'सबहक त यैह हाल अछि।'

गर भेटल बात कें आगू बढ़बैक, ओना अपनो बुझल अछि जे दुखन धामि कें जखन पाँच टा धिया-पुता भ' गेल छलनि, तखन पत्नी मरि गेलनि। चालीस-पैंतालीस बर्खक उमेर तहिया दुखन धामिक रहनि। कि बोलीक टाँस, आ भगैतिक सुर छलनि कंठ मे, केकरो मोहि लैक शक्ति छलनि। बीस-बाइस बर्खक एकटा लड़की फनीके (फनैद) कें दुखन धामिक संग बियाह ऐ कबूलती पर राजी भ' गेलनि जे पाँचो बेटा-बेटीक निमरजना हम अपन कोखिक बेटा-बेटी जकाँ करबै। दुनूक बियाह भेलनि।

पृ० - ६६

ओना अपना मन मे छल जे दुखन भगत सँ भगौतिक संबंध मे कुनो मुद्दा सँ मेल नहि। बॉसिते दुखनभगतक समदाही स्त्री, (माने दोसर बिआही) समदाही ऐ दुआरे कहलो जे जखन रुपनी अपन परिवारक विचार सँ हिटकि (हिटैक) दुखन भगत पर आसक्ति भ' गेली, तखन भगौतियो समाज आ गामोक समाज सेहो संबंध स्थापित भौलकनि तैं समदाही स्त्री। मुदा रुपनीक विचार सँ नहि छलनि, ओ स्वयंवरी विआह माने अपना कैं बियौती स्त्री मानै छथि। खैर जे अछि ओ दुखन भगत आ रुपनीक बीचक अछि। तइ सँ हमरा कोन मतलब, छिपली मे दु कप चाह नेने रुपनी एकचारी मे पहुँच बजली- 'पानो खाइ छी कि सिगरेट पीबै छी?'

रुपनी हाव-भाव आ बेवहार देख अपन मन सीक पर लटैक गेल। एक दिन देखी जे जे बौस धरती पर रहैए ओकरा जैं धरक चारक मे लटकल सीक पर रखि दियौ ते ओ अनेरे ने धरती सँ उठि अकास छुबि लइए आ दोसर दिन दुखन भगतक दशा देखै छी जे अइ जुग मे दुनू आँखि मरा काढ़ि काढ़ि रहल छथि। अपने त सर्व भक्षी छी। चाहो पीबै छी, कौफियो पीबै छी, सिगरेटो पीबै छी आ बीड़ियो त पीनिते छी। तइ संग तमाकुलो खाइ छी आ भाँगो गांजा त पीबिये लइ छी। तैं अनेरे कुया कैं कि बजितौ। सरदरे बजलौ- 'घरवारी कैं जे सब जुड़तनि, सब खाइ-पीबै छी।'

ओना दुखन भगत सेहो सबरसिया लोक, मुदा जिनगी टुटने बेचारे एकरसिया भ' गेला। चाह टा पीबै छथि। चारि घोंट चाह पीबिते दुखन भगतक मन कलशलनि। कलैशिते बजला- 'यार, दुनियाँ मे जैं कुकरो पत्नी अछि तँ हमर रुपनी अछि।'

पृ०- 6

पत्नीक प्रशंसा -२

दुखन भगतक पत्नीक प्रशंसा सुनि बजलौ- यार, कु मानि लेलौं जे अहाँक जोड़ा घरवाली दोसर कें नहि छै मुदा अपनौं आँखि मे इजोत देना औत से आन घरवाली आनि देत।'

उमर बात सुनि जहिना दुखन भगतक मन मे उत्साह जगलनि जे शरीर सँ पूर्ण स्वस्थ छी, आँखिक चलैत अथबल भ' गेलौं, तहिना रूपनीक मन मे सेहो जगलनि जे आबन धरि जे कुँए छलौं जे बन्न आँखि मे इजोत नइ अबै-ए, से बात नहि अछि। रूपनी बजली पति कें माने दुखन भगत कें अगुअबैत रूपनी बजली- 'हम त भोगी-भैरि भेलौं, नइ कुँए छी, जँ आँखिक इलाज होइत होए त करा दिऔ, जाबे जीब गुण गबैत रहब।' जेना जे खर्च पड़तनि तेकर ओरियान हम करब।'

रूपनीक विचार सुनि मन मे खुशीक एक नव रूपक दर्शन भेल। मुदा तेकए समेटि मने मे चौपेत रखि बजलौं - यार, अहाँक भैरिया मे रहै सब जीबैं छथि।' जेना अपन परिवार मे मृत्युक घटना भेने मन पीड़ाजाइ छै तहिना दुखन भगतक भेल। बजला- कियो ने जीबै-ए। हमही टा जीबै छै, जहिना कोनो गाछक डारि-पात कटि गेने गाछ ठुठ भ' जाइ-ए तहिना ठुठ भेल पड़ल अंतिम दिन गनि रहल छी।'

ओना दुखन भगत बौधिक क्षेत्र मे अगुआएल जरूर छथि से छथि मुदा संगीत कला मे। जीवन-क्रियाक बोध ओते नइ छनि जते सँ जीवन सुचारु ढंग सँ चलै-ए। ओना मन आ शरीर दुनू दू छी। मनक दुनियाँ अलग अछि आ शरीरक अलग अछि। जहिना मनक दुनिया अगम अछि तहिना शरीरोक दुनियाँ अथाह अछिये। लाखो रंगक रोगक आक्रमण जहिना शरीर मे होइ-ए तहिना मनो मे होइते अछि। मुदा जते पियास अपने लगल अछि ततबे पानि खगता ने अछि आ कि समुद्र उपदेक भाँज करब

पृष्ठ-८

अपन जे जीवन अछि ओ कैना दौड़ैत अंतिम साँस धरि चलत ततबे खगता ने अपनें अछि। तइ लें जेहेन जीवन धारित (धारण) कैने छी- तेही अनुकूल ने अपन धारणा बना धरित कौर्वे चलब। तइ मे दुखन भगत एक भग्गु छैला। संगीत कला खासकए भगैतिक गायन मे त दुखन भगत सिद्ध हस्त छैला मुदा शरीर क्रिया मे अनाड़ीक अनाड़िये रहैला जेकर परिणाम भेलनि जे सन्तरि बर्खक (उमेरक) पद्धति आन्हर भ' गेला, जे पाँच बर्खे सँ चिसिओर काटि रहल छथि।

एक त दूरक सफर कैने गेल छैलौं, तइ पा रतियो बेसी भेल जाइ छल तैं सब विचार कैं मोंकैत बजलौं-

यार, अखन आँखिक इलाजक भार लेलौं, तखन पान-सात दिन मे फेर अबै छी, परिचितै डॉक्टर सब छथि तैं अहाँ बुझि लिअ जे बीचक जे दिन अछि ततबे दिन आन्हर छी। अखन थकलो छी आ आँधी सँ देहो भसिआइ-ए।

जहिना दुखन भगत तहिना खपनी विचार सँ प्रभावित भेला। प्रभाव मे आबि दुखन भगत बजला- यार, अखन भगैतिक विषय मे पुछबौ, तखन पहिने यैह कहि दइ छी। हमर मात्रिक धरमपुर अछि। धरमपुर परगनो छी आ गामो अछि ओतै सँ हम हाइ स्कूल तक पढ़बो कैलौं आ भगैत सेहो सीखलौं, मामा हमर पार्टी (भगैतिया पार्टी) चलबै छैला।

बीचे मे बजा गेल -'ओ कैहेन भगैतिया छैला?'

दुखन बजला -'ओ त सोलहो आना रमता भगैत छैला। जहिना अपना सब इलाका मे रामलीला पार्टी कृष्णलीला रास गामे-गाम होइ छल तहिना भगैतिया पार्टी ओतक सेहो होइ छल। ओइ मे कते रंगक छल मुदा ओतै पहाड़ धुनैक कोन खगता छलनि, खाली धरम राजे टाक गबै छैला। सात दिनक इनकर आँज छलनि। दस गोरेक पार्टी छलनि, झाड़ि- मिरदंगक संग गबै छैला। एक धुन, एक लय, एक स्वर मे चलै

कथा- भगैत - पृ०- ५

बजलौ -' कते दूर धीड़ ओ घूमै छैला।

दुखन भगत बजला -' अपन इलाका त छलनिहें। दछिन मे गंगा किछेर, पुब मे कामाख्या आ उत्तर मे सप्तकोशी क तक इनका लोक भगैतिया रुप मे जनै छलनि।'

बीचे मे बजा गेल -' पछवरिया घाटक सीमा नइ कहलियै?'

पछिम सुनि दुखन भगत मुस्की मारलनि। मुसकुराएत बजला- पछिम मे कमला धारक इलाका मे कमला गीत चर्चे छल, ए जहिना धरमराजक भगैत काल्हि- मिरचैया धारक आठ-दस गौरे मिलि गेल छथि तहिना कमला सेहो भगैत सेहो होइ-ए, ओइह इ इनका सबहक पछवरिया सीमा छलनि।'

ओना आरो बहुत बात कहैक छल मुदा मानस भ' गेने बहीनक ऐलाम सँ तते इकवाहि भेल जे आगुक बात बाकिये रहि गेल। ओना अपनो मन सधकान दुआरे छटपटाएत रहै जे कखन विद्यान पर आएब। बजलौ- यार, अरेबन छुट्टी दिअ।'

दुखन भगत बजला -' आगुक गप काल्हि हेतइ।'

बजलौ -' काल्हि भोरे चलि जाएब। एको दिन गाम छोड़ै छी ते तते बिछेत होइ-ए जे कि कहब!'

जिज्ञासा भेल बजला - से कि, से कि, यार?'

बजलौ -' जनिते छी जे खेत-पथार अपना रहने गिरहस्थी करै छी। बाड़ी- झाड़ी सेहो लगौने छी। एको दिन जँ सुन रहल ते तते ने उजाड़ भ' जाइ-ए जे कते दिनक कैलहा पानि मे चलि जाइ-ए।'

दुखन भगत -' से कि?'

अपसोच भेल बजलौ -' यार, जहिना नील गाइयक उपद्रव अछि तहिना सुगरक सेहो अछि, तइ संग गाम मे तते ने बानर आबि गेल अछि, जे दिन-रातिक ओगरबाहि लगि गेल अछि। नै नइ रहब।'

तृप्ति (तिरपित) पियासल बच्चा जहिना माइयक हाथ मे गिलास देख होइ-ए तहिना दुनू परानी दुखन आँखिक इलाज भेला। समाप्त ~~~ १०।०१८

कथा - झूठ सपना - पृ०-१

मिथिलाक रूप-रंगक भीतर भवनगर गाम, जइ गाम मे सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखा।

मिथिला त मिथिला छी तइ मे गामक मिथिला आ गामो मे भवनगर गाम। अदौक गाम भवतारन किअए त त्रेता जुग मे जखन राम धनुष तोड़ै ऐला तखन भवनगरक देखिनिहारो आ स्वागत गीत गौनिहारि मे चारि गोटे भवोनगर छेली। तेँ भवनगरक लोक केँ आत्मगौरव छइहे।

जहिना सइयो नदीक बीच बसल मिथिला, तहिना साइयो रंगक माटि-पानि सँ सजल सेहो अछिये। कहब जे माटियो त माटि भेल आ पानियो त पाइनिये भेल। मुदा से नइ अछि, अछि इ जे धरतीक माटियो सइयो रंगक गुण-धर्म सँ युक्त अछि। जेकर जीवैत-जागैत नमुना अछि जे अन्नो-फलो, फूलो आ पातोक बढ़बाढ़ि मे सहयोगी बनि सहयोगो करै-ए आ असहयोगी बनि असहयोगो त करिते अछि। जँ से नइ अछि त एके गामक सब माटि मे एके रंग सब वस्तु किअए ने उपजै-ए। कोनो माटि कोनो वस्तु (अन्न फल इत्यादि) केँ उमकबै ए आ कोनो केँ बँझएनहो त अछिये। तहिना पाइनिक सेहो अछि गाम-गामक त बात छोड़ू जे एको गामक पानि एकरंग नहि अछि। ए जइ इनार वा चापाकलक पानि पीबै छी, बगलेक दोसर इनार आकि चापेकलक पानि पीतै त सर्दी-बोखार लगि जाइ-ए। खैर जे अछि, छी त सब मिथिलेक माटि-पानि।

जहिना आन गामक मे बाध-बोनक लहलही रहै-ए तहिना भवनगर मे सेहो रहिते अछि। अपन-अपन गामक सबकेँ अपन-अपन लहलही आनैक कारण अपन-अपन छैन। तहिना एहनो गाम त अछिये जइ मे लहलही केकरा कहै छै जे दहदही मे देहनो केस आबनो छुआएल अछि। तहिन जइ-जड़ी मे सेहो जड़ितो आबि रहल अछि आ अखनो जड़िते अछि। खैर जे अछि सबकेँ अपन-अपन समस्यो अछि आ अपना-अपना ढंगो कल्याणकारी बाट पकड़ै चलबो सेहो अछिये। जा से नइ हेत तँ कोनो गाम कि अपना भरे ठाढ़ कोना हएत (हेत)। जखन गामक समाज ठाढ़ हएत तखन ने गाम ठाढ़ हएत। जेकर कहियो अपन गाम अप्पन घर। अनेतौ त डेरेवला ने कहाएब।

Ajanta Officer

पृ० २

भवनगरवला कें गामक प्राकृतिक कारण दोसर छनि। दोसर
कारण छनि जे अदौक गाम भवनगर रहने अहिना एकदिस अनक
बरबारी भरैवला बाधक बधवला (हरबवार) अखनो
खाद-पानक घर बना बास करितो अछि आ जहियो सँ
गाम मेल तहियो सँ पुस्त दर पुस्त ओहिना रहैत सेहो रहने आबिये रहल
अछि, आबनो अछिये। तेँ कि मिथिला मे ओहन घर-
दुआर माने रहैवला नइ अछि जे-मे जेहाम एक सनैर मे बैस
हजार लोक पंक्ति बद्ध खा नहि सकै छ।
तेहनो त अछिये। खैर, जे अछि, अछि तेँ मिथिलेक माटि-
पानि, भाषा, संस्कृतिक बीचेँ नेँ तेँ संचमेंच सब विचारियो रहने केल छथि आ जे सत लगै छनि से करितेछथि। ओना भवनगर कें आन गामवला सब अनेको नाम देने
छथि, कोनो गामवला कहै छथि धनहा गाम, त कोनो कहै
छथि फलहा गाम, कोनो कहै छथि कौडि-कुजराक
तरकारी गाम त कोउ कहै छथि चौरहा गाम।
ओना रंग-बिरंगक नाओ सँ भवनगरवला
चिन्तित नहि अछि, तेकर कारण इ जे गाम त जुगानुकूल
(युगानुकूल) बढ़बो कएल आ घटबो त करिते अछिये। जँ
तहुमे गाम कें (भवनगर कें) एते त प्रतिष्ठा भेटिये
चुकल अछि जे विद्वानक गाम, डॉक्टरक गाम, प्रोफेसरक
गाम, मास्टरक गाम, किसानीक गाम, चपरासीक
गाम इतिहासक पन्ना मे नइ कहाएल अछि सेहो बात नहिये अछि।
तेँ सब किछु अंगेजल गामवला छोट-मोट
मान-अपमान कें पाइनिक बुलबुला (बरखा पाइनिक)
जेँका बुझै ए जे जहिना अकास सँ खसल तहिना
धरती मे सोखा जाइत। तहू लै अनेरें महाकालीक
आराधना छोड़ि बातक बतंगर मे लागब नीक
नहि बुझि ध्यियाने सँ काते रहै छथि।

तेँ कि ओ (भवनगरवला) अपन उपर लगौल
अपमान-उपनाम सबहक सफाइ नइ दियै चाहै छथि सेहो बात
नहिये अछि। सबहक सफाइ सार्वजनिक रूप मे दियै चाहै

हृदयखोलि छाती तानि भवनगरबला सब सार्वजनिक रूप मे कहै छथि जे धनहा गाम भवनगर छी। से ओहिना नइ ने भेल अछि विद्वानक गाम रहने विद्वत् जन गीता कें पुजक पाठ नहि बुझि आंगिक क्रिया बुझि अंगेज नेने छथि जाहि सँ एते विश्वास कृष्णक अर्जुन कें नइ करहलखिन जे कर्मक फल ओहने होइ छै जेहेन कर्तीक कर्म रहल। जखने कर्म धर्म मे अबै-ए तखने अर्जुन सन अर्जन (अरजन) शक्ति आबिये जाइ-ए। तैं जँ आन गाम बला सब धनहा गाम कहै छथि त एते बधाइक पात्र त छथिये जे अयोध्याक दरबार मे बधैया गीत- गौनिहार छला।

दोसर भेल फलहा गाम। एक त विद्वानक गाम भवनगर सब दिन सँ रहल, तइ पर जनक जी सन-सन हर जोतिनिहार सब दिन सँ रहले आएल अछि। केना नइ जोतत? मिथिला कि जर्मनी, इंग्लैंड सन देश जेकाँ लोहे-लक्कड़ पर ठाढ़ अछि, ओ त अपन माटि-पानि, नदी-नाला, बाध-बोन, झरना-पहाड़, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सँ तेना भरल अछि जे अपने-आप मे सम्पन्न बनि सेहो बनल अछि, आ भरल-पुरल सागर सेहो बनले अछि, तँए जँ कियो फलहा गाम कहै छथि त ओ जरूर देखल-सुनल बुझल-गमल बाजि रहला अछि, तैं हुनका धन्यवाद किअए देबैन हुनका फलबोदे देब बेसी नीक हएत।

तेसर भेल, कोइर-कुजराक, तीमन-तरकारीक गाम। भाए ओहिना नइ, ने लोक कहै छथि, अपन अनुभव सँ कहै छथि कि जे जाबे धरती कें कोइल-कमाएल नइ जाएत ताबे तीमन केना तरकारी बनै-ए आ तरकारी केना तीमन बनै-ए से थोड़े बुझबै।

चारिम भेल- चोरबा गाम। जे कियो चोरबा गाम कहै छथि ओहो कोनो खिसिया कें नइ कहै छथि, जे खिसिया कें कँहतेब (कहितथि) त दोसर रूप होएत मुदा से नहि ओ सोलहो आना देखल-बुझल बात कहै छथि तैं ओ सबसँ बेसी बधाइयोक अ

पृष्ठ-४

धनवादोक पात्र छथिये। तखने नइ जँ इमनदारी सँ देखल जाए त ओहू सँ (माने बधाइओ- धननाद) बेसीक पात्र ओ छथि
किअए त ओ भवनगरवलाक सब किरदानी आइये सँ
नहि सब दिने सँ देखैत आबि रहल छथि जे केना भवनगर
वला अनकर पुस्तकालय देखैत- देखैत पसिनगर किताब
चोरा कँ बैग मे राखि लइ छथि, तँ जँ ओ कहै छथि
ते कौनो अपराध नहिये कहै छथि। तहिना ओ आइएक
भवनगरवलाक चालि कुहै छथि सेहो बात नहिये अछि
सब दिन सँ देखैतो आ सुनैतो आबिये रहल छथि जे
केना अनतै जा-जा ज्ञान- सब आनि-आनि ओकर
चोरी नइ कहै छथि। तहिना आन गाम सँ चुरि सब
सेहो चोरा- चोरा अनबे कहै छथि। ई त भेल क्लाएबन एक नम्बर
चोरक सबहक सूची, दोसर नम्बर फुलवारीक मालीकेँ लिअ।
देखबारक माली जति अरवन आने-आन एज दबाबक फुलवारी सँ
ललचकर फूल सबहक बीजो आ गाछो जे किछु देखाइयो कँ आ किछु
नुकाइयो कँ अनितो रहलो अछि आ अरवनो आनि
सेहो बात नहिये अछि, तँ जँ कियो चोरबा गाम भव-
नगरवला कँ कहै छथि ते भवनगरवला कँ मन मे
भिसियो भरि दुख किअए होइतनि। स्पष्ट इनका सबहक बुझब छनि
जे जँ गोबर खतोक फुलाएल कमलक फूल छी, तइओ ओ कमले ने भेल।
परिवारक बात त छी नहि, गामक बात छी, सुनीता
सुचिता, सुरीला आ सुलेखाक जनम एके मुहूर्त एके
दिन भेल। कहब जे जनम भगवानक देलहा छिअनि तेँ
ओ असंभव नहि भेल मुदा चारूक नामक पहिल अक्षर 'स'
सँ एक केना भेल? केना सोंसे गामक दाय-माए कँ
ऐहेन एकरूपता सुझलनि जे चारू गोरेक नामक 'स'
सँ लगा देलखिन। मुदा किछु छथि ते भवनगरक दाय-
माए छथि किए तँ पोथी-पुराण सँ हटि कँ थोरे चलती।
माए, रस्ता दिश कियो बिदा हएब आ इ बुझबे नै रहत जे
कते जाएब तखन डेग केम्हर मुँहे उठत। मुदा सेँ थोड़े
भवनगरक दाय-माए छथि, ओ प्रौढ़, परिपक्व दाय-
माए छथि किने, तेँ समयकेँ दु भाग मे बाटि,
शुक्ल- कृष्ण दु पक्ष केने छथि। शुक्ल पक्ष मे जन्म भेँ

कथा- झूठ सपना - पृ० ५

चारू गोरेक नामकरण 'स' अक्षर सँ कैल गेल।

शरीर जहिना अनेको गुणो-धर्मक आ अवगुणोक धाम छी तहिना
मनोक धाम छ अछिये। अही धामक बीचक गाम भवनगर। चारू बालक
माने सुनिता, सुचिता, सुशीला आ सुलेखा, गाम भवनगर।
बच्चाक बीच जहिना गुण-अवगुण अंकुरावस्था मे रहै-ए तहिना भवनगर
क चारू बालाक सेहो सहल। मिथिला गाम त भवनगर छीहे, जहिना एक-
दिशि नीतिशास्त्रीक बौन अछि त दोसर दिस अनीतिशास्त्रक झाड़
दुर्भाग दुर्भाग रहल जे हजारो बर्खक गुलामीक शिक्षा रहलो जइ सँ
शरीरो आ जिनगियोक खून-पसेना सँ मांस खून-मांस मांसपेशिया तर्क सब चुसा-चबा गेले अछि।
पढ़ाइ-लिखाइक जहिना एक दिशि (दिस) दुनियाँक शीर्ष पर मिथिला अछि
तहिना ओ समतल रहने, आम जनक बीच सँ हजारो
कोस दुर रहबे कैल अछि। जँ ओंकुरो हिसाब देखब
त बुझि पड़त जे पढ़ै-लिखै मे अदहा सँ कम आबनो छीहे
तेँ मिथिला पछुआ गेल सेहो केना कहल जाएत। एक
सँ एक योद्धा पौरुषक पुरुषक (पुरुषक) पैदा मिथिलाक माटि-पानि, आइये
नहि सब दिन सँ रहैत आनि रहल अछि। आएल अछि त कहा भरि चारू-कात जँ से नइ कात
जिनगी बन मे रहि जीवन भरि बना जिनगी भरि चास-बास मे कियो योद्धा ओहन
जँ आइयो मिथिलाक धरती आ मिथिलावासी कैं ज्ञान बँटैत बिसरैत रहला अछि। तेँ
देखब त ओइ दिसाबे खेत-पथार (माने भुमियेँ) बेसी अछि। तेँ हाम
जँ उत्तर-प्रदेश, पंजाब, सन आन प्रदेश, मिथिलांचलक जे
सँ बाहर जे क्षेत्र बिहार राज्यक अन्तर्गत अछि, तइ
सब राज्य सँ खाइ-पीबैक अनेको वस्तु
आबि रहल अछि, इहो त अपने ने देखै पड़त। मानो त मान
छी, सबहक छी मुँह स्वमान ने अपन भेल, इहो देखबे ने।
स्कूलक (विद्यालयक) अभाव, आर्थिक तंगी संग धार
धूर सँ भरल क्षेत्र, आइये नहि सब दिन सँ भोगैत
भोगैत पड़ल रहल छति मुदा कि एकरा असाध्य माने लो सेहो एकोसरी
आइये (नदीक लोकनी बनि गेल। हैसारत के कियो ने सकत। पाछिने किछु
दम छल आबन किछु बेसी भऽ गेल अछि, तेँ कहब जे
मिथिला क्षेत्र मे लोकक बढ़वारि
कम अछि सेहो बात
नहिये अछि। इहलो इहीसार तइओ

पृ०- ६६

नौ (नअ) घरक सौंगर् अछिये। केतबो लोक मिथिलाक धरती सँ किअए ने बहरा जाए, ओ घरबी पुरान नहुँ हएत। मुदा बच्चा रोकैक ऑपरेशन धुर-फाड़ चलिये रहल अछि। संसार नहिये अछि। तें ने

एक ठाम रहैत चारू बच्चा पहिने वहीनक संबंध सिनेहक, पद्धति सुन अपना मे वहीना बनि जैति। निमंत्रण स्वीकार केलक। तँ जिनगी बहीन जेँका निमाहैक। रस्ता पकड़ि (गरदा माटि) चिक्कन माटि कैँ घरौंदा (घर-अंगना) बना अपन-अपन अंगना घरक घरवासो लैलक आ घरवासक भोजो केलक। माटिये-माटि सब किछु खाइ-पीबै सँ ल' क' सब किछु रहै, सेहो माटिये।

समय बीतल, परिवारक अंग बनैक संग-संग, अंग बनब भेल परिवाररूपी गाड़ीक, भले ओ साइकिलक भालु-ए जेकाँ किअए ने हुअए, गामक देवालयक दीपक-बाइरव सब दिन कैल लागल। आँगुका जेकाँ समय नहि छल, पुजाक फूल पहुँचबैं, जेना दुर्गापूजा मे समाजक (गामक) बाल-बोध सब घोरे फूल लोढ़ि कै भगवती स्थान पहुँचबैत अछि, तँ धरि ओ अपना कैं पूजा कौक आधिकारी नइ बुझै-ए, ओ बुझै-ए नरक निवारन चतुर्दशीक उपास स ल' क' रामनवमी, कृष्णाष्टमीक कौ-ए, जइ सँ पुजाक अधिकारी स्वतः बनि जाइ-ए। उपासक उपरान्त ओ पहिने देव-पूजन करैत पद्धति अपने जल ग्रहण करैत। नारीक विशेष गुण मिथिलांचलक नारी मे रहल आबि रहल अछि, जे पतिक विचारानुकूल संगीक, मुदा आगुक कोन रूपे बदलत तेँ दिस त देखै पड़त।

कतिये आगू बाल-विवाह एकबएक शुरू भेले छल, दस-बारह बर्खक बीच चारूक विआह भ' गेल। जे जतै अमुआ कैं गाम छोड़लक ओ ओतै बेसी कनबो कैल आ कानबो सुनलक। मुदा जे सबसँ पछुआएल ओ कनबे ने कैल। कोना गरदनि जोड़ि कनैत, माए त माइए छथि, हुँसू कि कानू माए माइये जेकाँ रहती। तैं संखी-पड़ोसाक संग ने कानल, आ ने कानब सुनलक तैं हँसिये-हँसी मे उड़ि गेल। कहैत' गेल सैं अपने टा बुझलक।

पृष्ठ-६

समय आयू बदल। तीस वर्ख पश्चाति एक-दोसर सँ, मोबाइल भेने
सम्पर्क भेल। तइ बीच के कत', माने चारू गोरे, रहल से
अपने-अपने टा कुफलक। चारू में से किओ ने कुफलक। के कते आनि पौलक।
सबहक मन कहै, माने अपन-अपन
कहै, जे हमरी टा जीवैं छी, बाकी के कत' डेरा-डेर गेल
तेकर कोनो पतो ने अछि।

चारूक बीच सम्पर्क-सूत्र बनने, के नैहर कैं
जइ धरती पर बच्चा मे चारू की जिनगी बहुत
कें वाली बहीन जैंका जीवैक बनबक संकल्प भेने छल, तेकामक बनल।
चैतक रामनवमी दिनक दिन, मैट होइक एकबारे बनल जे गाम मे
- ऐबेरक उत्सव मे कम्पीटिशन अछि, तैं देखै-सुनै
ओकर गाम सेहो रहबे करत।

संजोगबनल, चारू गोरे रामनवमी दिन चारू दिस सँ पहुँचल।
गामक उत्सवक तेहेन हल्ला-होरी चढ़िकऽ गेल जे कोसी-
कमला धार सँ चारूक बाढ़िक पानि उछलने जहिना
गामे फैसि जाइ-ए आ तखनका जेहेन मन लोकक होइ छै तेहेन
त नहि, मुदा राम-रमैयाक धुनक बाढ़ि ऐने गामक कोसी ग्राम-
बनियैं गेल छल, तइ बीच अपन-अपन दुख-सुख चारू सेहो बिसरियै गेल
किअए त सबहक नैहरक गाम ने भवनगर छी।

उत्सव समाप्त भेल। चारू अपन-अपन ठौर धड़त।
प्रातक (रामनवमीक मेलाक परातक) समय सब एकठाम बैसि
अपन-अपन अतीतक जिनगीक गप-सप भेल।
भवनगरक गाम, छोड़ै। सब अपन-अतीत-भविसक विचार
केनिहार संग अछिये, तैं वातावरण मे ओहन विचार बहियो
रहल छल, तैं चारूक मन सेहो वतावरण मे मह-मह
भेले छल। आन गाम जैंका भवनगर थोड़े अछि जे बास
विद्यालयो मे बच्चो सबकेँ सिखौल जाइ-ए
बौआ सत बाजब धरम छी,
मुदा सिखौनिहार अपने भरि दिन मे कते निमाहै-छथि से आन कैं कुकैब
रख। कोन रखता छै, मुदा अपनो नइ रखता छथि, सेहो
बात त नहिये अछि।

चारू एकठाम भेल, जिनगीक अगिला-पछिला सीमा
सटि कैं एकठाम भेल बाकी तीस बर्खक भेल तेकर
ठेकान करै मे बड़ समय लागत। देखते छियै जे जे

पृष्ठ-८

परिवार छैले भरि दिन रोड पर जिनगी बितवै-ए पढ़लो-लिखल नहि हो, जिनगीक अनुभवी रहितो अपन-बाल बच्चा के बुझबै-सुझबै जे कते समय पैब रहल अछि, किओ सोचनीय विचार नहि अछि। धनक भरपाइ कोंमे त सब जुटइ छी, मुदा मनक भरपाइ कोंमे किअए फुरल छी, से के एकठाम होएते सुलेखा बाजलि- 'आइना अपना सब कुच्चा बच्चा मे बाजल रही जे भरि जिनगी बहिन जेँका रहब, से मुदा रहइ निमहैत आबि रहल अछि।'

सुलेखा पर सुनीता आँखि गुरेड़ै लागलि। मुदा सुचिता आँखिये इशारा सँ हँसि देलनि। सुचिताक आँखिक हँसी सँ सुनीता विहुँसैत बजली- 'बहिन, ई से त अपना-अपना भागक कामे निमहइये गेल मुदा---।'

मुदा सुनि सुशीला बजली- 'दीदी, अखन सुलेखेक विचार मानि लियौं। किये-अपना भागक कर्मे जीवै-ए आ कि कैओ आनक कर्में। सब अपन-अपन राम-धाम कैं सुमरैत समय बिताइये रहल अछि।'

किअए सुनीता सुचिता दिस ताकैत आ कि सुलेखा दिस अपन विचार कैं अपना मने मे गोड़ि, आगू कि जिनगी देखै लागलि।

सुलेखाक मोबाइल टनटनाएल। मोबाइल सँ गप-सप केला पछाति सुलेखा बाजलि- 'हमरा इमरजेंसी म' गेल, जाइ छी।'

चारू गोरे केउ चारि दिस भगैल। भवनगरक जे अखन धरि गर्दन रहल अछि, ओ बाल-बोधक भवसदृश्य रहल अछि, जेकाए सियनगर होइ मे किछु नहि किछु समय लगबे करत।

समाप्त
१५|११|२०१८

कथा - यादास्त - पृ० १

आसीन इजोरियाकुं चारिम चान जेकाँ जीवानन मास्टर [सहाएबक सा] साहेब साहब आइ भोरे-भोर देखलि देखलहुनि। देखते मन तिरपित भ' गेल। तिरपितो कैना ने होएत, जइ समाज मे माए-बापक पुछड़ियो दूरि रहल अछि, [तइ सँ पुछि समापत भ' रहल अछि,] तइ समाज मे जे पेइसाठि (पैंसठि) बरखक अवस्था मे बैटा कहि देलकनि जे जहिना अपने अहिना पढ़ाइ छोड़लौं माने इस्कूल कओलेज सँ [तेका] लगले हाइ स्कूल मे पढ़ौनी शुरू केलौं, [जे काल्हि] साठि बरखक [अनुसार] मे ओ काज (पढ़ौनी) हाथ सँ छीना गेल, आब अहाँ बुते फेर शेष जिनगीक लेल (जिनगी लेल) फेर सँ सेंध रिंच-हथोड़ी ल' क' इंजीनियर बनल थोड़े हएत, मुदा अकाजक लोककेँ त ई दुनिया रसपान करबै नइ अछि, तैं जे काज हाथ सँ छीना गेल ओइ काज अपन परिवार मे [बाल-बच्चाक बीच] करू। चारि टा पोता-पोती अछिये अछिये। मारेरास अपनो पेन्शन भेटिते अछि खूब उड़ाउ-पुड़ाउ, फगुआ [खेलू आ दिवालियो मनाउ।] खेलाइत रहू। मास्टर सहाएब कैं देखते प्रणाम कौत करैलएनि- काका, भगवान केकरो परिवार देखलखिन त अहाँ के देखलनि। तैं सुख-सुविधाक विषय मे किअए पुछब पुछला मुदा [कुशल-क्षेम] नहियो पुछब से उचित नहि हएत तैं पुछै छी, नीक चैन सँ रहै छी कि ने?

मास्टर मास्टर सहाएब सहाएब दोहरी धारक पेट मे पड़ि गेल छथि, दुनू दिस जहिना [धारक पाहिलि पत पनिलकुर्] जलपात्र कुर्के छोप तहिना [पनि डुम्मी] जलडुम्मी सेहो आगू मे छनिहें। तैं मन मानिये ने रहल छलनि जे चैन सँ रहै छी कि बेचैन सँ, मुदा लोको कि ने जेकरा अपने लेहाज नइ छै। [एक रुपे त ओहो त ओहिना] लाज छीहे छिपा कँ रखैए तहिना लाजो ने खुलि कँ कहैए जे झूठ बनबाइ छोड़ि दे हम तोरे घर वास करब। ओना मास्टर सहाएबक आगू मे हम [बचकन] बचकानी छी। मुदा प्रश्न त बचकनक नहि चेस्टकनक अछि, माने अपन जीवन अपन लोक अपन सोच- अपन विचार कते दूर धरि अछि। ओना जीवानन काका कैं जहिना दुनियाँ कैं भौगोलिक रूप मे देखल रहला अछि तहिना सेवा निवृत्तिक पद्धति जे अध्ययनक विषय

Ajanta Officer

पृ०-२

बदललनि तखन अपन दुनिया (मनक दुनिया) सेहो सोआ मे
अबै लागलनि। असमर्थ असमनजस मने बजला - 'बौआ, जे
चलनसारिक बेवहार अछि तइ मे बचैन छी मुदा अपन -
शीतल दुनियाँ जखन देखै छी तखन बेचैन भ' जाइ छी तेँ
कि करब? अपन जिनगी आम जेकाँ पकलो अछि आ
काँचो त छैहे अछिये।'

जीवानन्द काका बी०ए० पास केला पछाति हाइ स्कूल मे भूगोलक शिक्षक
बनला। एकदिशि अध्ययनशील लोक दोसर दिशि परिवारो समटल सेँ अथा सँ बेसी
दरमाहा अपने पढ़ै-लिखै मे लगौलनि। दुनियाक भूगोल
कैँ चाटि गेला। ओना एके विषयक पढ़ौनी जीवानन्द
काका करैत रहला। स्कूल मे बेसी विद्यार्थी
जाइ सँ सेकशन मे बँटल किलास रहने एके विषय
पढ़बै मे अपन ड्यूटी पुरि जाइ छलनि। ओना भूगोलक संग-संग आनो
विषय सब पढ़ि कैँ बी०ए० पास केने छेला, मुदा अभ्यास
छुटने आन-आन विषय मन सँ हेराए त
गेलनि, जे अन्तोअन्त तर पड़ि हेरा गेल छनि।
ओना जीवानन्द काका अपन जिनगी कैँ समेटि सब दिन सँ
बितबैत ऐला अछि। पुछलएनि - 'काका, अहाँ शिक्षक छी
तेँ डाक बचन ओहिना बोल अछिये मुदा हम त से नइ छी, परिवारिक छी
तेँ परिवारेक बात ने जानै चाहब।'

विचारक दुनियाक ढलान सँ ढलकैत जीवानन्द
काका बजला - 'बौआ, परिवार देखब मन मे
बहुत खुशी होइ-ए जे खाइ-पीबै छी, मौज-मस्ती सँ
जीब रहल छी।

जीवानन्द काकाक विचार मौज पर चढ़बे ने केलक जे कि
मौज मस्ती कहै छथि। बजलौं - 'से कि, काका?'
जीवानन्द काका बजला - 'अपने जे वंश बनेलौं माने शिक्षक
वंश, ओ आबनो दनदनाएत आगू बढ़ि रहल
अछि।' अपनो शिक्षक जिनगी बितेलौं, दुनू
बेटो सेहो भेल।'

बजैक अभ्यासी लोक जीवानन्द काका सब दिन सँ
रहने केला तेँ कि बाजि देइ छथि से मौजे पर नै
चढ़ैए। कतहु मे बजला जे अपनो शिक्षक छेलौं आ बेटो शिक्षक भेल, ब...

पृ०-३

मुदा ओ तरमुँहा भेलाह। के उपरमुँहा सँ बुझबे ने केलौं। अपने जीवानन काका हाइस्कूल मे शिक्षक छैला बेटा कौलेजक शिक्षक भेलाति कि लोअर प्राइमरीक सँ भाँज पा चढ़बे ने केला।

कमरसारिक काजे आएल रही तेँ भोरे-भोर जीवानन काका सँ भेंट भेल छल। गप-सपक क्रम मे जीवानन काकाक परिवारक भाँज लागल जे दुनू बेटा कइएकौ लगबैत रहइ। आ अहिना अपन कमाइ पढ़ै-लिखै मे लगबैत एलौं, तहिना परिवारक बच्चा सभ कैँ पढ़बैत एलौं तहिना परिवारक बच्चा कैँ बबन्ना पा बौसि पढ़बैत रहू। परिवारक माने-खाए-पीबै कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरक कोनो भार अहाँ उपर नहि। जे रोगी कैँ मन भावे सँ बैद कमावे। पढ़ै-लिखैक तेहेन लत जीवानन काका कैँ लागि गेल छलनि जे किताब किनैक पाइ कैँ ओ धरमक काज बुझैं छैला तैँ सुदि-सवाइक भाँज नजरि प कहियो चढ़बे ने कैलाति। अध्ययनक दिशा बदलने माने ई जे जे जीवानन काका भूगोलक विषय शिक्षा मे समयो आ टको खर्च केलनि ओ बदलि कैँ धर्मशास्त्रक विषय शिक्षा दिशि आबि गेलाह। तैँ वेद-पुराण, उपनिषद, सँ लऽ कऽ तुलसीकृतक रामायणक संग आ चन्दो झा आ लालोदासक रामायण तक कीन अपन बेसार घर सजबैत आबि रहल छथि। सजबैत आबि रहल छथि।

ओना रही कमरसारिक (कमरसारि भेल बड़ही ऐठाम) काजेसँ रास्ता मे, दुर्गापूजा आबि गेल अछि अखने सँ ने हुँसुआ पीजा कैँ रखब। गामोक ठाकुर (बरही) के आब ठाकुरे रहल ओ त महाठाकुर बनि गेल। माने ई जे जइ बरही ऐठाम बीस टा हँसु धार कौं पहुँच गेल, तैकरा भरि दिनक (माने आठ घंटाक) काज लागि गेलइ। हुँसुआ कैँ पहिने भाथी लऽ मे आगि सुनगा ओकातात (ताव माने ओतेक आगिक ताप बनाएब जइ मे लोहाक हँसु काज करै जोगर बनै जाए) बनबे पड़ै छैलै, तइ मे हँसु राखि भाथी चलबै पड़ैत रहै छलै। जखन कहँसु आगि मे धीप अगिला काज (माने रेती सँ रेतैं ओकर, जइ सँ पुरान हँसुक पुर

पृष्ठ-४

चार मरि जाइ छलै) चार बनबैक होइ छलै। एक-एक हाँसु के
रेतै मे दस सँ पनरह मिनट लगै छलै। तइठाम आब ओ
बिजली चालित रेती बना लेलकै, जइ सँ आब ओझा मात्र
हाथक काज मात्र धार कुटब रहि गेल छै। ओना ओ बाजल
जे मशीन त एकरो आनि गेल अछि,
काज लगबै मे आएत। ताबे जीवानन्द माथ
सहाएब लग गप-सप करू। अपनो त काजेक समर्थ
मे ने पललेत (पललवति) भेंट गेल। किअए ने बचपनवाली
बुकलो से छौनगेचारि टा होसुक चपला काढ़ मे
जलरबे बेर आइ-छौनि। भाए, ऐ मे हमर कोनो गलती
नइ अछि। समाज मे रहै छी, समाजक जे हेन चालि-ढालि
अछि जे जहिना ज्ञान पर अज्ञानक शासन अछि, तहिना
मे अपनो अछि। माने इ जे कोन परिवारक पुरुख ऐहेन
छथि जे अपनो जीवन-सूत्र बुझितो घरवालीक हाथ
मे धीयो-पुता नइ सुमझा देन छथि। एक दिशाहारी शिक्षा
प्रतिबंधित तइ पर नव बच्चा के युगानुकूल संस्कार सँ
सांसकारिक बनबैक काज बाल-बोधक खेल छी।
परिवारक बीच जँ सबसँ प्रमुख काज छी त ओ छी जे
बाल-बच्चा कें सम्हारि मनुख सँ मानव बनाबी।
जीवानन्द काका वैचारिक धरतीक बीच जीवन-यापन
केलैन तँ सामाजिक जीवनक धरतीक बोध बओते
नइ भेलनि जतेक खगता छलनि। तैं मन मे
आएल जे एक-एक बात जखन बीटिया कें पुछबनि
तखन नजरि बीटिक जड़ि दिशि जेतनि आ परिते
देखता। बजला काका, बच्चाक सबहक जे पढ़बैक
भार लेलौं, से कि आब ओ सब गुदानत। तैं बेटा-
पुतोहु सँ कच्चा-बच्चा का लेलौं कि नइ?

जीवानन्द सुनि कें गुम भ' गेला। मन पड़लनि अपन
केजरीवाल स्कूलक शिक्षणक टाटी। विद्यार्थी सब
कें छड़ी सँ मारि दैछिथ। पढ़बैक ओ जुरि ने हमरा
अछि, मुदा आइक त पद्धति बदलि गेल, अछि, तेठाम

कथा - याददास्त - पृ०- ५

मुदा भवन धरिक जे परिवारक ममत्व, जीवनक एकत्व देखलनि, ओतेे अनुकूल जीवानन्द काका बजला - 'बौआ, परिवार मे जँ ऐना करूवधी क'क' काज करैत रहत तखन विश्वास विसबासक जगह कतेक रहत।

अपन वैचारिक विचारक हिसाबे जीवानन्द काका बजला आगू बढ़ैत बजलौ - 'काका, बच्चा सब पढ़ै मे बढ़िया अछि कि ने ?

हमर प्रश्न सुनि जीवानन्द काकाक मन जेना चनिएलनि। चनिआइते चैनक झलक अबै लगलनि बजला - बौआ

सँ कि कहबह। परिवारक एक परिवारक चारि बच्चा छी। ५ टा अबोध अछि जे पढ़ाइक पढ़ैक जगह अबै धरि छोड़ि आइ-ए। मुदा ५ टा जे हमी चेष्टगर अछि तइमे एकटाक याददास्त नीक अछि, आ दोसरक कमजोर अछि

सँ कहि जीवानन्द काका गुम भ' गेला। गुम हेएक कारण भेलनि जे गुमकी साधि लेलनि। एक त परिवार शिष्टिजन छी, तइपर जिनगी भरि शिक्षण काज सँ जुड़ल रहलौं। इस्कूल मे त दस गाएक दस रंगक विद्यार्थी अबै छल, समय हम रहैत छल, ठीक से ने बुझा पबै छलियै, आ ने अपने बुझि पबै छेलौं, समय बीतैत-बीतैत बीत गेल। ऐठाम त से नहि अछि परिवारक बच्चा छी। अगिला पीढ़ीक तैयार करैक जिम्मा कन्हापर अछि। मन कडुआ लगलनि। अहिना धार मे कडुआइरिक चालि सँ नाव कवनो घाट सँ अबाह दिशि जाइ-ए त कावनो अबाह सँ घाट दिशि अबै-ए मुदा नैया नाविक त मात्र कडुआरि चलबै-ए, तैं कि ओ इ नइ बुझै-ए जे नाव कावन अबाह दिस गेल आ कावन घाट दिशि आएत ओ त जरूर बुझबे करै-ए। मुदा तैं कि ओ अपन काज थोड़े छोड़ि दइ-ए। ओ त अपन गनतव (गणतव्य) स्थान पहुँचला पद्धतिये छोड़ै-ए।

जीवानन्द काकाक गुमकी ल्यैत देख अपन मन गुम्हरै लागल। मन मे उठल जे आइ

आसीन मासक इजोरिक पक्षक (पखक)

पृ०-६६

चारिम दिनक चारिम चान अगत्य उगत, मुदा ग्रैर चान अरवन चैत मासक इजोरियाक रहै-ए, वा अरवाढ मासक इजोरियाक रहै-ए वा माघक रहै-ए, जइ दिन बीच एकै उतसवक माहौल रहितो, चानक रूप परिवर्तित भऽ जाइ-ए। चैतक चान जहिना वायुमंडल मे ठेंत गरदा बालु सँ अन्हार अन्हरा जाइ-ए तहिना ने अरवाढक मेघक बदलीहन सँ झँपाइये गेल रहै-ए। तहिना कि माघक चान अबंच रहै-ए। ओहो त शीतक लहरि सँ अपन रूप जमुना धारक कालिंदी तीर जेँका रूप पकैड़िये लइ-ए, किने? उगैत-डुबैत जीवानन काका रूप एकाएक बदललनि। बदलैक कारण भेलनि जे जे पुतोहु, बच्चा, विद्यार्थी, शिक्षक बाबा जीवानन काका आ तेकर इनसपेक्टरी कौँ छथि, ओहुर पहिने लोटा मे पानि भरि गिलासक संग पहुँचा गेल छलनि ओहुर चाह नैने सेहो पहुँचलनि। भाए परिवार छी, कि ने, अपन-अपन काजक भार अपना ऊपर मे अछि मुदा दोसरक, परिवारक आन-आनक, इनसपेक्टरी कैँ धरैक जेनाक नाइ केल जाएत तखन श्रम (काजक श्रम) भरैक संभावना सेहो भऽ जाइ-ए।

चाह पीबैत जीवानन काका बजला- बौआ, तोरा सँ लाथ कि, जेकरा पढ़ै छी, ओकर यादाश्त कमजोर छै, मुदा ओकरो त मजगूत बनाइले जा सकै-ए। सैह परियास कौ चाहै छी। मुदा---?'

मुदा कहि जीवानन काका फेर चुप भऽ गेलाह। हुनका मुँह दिशि ताकी त कोनो थाहे ने बुझि पड़ै, जे मन मे उभरै। एकाएक अधडरेर पर किअए रूकि गेला। ऐहेन त भेलनि जे जहिना कोनो औरत मकानक छत पर सँ निच्चा अबै काल आ निच्चे सँ उपर जाइ काल बीचक जे सीढ़िक घुमाव (मोड़) अछि तेठाम जा बिरमि जाइ छथि जे उपर सँ निच्चा अबै

पृ०-६

छेलौं आ कि निच्चा सँ उपर आइ छलौं। फेर डुमए जे जहिना बाट चलैत बटोही बाटक अगिला कटारि देख अटकि जाइ-ए तहिना ते ने भेलनि। मुदा से नइ केलौं। मुरदाक मुँह दिसि सँ नहि खोंचारि पएर दिशि सँ खोचारैत बजलौं – ' काका, चारू बड़ सुनर बनल अछि।'

पुतोहुक प्रशंसा सुनैत जीवानन्द काका बजला- चूरिक त देवी छथि पुतोहु के मुदा मुँहक जे झनकाहि छथि तइ सँ हुनकर सब देविपन...?

देवीपन कहि जीवानन काका फेरि मुंह मोड़ि लेलनि। लेलनि मोड़ैत मुँह देख। ए बेर मुँह दिसि सँ खोरना चलेलौं। ~~बजल~~ 'काका, अहाँ ते तेहेन मोड़ पर आनि अपन विचार कें ~~आनि कें~~ छोड़ि दइ छिऐ जे मन में ओ भोतिया जाइ-ए।'

हमर इशारा जीवानन काका बुझि गेला। बच्चाक बात अपना उपर ~~सर~~ लइत जीवानन काका जहिना समाज में धीया-पुताक ~~गल्ती~~ कैल गल्ती कें माए-बाप अपन उपर लइत (लैत) दोखी माने छथि तेना जीवानन काका नइ केलनि अपन विचार छनि। जइ अनुकूल बुझै छथि जे बच्चाक गल्ती कैं प्राछुचित (पराच्छित) प्राइसचित) हेवा चाही नहि कि ओकर गल्ती के अपना सिर ओढ़ि छोड़ि देवा चाही। तइ बीच पुतोहु पान नेने सेहो पहुँचली। ~~जीवानन काका के मन~~ पान देख जीवानन काका मन एते फुला गेलनि जे ओ हमरा केजरीवाल इस्कूल के अंग्रेजी विद्यार्थी आ अपने शिक्षक बनि गेला। बजला – ' बौआ, ~~अपने~~ अपन यादास्त त सब दिन सँ नीक रहल मुदा ओहो आब डोल- पत्ता कौ-ए।'

जीवानन काकाक विचारक गहीरपन देख बजलौं- 'से कि काका?'

(हिय) हीय खोलि जीवानन काका बजै लगला

पृ०-८

बौआ, सब दिन भूगोलक शिक्षकों रहलौं आ विद्यार्थियो रहलौं। दुनिया कें भूगोलक नजरिये देखैत-सुनैत रहलौं। सह दउत बजलौं—'से तें अहाँ मधुमाछी जेँका जहिना घातिकफूलक रस लेलियै तहिना मोंछो त देबे केलियै किने?'

जीवानन काका मन मधु सुनि मधुआ गेलनि। जइ सँ हृदय पघिलै लगलनि बजला—'बौआ, पाँच साल सँ भूगोल पढ़ाएब छुटि गेल अछि। आब अपनो ने पढ़ै छी। जेहन भूगोल छियै से अपन जानए।'

जेहन भूगोल छियै, से अपन जानए सुनि मन सुरखुराएल। जे भाव जीवानन काका बुझि गेला, तैं बौलती बन्न कैने रहला, मुदा किछु बजलौं नहि। ओ आगू बजलाह—'बौआ, नारायणी नदीक विषय भूगोल मे पढ़ने छी। महादुष्ट नदी अछि। जहिना कमला-कोसी अछि जे गामक-गाम कें उपटबैत रहै-ए तहिना नारायण नदी सेहो अछि। अखनो ओहिना मन मे झक-झक करै-ए। मुदा बुझलौं हेन जे नारायणी नदी पढ़लौं हेन आ जे नारायणी नदी पवित्र पावनिक पनधार छी जे जइ मे नर-नारायण मिलि स्नान करै छथि, से पढ़ि जेना अपन यादाश्ते चौपट बुझि पड़ै-ए। कैका करबै।'

समाप्त

१५।१०।०१८

कथा - एकरबा बानर - पृ०-१

आसिनक दुर्गापूजाक संगे, कोजगरो म' गेल। कातिक तेसर दिन बीतरहल अछि। ओना गामक लोक सब बजैं छथि जे जुग उनैट गेल। से बजैं छथि दू टा चीज देख कैं, पहिल जे तेरहम मास जे कातिक मानल जाइ-ए से अगहन (अग्रहन) म' गेल, माने कातिका स्नान भेने, आ दोसर जे हैदराबादी किसमक ओलक उपज भेने। कहन छथि जे सुआदे खतम भ' गेल। जखन ओल मे कबकबिये नहि तखन ओ ओल केना भेल? सनहक नामक पाद ओकर गुण-धर्म अछिये। तहि संगे देशी ओलक बढ़बारि (देशी) अधा सेर प्रतिवर्ष अछि। जे तीन सालक पद्धति भूमि सँ उखारब ते डेढ़ो सेर हैत कि नइ। तैठाम जँ तीनिये मास मे छ किलोक ओल बढ़ि कैं भ' जाए, ते जुग उनटब भेल कि नहि। पाँच बजे भोरक समय भिनसर नइ भेल छल रविनाथ भाए, 'रोड ध'क' नहि घुमै छथि; बाधे-बोने घुमै छथि, तही रुटिंगक (कार्यक्रमक) हिसाब से पछबरिया बाध बाट दिस घुमै निकलला। सड़कक बगल मे गाछी-बिरछीक क्षेत्र अछि, तैका पछिम बाध अछि। बाधक माने भेल खेती-पथारी कैंचला आ बोनक माने भेल गाछी-बिरछी।

बाधक बीच एकटा कछुआ डेढ़क परती अछि और परतीक बीच एकटा कहिया-कतक साहोरक गाछ अछि। बर-पीपर जेँका ने छतड़ल-चतड़ल अछि आ ने ताड़क गाछ जेँका पुरसिसाहे अछि। सब सिरखारे त बरे-पीपर जेँका अछि मुदा पहाड़ी क्षेत्रक लोक जेँका घुटमुटाह त अछिये। मुदा तैँ कि आन गाछ सब सँ कम रुआबी अछि सेहो बात नहिये अछि। कोरियने जेँका ओकरो (माने साहोरक गाछ कैँ) एते दाबी त छइहे जे हवा कैँ हम अपना उपर नहि खसैं देब, तेहेन रुसाक त छैहे। जुग-जुग सँ जे बेंत सब, सब कुरैत बजैत आबि रहला अछि, से झूठ केना हैत। कहलो ज जाइते अछि जे अपने कैने गायक घी, अपने कैने महीसिक घी होइते अछि। इ त निर्भर करैत अछि घीक खेनिहार चाहे केनिहार कैहेन अछि। जँ गाइक घी पसंद होइत छथि त गाएक घी कैं पसिन करता, नइ त महींसिक। ओही साहोरक गाछ लग पहुँच रविनाथ भाए बाध दिस नजरि उठा कैं देखलैंन त, सतरंगी रंग कहियौ आ कि धानी रंग, मे बाध नेहाएल-सौनाएल बुझि पड़लेन।

पृष्ठ 2

गामक सालक भरिक बेरा पार, ~~(माने कातिक टपब, कातिक माने सँकटक मास)~~ होएत देख रविनाथ भाएक मन खुशी सँ झुमि उठलेन जे साल भरि भोजनक अभाव गाम मे नइँ हैत। किअए ने मन झुमकी पहिर झुमतेन जे गामक मनुष्य एक दिन टपने ~~लोक~~ उनतीस दिनक माघक परवाहि केने बिना आइँका मे जीबै-ए ~~टपा सकै-ए~~। तैठाम साल भरि त बहुते भेल। ओइ हिसाबे कता साल सँ पहिने एकरा ~~बानस~~ बानर एकराइते गाछी दिस भेल ~~बानस असकरे~~ निकलल, ओकरा सबहक माने बानर सबहक निकलेब कि हिसाब छै से त ओहए सब जानत मुदा रविनाथ भाए देखलैन जे एकटा जुआएल. पकठाएल, अनठाएल मोंटगर डेंगर ~~बानर~~ बानर गाछी दिस सँ बाध दिस आबि रहल अछि। असकर बानर (एकैटा) कँ देखिते रविनाथ भाएक मन हनुमान जी पर चलि गेलैन। ओहो बेचारे, असकरे जीवन भरि राक्षस सब कँ खेहारैत ~~खेलाइत~~ खनहैत ~~रहलैथ~~ भरि त्रेता जुग रहि गेला। जहिना नारद बीणा स्वर्ग सँ नर्क आ देवलोक सँ मर्त्तलोक सदिकाल टहैलते रहै छेला तहिना रविनाथ भाएक मन ~~ऐकार~~ एकडायरे ~~पुरुख~~ बानर जँका ऐकार मनुख पर सेहो गेलैन। असकरक जिनगी, असकरे लोक खेत-पथार, बोन-झार सँ कमा कँ लौत आ। कि चुल्हि लग बैसि भानस करत। से नइ करत ते खाएत केना आ नइ खाएत जे कालि कमाएत, केना। नइ कमाएत त ~~कैसे~~ अवैये ले किअए पड़फड़ाएल। ऐबे कौत ते पाछु कँ भैत जखन लोक खा-पी नेने रहैत। तही बीच देखलैन जे ओ एकरवा बानर असकरे खेत सबहक धान निहारैत एकटा खेतक ऊँचगर आड़ि पर बैसि धान खए लगल। कनी कालक पछाति बानरक जेर करीब तीस टा पतिआनी लगा बाधक खेत सब मे बैसल। कर्णपुर मे कहियो बानरक बसेरा नहि भेल छल। आइयो नहि सब दिन सँ कर्णपुर मे गाछी-कलम सघन रहल अछि मुदा बानरक बसेरा नहि भेल छल। कहब जे कर्णपुर गामक मौसम बानरक अनुकूल कि नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि। एके इलाका मे किछु गाम ऐहेन अछि, जे गाम मे बानर सब दिन सँ रहल अछि। मुदा कर्णपुर मे बानरक बसेरा कहियो ने भेल छल।

एकाएक कतै सँ एतै बानर गाम मे आबि गेल। रविनाथ भाएक मन पड़ि गेलैन दू मास पहिलुका बात, जे शिवनाथ भाए कहने छेला जे राति कँ एक ट्रक बानर गामक गाछी मे आनि कऽ छोड़ि देल गेल अछि ओइह बानरक झुण्ड बनि, बाध-बोन मे उपद्रव कऽ-ए

पृष्ठ-३

एक त बानर चरि-चकिया गाड़ीक अन्तिम प्रोडक्ट छी, माने चौपाया जानवरक अंतिम आन-आन गाड़ी सबहक अनुभव कें नीक बनबैत प्रोडक्ट भेल अछि। जइ दुआरें आन-आन चरि-चकिया सँ एते सुरक्षित त अछिये जे जँ कोनो गाड़ि पर बैसि वा खेत मे खाने ना आने जजात खाएत रहत आ अहाँ जँ कलें-बलें हटि जाएब त ओ घुरिये के ने देखत मुदा जँ ओकरा कोनो उपद्रव करबै तखन ओहो तँ राम-लछुमनक महावीर भक्त त्रेते जुग सँ आबि रहल अछि। तइ मे हनुमान बाबा सन बाबा छथिये जिनका बिनु घरेवालीक परिवार छनि।

ओना साहोरे गामक निच्चा मे बौधि रविनाथ भाए हिसाब जोड़ि रहल छला जे जहिना हिसाबे बानरक आगमन गाम मे भेल अछि तइ हिसाबे साल भरि मे खाएत करैत आ उपद्रव सँ नोकसान (दुइर) करैत करत। जखन कि नान्हि-नान्हि टा मूस-बानरक हिसाबे-उपजाक छबम भाग खा जाइ ए, तखन ओ की बनाएत। तहू मे गाय-महींस जेका दूध ने दूधे देत ने खस्सी-बकरी जेका मांसे देत आ बड़द जेका हरे-गाड़ी खींचत आ ने घोड़ा-हाथी जेका सवारियेक काज करत। पाँच टा नीलगाय किसनपुरक बोन मे अछि सैं ते गामक खेती-पथारी रोकि देलक; रोकब भेल जे ततेक उपद्रव करैए जे किसान खेती करब छोड़ि देलैन, तहिना सिजुरपुरा गामक खेती बारह-चौदह टा बोनैया सुगर साफ केने अछि। कोनो गरे रविनाथ भाए कें हिसाब बैसबे ने करैन। मुदा लगले मन मे उठि गेलैन जे अनेरे कोन जानबर सबहक ओझरी मे ओझरा लगलौं। अपने जिनगी तेहेन पहाड़ बनि गेल अछि जे पाड़ करब पारे ने लगि रहल अछि आ गामक बाधक बोनक भार हमरा बुते उठत। ओ त उठत ओकरे बुते ने जेकर भार छियै।

रविनाथ भाए बाबा साहेब भीम रावक अंध भक्त श्रवण कुमार जेका छथि। जहिना भीम सहाएबक जिनगी एकटा खुल्ला दस्तावेज अछि तेहने दस्तावेज बनबै पाछु अपनो लगाएल छथि। ओहुना भीम सहाएबक मन मे के दर्शन, अपने शक्तिक दर्शन, तेहेन अनुकूल जीवन-धारण केने छथि। संविधान सभा मे भीम सहाएब एक-एक जन कें भोटक पतिआनी मे आनि के रखि देलैन। मुदा जीवन त ओइ सँ हजारो कोस दूर अछि, जेकरा पाड़ करब सबहक अपन-अपन दायित्व अछि। ओना रंग-रंगक चश्मा सँ भीम सहाएब कें सेहो देखल जाइ छथि, आ ओइ अनुकूल दर्शक अपन दिशो निर्धारित कइये लइ छथि। मुदा रविनाथ भाए मे सेबा

पृष्ठ-४

नइ छनि। माता-पिताकेँ जहिना भार बना श्रवणकुमार तीर्थ यात्रा कौँ विदा भेला, तहिना रविनाथ भाए सेहो अपना केँ बुझैं छथि।

बाद सँ दिन सँ टहलि (टहल) केँ रविनाथ भाए दरवज्जा पर पएर देखलनि कि पत्नी (सुचिता) बुझि गेली जे ~~जते काल~~ जते काल मे अपने हाथ-पएर (माने रविनाथ भाए) धोता तते काल मे अपनो चाह बनि जाएत। अपने जिम्मा बुझि अपन सीमाक काज मे अचिता जुटि गेली। ओना बाद मे देखल बाभरकेँ मन मे रहबे कैन जे गाम मे नव ~~बीज देखबो अछि~~। उपद्रव बढ़ि गेल अछि।

दरवज्जा पर बैसते रविनाथ भाए केँ बैसिते सुचिता चाह नेने पहुँचली। पाइनिक कोनो रुकावट मन मे उठबे ने केलैन जे पानियोक अनिवार्य (एनवैच) ~~खगता अछि~~। किअए त एते बुझल छनि जे हाथो-पएर धो लइ छथि आ घरि छोड़ पानियो कलो पर पीन लइ छथि। हाथ मे चाह लइत अपन शुभ सन्देश पत्नी केँ रविनाथ भाए सुनबे चाहलैन। शुभ संदेश गाम मे बानरक आगमन मन मे रहबे कैन। मुदा मुँह सँ बकार निकलै सँ पहिने तेकार लागि गेलैन। तेकर ई लगलैन जे बानर कहि पत्नी केँ कहैएनि आ कि हनुमान जीकेँ। किअए त ई मनमौजी बात अछिये जे जे मन फुड़ए से बाजू। ~~ओहि मूर्तिकार जेकाँ~~ रविनाथ भाएक दशा ओहि मूर्तिकार जेकाँ भ' गेलैन जे जे मूर्तिकार मूर्तिक निर्माणक हाथ रखने छथि, ओइ हाथ ने ~~मूर्तिकारक सेहो भेल्ला सेहो बनबे-ए~~ मूर्ति निरमि (नैम) निर्माणकर्ता सेहो बनबे-ए। जीह-जाति (जी जाति) रविनाथ भाए बजला-' आइ नव जीवनक दर्शन भेल ए।'

धुकद होइत सुचिता कुदकुदेली-' नव जीवनक दर्शन भेल,' मर-र ई कि भेल। बैजइ सँ मन मे ने कोनो जिज्ञासा जगलैन आ ने कोनो विचारक आशे फुटलैन। मुदा गपक सिलसिला केँ सिलसिलेबार आगू बढ़बैत सुचिता बजली-' से कि?'

रविनाथ भाए बजला-' पछबारि आगाक बाध-बोन दिस टहलै गेल छलौं। बीच बाध में सारोरक गाछ लगाओल बाड़ मे' बाध दिस ~~हिसाल~~ हियासैं लगलौं त संतरंगी रंग मे रंगल बाध बुझि पड़ल। मनेमन हिया-हिया हियासि रहल छलौं कि...।'

कथा- एकटा बानर - पृ० ५

'कि' कहि रविनाथ भाए चुप भ' गेला। जानि कें चुप भेला कि दब टूटल साइकिल जेकाँ एकाएक रुकैत बेकार भ' गेलैन, से त रविनाथ भाए जनता। मुदा सुचिता कें बुझि पड़लैन जे भीरसक कोनो असाध्य व्याधि मन मे नेने त डूबि गेलैन। अहिना पारखी डॉक्टर हड्डी (देहक हड्डी) सँ सरल मुइल खून वा सड़ल पस (खूने पस बनै-ए) के निकालै ले उपरक खूनक चमड़ा कें तेहे दर तेहे हटबैत हड्डी लग पहुँच ओकरा निकालि स्वस्थ शरीरक निर्माण करै-ए तहिना सुचिता जानै-कहौ-चाहे छेली मुदा पतिक विसमित होएत मन कें उपरक तह हटबैत बजली- 'ऐना जे बीचे....।'

पत्नीक बात सुनि रविनाथ भाए कें अनासुरती मन मे उठलैन जे नीक हैत पहिने बाथक रंग देखा दिअनि आ पछाति भंग देखा देबैन। रंग-भंगक आ कि रंग मे भंग, आ कि भंग मे रंग, से केना होइ-ए आबन नहि, आबन एतबे बजला- 'ऐबेरक बाथक जे रंग चढ़ल अछि, ओ गामो कें रंगि रंग चढ़ा देत।'

रविनाथ भाएक विचार सुचिता नीक जेकाँ नइ बुझली। जइ सँ मन भीतरे-भीतर औनाए लगलैन। औनाएक कारण भेलैन जे पमरिया तेसर जेकाँ सब मे 'हँअ जी' कहब नीक नहि, मुदा। बिनु बुझल बात बजबो केना कहब। से लगले मन मे भेलैन जे ऐठाम कि कियो आन अछि जे कोनो बात बजै मे चोड़ी-चोरबा हएत। बजली- (सुचिता बजली) 'ऐना जे रंगरेज- अंगरेज जेकाँ अच्छा बजै- बनबै छी आ आधा छिपाइ जेकाँ छिपा लइ छी, तइ से काज नइ चलत। जखन अपना कें पुरुख बुझै छी त पुरुखपन बातो रखू।'

पत्नीक बात सुनि रविनाथ भाएक मन मे भेलैन जे आ, ई कि भ गेलैन। ई त ओहने भेलैन जे कियो उपन्यास पढ़निहार पहिलुके पृष्ठ पढ़ला पर एते बिहुसि (बिहाँसि) जाइ उत्तेजित भ आसन छथि जे दोसरे पृष्ठ मे रिजल्ट देखै चाहै छथि, तेहने भ' ने तें पत्नियो भ' गेली। भाए जखन पति-पत्निक बीच जिनगी भरिक एकरारनामा भेल अछि तखन जँ कुदादियो मे निमाहैक रस लेब तखन कुदाफीक रस मुइला पछातियो भेटत। रसमय जिनगी

पृ० ६८

काव्यमयी दुनियाँ मे रमणैत-रमकैत चलै, यैह ने भेल पुरुखपनक जिन्गी। तहूठाम जे मरदुआर बनि अपन दरबाजा कैँ मरदुआर बनाएब त साधू-फकीर कैँ चून-तमाकुल, चाह-पान आ भाँग-चौंट कऽ' होइत। अपन बुढ़िआएल-बुढ़िआएल मन कैँ समेटि (समेट) रविनाथ भाए बजला- 'बाधक सतरंगक रंग कैँ अबैन हटबै छी, ई मेला-ठेला मे ते सतरंगक कि सहस्त्ररंगक सँ रंगल रहै-ए, तइ से अपना दुनू गोरे कैँ कौन मतलब?'

पतिक लहकल बात सुचिता नहि बुझि पेली। बुझबो केना करितथि, जे घाट पर लड़की खेलेनिहार अछि से ने बुझत आ जे से नहि अछि। पतिक पावन धार मे भसैत सुचिता बजली- 'नीके कीने। कौन-मतलब अछि अनका दुनियाँ सँ, रामचन्द्र भगवान दुइये परानी राजगद्दी से बोन आ बोन से राजगद्दी देखलैन आ कि हमहूँ-अहाँ देखलौं हेन।'

पतिक टोकारा मे सुचिता देह झाँपि गेली। बजली- अनेरे कोनकि दुनियाँदारीक लपोड़ी मे पड़ैत रहब, ने हमरा दोसर पति हएत आ ने अहाँ के दोसर पत्नी। तेँ बीच मे ने दुनू गोरे लड़ैत रहब, झगड़ैत रहब, आ संग मिलि धार-धार चलैत रहब।'

अनुकूल वातावरण देख रविनाथ भाए बजला- 'बाधक परती पर ठाढ़ भ' बाध हियासैत रही कि एकटा बानर पर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मुड़ी उठा-उठा देखै लगलौं जे एकेटा अछि कि जोड़ो छै।'

बीचे मे सुचिता बजली- 'जोड़ो हेबे करतै। ओहिना नइ ने असल दिन मे टहटहौआ रौदो रहै-ए आ बरखो होइत रहै-ए, ओइ दुनूक बिआहक लगन छी। ओइ लगन मे दोनो बानर अछूत रहै-ए।'

ओना रविनाथ भाएक मन मे जगलैन जे एकटा लगन मे ने एकोटा बानरो अछूत नइ रहैत, तखन ते मनुख कैँ ले जे सालो भरि कोट-कचहरी से मंदिर धरि रहै-ए, तखन तेँ मनुख मे छूत केना रहै-ए, आबे छूत नइ रहै-ए, ताबे छुटि केना जाइ-ए, ओ त सहजे बात छी। कनी काल चुप रहि रविनाथ भाए बजला- 'बड़ी-काल तक जखन ओकरा दिस तकैत रहलौं, तइ बीच ओ बानर गाछी-दिस सँ निकैल बाधक आड़िये-धुड़िये टपैत एकटा खेतक उँचका मेड़ पर बैसि धान खाए लागल, ताबे तक तकैत-देखैत रहलौं। ओ बानर असकरे

पृ- 6

जैँका रहै।

मुस्की दइत सुचिता बजली- 'अहुँ के ते लोक एकहे बानर कहै-ए।'

पत्नीक मुँह सँ एकार बानर सुनिते रविनाथ भाएक मन हनुमान जी पर टेक गेलैन। ओहो त एकाहे रूप, जिनगी भरि धारण केने रहि गेला। मुदा जहिना सइयों कोस उपरका पानिक धरती पर खसै मे मिनटो नइ लगै-ए तहिना रविनाथ भाएक मन अकास सँ धरती पर उतड़लैन। मन सँ बाधक देखल बानर हटि गेलैन। किअए ते ने आबन असकरे बाध मे छथि, आ ने कतौ आन ठाम। तइ-ठाम जँ पत्नी बजली जे लोक सब एकरवा बानर कहै-ए, त जरूर किछु बात अछि। ओना जँ ओ, माने पत्नी बड़ गिरिथाति देखी त छुपे रहैतथि, नइ जँ मनुख रहैतथि ते तरखने तेकर जबाब दितैथ, से सब किछु ने केलैन, आ हमरा सुनसान मे, माने असकर मे, सोसर सुना रहली अछि। मन कनी-कनी तिरिंग-मिरिंग से दुआए लगलैन। मुदा लगले मन मे उठलैन जे सब धरवालि छव-चाप सब धरवाल सुनिते छथि, तेठाम अपनो किअए ने पत्नीक मुँहक सुनल 'एकरवा बानर' हटा ली। मुदा लगले मे उठलैन जे जे कोनो मुँहे कोनो बात निकलै-ए ओ त ओकरो मुँहक ने भेल। भ' सकै-ए जे जँ अपनो मने बाजल होथि आ हनुमाने जी जकाँ कोनो ऐहन रूप देखने होथि, हनुमानजीक नाम के बदैल बानर कहि देने होथि। किअए त उदाहरणो त ओहुने ने देल जाइ-ए जे करीबक होए। तेठाम बिनु पत्नीक हनुमान जीक, उदाहरण केना दितथि, ते इनके बनरपनह रूप कैँ अनुचित ओते बानर बजली अछि। पति-पत्नीक बीचक रस्सा-कस्सी रहिते रहिता होइ छै। तइ जे अमेरे कतेक समुद्र उपद्रव।

मुस्की मे टुसकी दैत रविनाथ भाए बजला- 'लोक हमरा एकाहा बानर किअए कहत?'

सुचिता कैँ जना कानक सुनल सइयो आवाज कान मे झनझना लगलैन, जइ सँ, पतिक विचार कैँ रस्ते मे रोकैत बजली- ' घुरोक लोक त कहिते अछि। पुरन बाबा अखन मरल रहैथ, इनकर जे क्रिया-कर्म ओइ दिन से मने हइत छिने।'

पुरनबाबाक मृत्युक नामो सुनिते रविनाथ भाए बीचे मे

पृ०-८

टपैक उठला-' ~~अब~~ श्राद्ध-कर्म मे किओ नइ पुछलैन. तेकए अपने अचला कहुँ कुकुरो, काजक भारो ~~ब~~ माने जस-अजस, त नइ ने पड़ल।'

~~कि~~ पतिक विचार ~~मे~~ खोइनिया करैत सुचिता बजली- अपन दोख अपने मुँह से कबूल करैए जे अहीं करबै। ~~मुँहे खोंइ कबूल करबे~~, मुदा अहीं कहू जे जखन पचास घरक दियादी अछि, जइ मे सब कैं सब मरन-हरन मे ~~सबकेँ~~ केश करबै छथि, अहाँ नइ करबै छियै जेकर बदला ~~मे~~ ओहो सब एकरबा बानर कहि दियादियो छोड़ाए लेलैन। ~~बानर बानर कहै छथि आ दियादी सेहो छोड़ा लेलैन।~~

ओना दियादी सुनि रविनाथ भाए मुस मने ~~मुस्कुराइत~~ विचारै लगला ~~बजला~~ जे जखन ~~छैके~~ दियादी छोड़लौं ~~छोड़ोलो~~ जाइ-ए तखन लगैलो त जाइये सकै-ए। तइ बीच ऐतबे ने अछि जे लोक वंशागत माने छथि। मुदा मनुखक वंशक त सब ओना से बात नहि अछि, ~~सब~~ दियादिक अधिकांशतः ए युवक बेसी अपन दियादीक नियम मे सुधार केलैन जे वृद्धक मृत्यु स्वाभाविक अछि, जखन कि जवान-जहानक दुखद, तैँ ~~कु~~ स्वभाविक मृत्यु मे केश कटाएब जरूरी नहि अछि, इमहूँ तसैह ने केलौं, तखन जैँ ओ सब माने सब दियाद, एकरबा बानर कहै छथि ते अपन मुँह दुइर कै छथि। ~~मुस्कुराइत~~ कठहँस हँसी ~~कठहँसी हँसैत~~ रविनाथ भाए बजला-' जाए दियौ ओ सब घरक दियाद-वाद भेला, गामक समाजक लोक नइ ने कहै-छथि।

एक त ओहुना ~~पत्नी~~ पति-पत्नीक बीच बजै-भुकै मे कोनो बाधा-रुकावट नइये अछि, मुदतेढाम जैँ वेदान्ती बात मे पत्नी चढ़न्त होइथु तखन जेहेन बोल मुँह सँ निकलै-ए, ओही स्वर मे ~~बोली मे~~ सुचिता बजली-' गामक लोक कहै छियै, दस गामक लोक कहै-ए जे सौंसे गाम मे सब अपन-अपन डेढ़िया पर पसीद ~~पसिद्ध~~ आ सैनी श्राद्ध कौं संगे रोपलैक आ अहाँ। कि केलियै।'

रविनाथो भाए कैं जेना मुँह मे बड़ी जकैत रहैन तहिना ~~कि~~ चोट्है पत्नी कैँ कहला-' अइ दिन करने रही जे पहिने ई फड़िछोट ने भइ ~~हैते तखन ने~~, ~~जखन पहिनो रहैन परम्परा चलल हो~~ इआए जे पहिनो रहैन परम्परा, हद कि आइये शुरु भेल।' जखन से नहि भेल, तखन ....।

ओना सुचिता पतिक बिचार सँ कने सहमली। मुदा गामक लोकक बोल ततेक बेसी कान मे पड़ि गेल छेलैन जे काने भड़भड़ाइ' गेल छलैन। मुदा तइयो ओरा करैत बजली- समाजो त समाज छी कि ने, सबकेँ मिलि केँ ~~किल सब मि~~

कथा - एकरबा बानर- पृष्ठ-५

कि ने ?

अहिना किछु कहैत पर सँ कारि किछो बजैत-ए तहिना रविनाथ भाए बजलाह ऐ मे दू राय कहाँ अछि। मुदा गाम-समाजक सब एकठाम बैसि वा एकविचारक रास्ता बना चलतह तखनै ने ?

गामक समाज पर नजैर खिरौत सुचिता बाजलि - गामक लोक कैँ एते फुर्सत छै जे सब एकठाम बैसि विचार करतह। कियो आठ बजे तक सुतनिहार अछि त कियो तीन बजे भोरे सँ काज मे लागि जाइ छथि, तखन एकठाम कैना बैसि सकैत छैक।

पत्नीक विचार मे सह देत सहीट जगह पर ठाढ़ होएत रविनाथ भाए बजला - 'से त हमहूँ देखै छी जे जे बाप (पिता) भरि दिन गाड़ी-सवारीक भीड़ मे रोड बपहारि (बपहारि) जैह बेटा लेल कैल छथि ओइ बेटा कैँ ने संग-संग खुआ-पीआ पबै छथि आ ने दिन-दिनक क्रिया-कलाप सँ जुड़ि पबै छथि।'

रविनाथ भाएक प्रश्नक उत्तर अपना मे नहि पेब सुचिता चुरमुर बिलाइक नाच जैँका नचैत बजली - 'एहिना पुरुख सब, गप्पो आ काजो मे जिद्द रोपि बलउमकी सब दिन सँ करैत ऐला हेन आ आबनो करै छथि।'

हुराएत-भोथिआएत पत्नी कैँ देख रविनाथ भाए बजला - 'पहिने सुनियौ, तखन बुझियौ, पछाति विचारियौ, तखन जँ जरूरी बुझि पड़ै त बजियौ। से नइ काव आ केकरो मुँहे सुनब जे कौआ कान नेने पड़ाएल (उड़ल) जाइ-ए, आ अपन कान देखै नइ देखि कौआ पाछु दौड़ब नीक हएत।'

कोनो समस्याक समाधान जखन 'है' नइ लग पहुँच जाइ आ सोझमतिया कैँ निर्णय काव असान भ' जाइ-ए, असानक माने बिनु सोचल-विचारल, तहिना सुचिता कैँ सेहो भेटलैन। बजली - अच्छा अहीं कहू जे जखन सोंसे गौँआ अपन डेढ़िया पर पसीद-सैनी रोपलैन आ अहाँ नइ रोपलौं, तखन अहीं कहू जे समाज अहाँ कैँ छोड़लक आकि अहीं समाज सँ फुट भेलियै।'

ओना पत्नीक प्रश्न बेतुकार उत्तर रविनाथ भाएक मन मे उठलैन, उठैत ई जे, जँ पसीद-सैनी रोपने रोग-वियाधि व्यक्तिक संग परिवारो आ परिवारक संग समाजोक मेरा देत। तखन किछु भाए सरकारी डाक्टर अस्पतालक खर्चा औझी योजना से बौने लागा देत ने जाइ-ए। मुदा पत्नी कैँ अपन अधीनस्थ बुझि विचार

पृ०-२०

रविनाथ बजला – जखन आइक युग, माने एकैसमी शताब्दी मे अपना सब छी, तखन आइक मनुख बनि संसार मे जीबैक अछि, तइ मे जँ रानी सरंगाक। खिस्सा सुनै मे दिन राति बीता देब, तखन कैना दुनियाँ कैँ देख पाएब, जइ मे रहैक अछि।'

रविनाथ भाएक विचार सुनि सुचिता सहमली। जहिना सब पत्नी पति लग हारबा पद्धतियो जीतसे कुँ छथि तहिना सुचिता कैँ सेहो भेलैन। मुस्की दैत बजली- 'सर्वदेशिक पुरुख लबर-धौंर ~~सेहो छथि~~। रहल अछि।'

औना रविनाथ भाएक मन मे भीमकायाक विचार जागि गेलैन जे ऐतिहास नइ जानत ओ इतिहास रचत कैना। मुदा फेर मन उनैट पत्नीक साहचर्य पर पहुँच गेलैन। साहचर्य पर पहुँचते मन धड़ती पर औंघरा गेलैन। बजला– केतबो लबड़धौंर पुरुख हैत तइओ पुरुखे रहत कि ने?'

रविनाथ भाएक बात सुनि सुचिता गरमेली नहि मनै-मन मुस्की भरि लेलैन।

समाप्त
७/१२/०१८

कथा- विचारभेद - पृ०-1

वाजिबपुर मिथिलाक प्रमुख गाम सब दिन सँ रहल आ
आबनो अछिये। ओना मिथिलाक बीच आइये नहि सब दिन सँ माटि-
पाइनिक विलहा बाँट होइत आबि रहल अछि आ आबनो होइते
अछि, कहियो कोसीक पानि धकिया कमलाक पानि बढ़ैत छइ
ए तँ कहियो कमला धकिया पाइनिक संग- संग माटियो
कैँ काटि कैँ बाँटि दइ-ए आ नाम राखि दइ-ए पनिकुहा-कोसिकन्हा
खैर जेत जे अछि सँ अपन- अपन भोक्ता भुगता। मुदा आइ
वाजिबपुर गाम मे दुर्गा पुजा आराधनाक बैसार छी तइ मे
सामिल हेबा ले गौँआ सब आमंत्रित छथि। जे तीन बजे बेरुका समयक प्रतीक्षा
करइये रहल छथि।

ओना वाजिबपुर गामक अपन इतिहासो छै, जहि सँ भूतक संग वर्तमानो त
छइहे। कोसी- कमलाक बीच बसल वाजिबपुर ऊँचरस
जमीनक गाम छी। तँ बाढ़ि सँ प्रभावित आइ धरि नहि भेल
अछि, ओना गौरे बर्खे जे पहाड़ी इलाका (नेपाल सँ उत्तर
जइ पहाड़- समूह बीचक रकबा हजारो किलोमीटरक
बीच अछि) मे हिमक हिमाएब बेसी बरखा भेल आ कि हिमगिरी
पड़ल, तइ सँ सेहो बदबारि सेहो भइये जाइ-ए।
जइ सँ मिथिलांचलक बीच बहैत धार सब उधलबो करैत अछि जइ
सँ पाइनिक उपद्रव सेहो बढ़िते अछि जइ सँ गामक- गाम केर चरो-
चरारी आ खेतो- पथारक घरक संग माटियो नष्ट होइते अछि। से सब
समस्या वाजिबपुर कैँ आबन धरि नहि भोगए पड़ल अछि।
तँ कहब जे सरकारी बैंक सँ ऋण मुक्त
वाजिबपुर भ' गेल सेहो बात नहिये अछि। जहिना-
दाही - मासिक ऋण भेटै-ए तहिना वाजिबपुर कैँ साले-
साल त नहि मुदा अन्दाज मे रखू जे गंडा मे एक
बेर, सौदियाहो (ठीका) ऋण भेटिते अछि। आठ सँ बर्खक गाम
मिथिलाक वाजिबपुर अछि जेकर कतेक पुर्वजक आठ सय मे दु सय
सौदी त बजरूर देखबो केलैन आ भोगबो त करबे केलैन, तेकर औरियान माने सौदीक
बीच जीवन- धारण केना बचाएल रहत, सेहो नहि केलैन
सेहो बात त नहिये अछि मुदा ओ Ajanta Officer
त अविकसित साधनक बीचक जिनगीक

पृष्ठ-2

बीतल बात भेल अछि। जे डी०ए०भीए आ कि खिचड़ी खौंके इस्कूलेक नवतुरिया बच्चा केना बुझत। मुदा जँ ओकरा अपन समाजोक अपन सामाजिक अपना ऐना आ, आ मातो-पिता अपन पारिवारिक ऐना (अएना) आगू मे देखए देए त किअए ने बुझत। मुदा

खेला-पीला पद्धति माने दिनक दू बजे, गोवरधन आए ओछाइन पर नहि जा माने आराम करैले, खुशीलाल ऐठाम बिहाड़ होइत पत्नी केँ कहला- 'गाम मे समाजक बैसार दुर्गापूजाक लेल होइत, से कनी बुझने अबै छी।'

एक त ओहुना जगत्-जननी दुर्गा मान्य छथिहे तखन माइक हृदय (मातृत्व माने पत्नीए) त सहजे मनमस्त त छथिये अछि, तैँ पतिक बात सँ पत्नी (लड़ुदाइक) मने-मन मुंगबा मनमे फुटै लगली। तैं बजली किछु ने, आँखिक इशारा सँ एतबे पति (गोवरधन) केँ कहली जे हमरो हिस्सा नेने ऐब।

जहिना कोनो बच्चा केँ पहिल दिन कोनो नव विद्यालयक प्रवेश दिन खुशनुमा होइ-ए तहिना गाम मे सामाजिक रूप मे जँ कोनो सामुहिक उत्सव होइ-ए त गामो खुशनुमा भइये जाइ-ए।

खुशीलाल आ गोवरधनक घर अगले-बगल, कहाँ भरिक दूरी कहब जे एतबो दूर जाइ-लै पति केँ माने मर्द केँ जाइलै पत्नी सँ परमीशन काज पड़ै-ए। से बात ठीके जे जँ एहनो-एहनो छोट-छीन काज लेल पति-पत्नी सँ आ कि पत्नियो पति सँ जेबा लै (सामिल हेबा लै) आगू मे आवेदन दाखिल करत ऐहेन नीक बात ऐछ माने मे नहि भेल जे ऐहेन व्यक्ति जीवन मे केना फुर्सिओल (फुर्सल) जाएत। मुदा से बात नहि अछि बात अछि बाजिदपुर मे पूर्ण सामाजिक रूपक बीच संबंध स्थापित धार्मिक परिवेश मे कब। नीक बात, मुदा धार्मिक रूप कि आ केहेन से आबन नहि, आबन एतबे जे समाज मे धार्मिक अनुष्ठानक बैसार छी।

ओछाइन पर पड़ल गोवरधन केँ देखिते खुशीलाल बैसैत बाजल- 'भैया, आइ दुर्गापूजाक बैसार छी। से से चलब कि ने।'

सोझ मतिया गोवरधन आए, चौकी पर लग मे बैसैत

पृ०-२

बाजला- 'बौआ, अपना ~~सब एक बेटियें ने~~ दुनू गोरे ते एक जतिया दियादो आ पड़ोसियो भोलियो, ते तोरे से ने पुछबह।'

गोवरधनआएक बात सुनि खुशीलालक मन मे भीतर जमल खुशी मे ~~खुशीक~~ कनी बढ़ोत्तरी भेल। ओना आबन धरिक जे संबंध खुशीलाल परिवारक आ गोवर्धन आएक परिवारक रहल ओइ अनुकूल ऐहन खुशीक कोनो मेहत ~~प्रश्न~~ नहि अछि, मुदा खुशीक कनेक इ रूप खुशीलालक मन मे जगल जे गामक एक-एक परिवार जन मे जँ सामाजिक चेतनशीलताक ~~चेतनताक~~ रूप जगै-ए त ओ खुशीक बात भेबे केल।

ओना खुशीलाल इहो मने-मन बुझि रहल अछि जे गोवर्धन भाए सोझमतिया लोक छथि, तँए ई नहि जानि रहला अछि जे एक त अविकासित ~~गोवर्धन भाए अविकासित~~ ~~समाजक~~ तैपर उजारो वरखक गुलामी सँ लादल समाजक उपज अपना सबहुँ छी तँए केहेन फल-फूल फलाइ-फड़ै जोग अछि। ~~छथि, तँ केहेन-फुल-फल~~ [illegible] ~~सेहो बल खुशीलाल कैँ छलेहे।~~ खुशी सँ खुशी आएल खुशीलाल बाजल- 'भैया, आब तूँ सब चौथापन मे आएल जाइ छह तखनो जँ धरम-करम नइ क' लेबह आ बीचे मे मरि-हरि जेबह, तखन इ ते जिनगी अकारथ मे चलि जेतह कि ने?'

विचारक पड़कीकेँ बिचड़ैत सिसकैत सिहकी लगिते गोवरधन भाए बजला- 'अखैन ते दुपहरे अछि, बैसार करखैन हएत (हेतै)।'

ओना खुशीलालक मन मे विचार उमकैत जे एक घंटा मात्र बैसार शुरू होइ मे शेष रहल अछि, तँए विचार आबने सँ जँ विचारक दौड़ गोवर्धन भाएक मनमे शुरू क' दियनि त ओ आरो बेसी अनुकूल हएत ~~भेल~~। तँए किअए ने इहो बात जना दियनि जे भैया अपने सबहक कने गाम मे सम्पन्नता ~~अछि~~ आनियो गेल अछि आ जे विपण्णता अछि ओकरा मेटा सेहो सकै छी, तँए भारी-भारी माने नमहर-सँ नमहर, दुर्गुण मुकाबला करैक शकित सेहो आबि गेल अछि। मुदा आबन गोवर्धन भाए ~~सँ~~ सन लोक ~~बैँ~~ लेल बेसी तइये आएत। ~~फाजिल भेल।~~

घड़ी देखैत खुशीलाल बाजल- 'भैया, बैसार शुरू होइ मे एके घंटा ~~बाकी~~ बाकी अछि। तैयारी होइ मे समय ~~[illegible]~~ लगबे करतह तँए आब तैयारे करू। ~~विचारक~~ गोवरधनआएक विचारक बेगमे जेना बोहैत बेग (धारा) मे माधु सँ जेहेन धकिआएल जाइ-ए तेहेन धार ~~पकड़ बेगक आनि धक्का धकिआल चोकिआएल~~

पृष्ठ-४

~~अहिना धारा बेगवत होएब~~ तहिना गोवरधनक आएक मन मे उत्कुंठित ~~...~~
रूप पकैड़ से हो बेगवत होइते अछि
भेलैन। बजला -' बौआ खुशी, आ समाजेक बैसार छी, ~~ओना~~ अहिंना
सब दिन समाजक बीच रहलौं तेहने बर्गे (वर्ग) मे ने आएब ~~तहिना ने आएब~~, तइलै
तैयार होइ मे किछए समय लागत। -चलइ हम तैयारे
छिअ।'

निरन्तर भेल खुशीलाल बजला -' भैया, बीच मे चाइ
पीब लऽ छी। ~~...~~ बैसारे छी, तइ मे समाजेक ~~सामाजिक~~ बैसार छी,
अगिला साल सँ सेहो तीन सालक अतिचारे पड़ए ~~अतिचार पड़त~~, जे कहिऔ कथे-कुटमैतीक
गप ठाढ़ भेल तखन बैसारक कौनो ठेकान अछि। जे कते काल-चलत।'
एक त ओहुना गोवरधन आएब सौंसे-भीर-चाइ पीबै छथि ~~साँझे-भिनसर-चाइ पीब~~
मुदा समाजक आग्रहो छै त अपन महत अछि। दुनू गोरेक
बीच गप-सप चलिते छलैन कि बीचे मे खुशीलाल
क पत्नी, चाइ नेने आएल आगू मे रखि देलकैन।
एक त सोलहो आना (पूर्णसमाजक) पहिल उत्सवक बैसार
मे प्रवेश अछि खुशी गोवरधन भाए, मन मे ह्लैन तइ पर सँ ~~अपन~~ खुशीलालक आग्रह
(पत्नीक आनल चाह) देखि बजला -' बौआ, हम त इनारक
बेंग भेलियइ, अपन नून-रोटी से कहियो उघड़ा भेल।'
ओना ~~बाजिब~~ पुरक किसानक जिनगी आन गामक अड़ोस-पड़ोस
गामक ~~जिनगी~~ किसानक जिनगी सँ सबतरहे अगुआएल अछि।
जे खुशीलालो देख-बुझि रहल अछि, मुदा समाजक बीच अपना
कें ~~निर्बल~~ ~~...~~ निर्बल (निरबल)- निरमल निर्मल बना सम्मिलित नइ हएब, ताबीच
एकरूपता केना औत। ~~...~~ अपना सँ उपरो समाज
अछि आ निच्चो त अछिये। ~~...~~ जे ~~निच्चा नइ अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत~~ तँ केकरा देखब आ केकरा अनदेखी करब।
जिनगीक येह दुनू दिशा दुनियाँ कें विभाजित केने
अछि। बिभाजित नइ, ओहुना विभाजित केने अछि जे दु तरहक मनुख बना, दु ~~...~~ दुनियाँ बना देने अछि।
मुदा जे अछि ओ दुनिया मे अछि दुनियाबला
अपन बुझइ। गोवर्धन भाएक बिचार कें ~~चुड़ी~~ चुट्टि अबैत चुट्टि अबैत
(चुट्टि अबैक माने भेल बिढ़बा ~~चुट्टी~~ कटैत) खुशीलाल बाजल-' भाए
सहाएब, जखनै अहाँ अपना कें इनारक बेंग कहै
छी, तखनै बाकी कि रहैब छी।'
~~बीचे मे~~ ~~भेकर~~ अपन उपर आछेप देख गोवर्धन
भाए बीचे मे बजला -' से कि बौआ ?'
बात-चीतक क्रम मे दु तरहे बिचारक धाराक बीच बिचार
ठाढ़ ए, एक नइ बुझने, दोसर बिचार कें रोकक खियाल ~~...~~ काटि

कथा – विचार भेद – पृ० – कृ – विचारान्तर । खुशीलाल छोड़सँबेत

गोवर्धन भाएक विचार कें स्पष्ट करैत बजला–
भाए सहाएब, पतालक बेंगक माने भेल (गहराइ सँ) शरीर
मे आ क' दुनियाँ देखब। मुदा....'

अपन खुजैत मकक कें देखिते गोवर्धन भाए बजला,–'आँआ
हमरा बातक कोनो दुख नइ करियह। माँगी-मेहरि (मेहर)
मुँहे सुनि कें सीखिने छी, तें बजा गेल।'

चुस्की लइत खुशीलाल बाजल–' भाए सहाएब, यैह
माँगी सब ते अपन असमिया (माने कमरूपिया) रूप
बना मरद सब कें भेंड़ा-भेंड़ी बना बाध-बोन मे
अनेर चरै लै छोड़ि दइ-ए।'

गोवर्धन भाए रस कें घोंटैत बजला– से सैरपो (सरिपँउ)
हौ खुशीलाल, ?'

गोवर्धन भाएक रसिआएल मन कें असिआइ सँ समटैत खुशीलाल
बाजल–' भाए सहाएब, एक बेर जे दुनू गोरे निकलब आ
कियो देखलेत तें कहत जे ई दुनू गोरे कुदिबिचड़ी (आधीबिचड़ी)
क' नेने हैत, तें कनी-आगू पाछू भ' कें बढ़ू।'

सैह भेल, गोवर्धन भाए, बैसार स्थल दिस आगू बढ़ला।
गोवर्धन भाए कें लग सँ हटिते खुशीलालक मन आजुक
समाज सँ ल' क' आदिक समाज (अपन गामक) घाड़ि बौड़
गेल। दुर्गापूजा गाम-गाम होइते अछि, वाजिदपुर
मे सेहो हैत। गाम मे धार्मिक नींव पर पूजा हएत, नीक
बात। अखन वाजिदपुर मे अनेको धर्म स्थल अछिये।
कतौ धुजा फहरा, कतौ मूर्तिक रूप मे। कतौ साधु-बिरोधि मे
फाटल-पुरान कपड़ा बान्हि, त कुंग बिनु धुजेक,
कोनो-कोनो ओहनो स्थानो अछिये, जे ठाम लोक (समाजक)
एक ठाम बैसि रामोलीला आ कृष्णो लीला (रास) देखते
आबि रहल अछि। धरमक पोथी सँ सेहो सब घर मे
रहितो सब रंग अछि।
एके नहि अनेको रंगक (साम्प्रदायिक रंग चढ़ल) सेहो अछिये।
कोनो घर गीता-भागवत सँ सजल अछि, त कोनो घर
कबीर-मंसूर आ बीजक सँ सजल अछि। तहिना अनेको
रंगक विचार कियो बुद्धदेवक हृदय सँ जुड़ल तँ कियो
जैन महावीर सँ जुड़ल। त कियो मार्क्स-लेनिन
सँ जुड़ल त कियो हिटलर-मुसोलिनी सँ जुड़ल सेहो
अछिये। आइ सँ बरखे पूर्ब आहियो

Ajanta Officer

पृ८-६

सँ गामक वास शुरू भेल, तइ सँ पहिने सँ ~~कहियो~~ अनेको रंगक धर्मो आ धार्मिक सम्प्रदायो चलित आबि रहल अछि। जहिना ~~सिद्ध-सम्प्रदाय~~ सिद्ध-सम्प्रदायक सिद्धक भ्रमण सँ प्रभाव पड़ल, तहिना नाथ सम्प्रदायक प्रभाव नइ पड़ल सेहो बात नहियेँ अछि। तइ मे जखन बाजितपुर कैं बसब सइये-डेढ़ सय वर्ख माने चारिये पीढ़ी बीतल छल कि एक संग ~~कबीर~~ कबीर तुलसी, सूरदास इत्यादि-इत्यादि अनेको महामान्य अपन प्रभाव गाम-गाम सेहो छोड़ैत केलनि। जेकर असरि (असैर) बाजितपुर मे नइ भेल, सेहो केना नइ कहल जाएत। मुदा सब कथुक बावजूदो आपनो ~~जीवंतता~~ (एक सूत्रवत्) जीवंतता समाजक नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। आगि लगला पर (गाम मे कोनो घर मे) जाति-धर्म सब एकबद्ध भ' जाइ-ए, तैँ कि विआह-दानक ~~मे~~ गोत्र-सूत्र बउबद्ध नइ भै-ए सेहो केना नइ कहल जाएत। आब कहब जे रस्सा-कस्सी आ डोरा-डोरी ~~छोड़ू~~ ए केना एकबद्ध हएत। समाजकैँ ने अपन शक्तिक ~~के~~ आभास भ' रहल छनि आ ने अपन जिनगी समतल बनबैक दिशा। समाज माने मनुष्य ओहन शक्तिवान अछि जे अपना कैँ उद्धारो क' सकै-ए आ अनुघातो त करिते अछि। ~~आचारो बत बनिये सकैत-ए~~।

आन गाम जेकाँ बाजितपुर मे ~~नहि~~ जे सामाजिक बैसारक रूप बदलल-बदलल सन छल। आन गाम मे बैसारे समय मे माने सामाजिक बैसारक समय, मे कियो टेका खोलैत सुलबाहिक बहन्ना बनौ नइ उपस्थित हेता त कियो मडीस कैँ पाल खुआबै विदा होइ छथि। एते सचेत सतरकी बाजितपुर वला सब मे छलनिहेँ+जे समाजकैँ सिर प चढ़बैत सामाजिक संकल्पित रूप के महत्त दइते अछि।

ओना आइ सँ चारि साल पूर्व गामक मे कियो दुर्गापूजाक चर्चे गपे-सपे मे उठौलनि जे गाम मे पूजा हुअए। ~~मास~~ जइ गाम मे मास-मास दिन रामलीलाक भार गौँआ उठा सालेँ-साल देखैत छथि, जइ गाम मे दर्जनो अष्टयाम कीर्तन ~~आ~~ चौबीस घंटा (दिन-रातिक) होइ-ए जइ गाम मे एक पनरैहिया माने एक पक्ष भागवत कथा ~~भगवत पाठ~~ होइ-ए

पृष्ठ 6

तइ गाम मे दुर्गापूजा कोन आरंभ भेल। ओहुना त दसमी मे मानै शारदीय नवरात्रा मे घरे-घर पुजा पाठ लोक करिते छथि। भेल त एतबे ने जे ओ सम्मिलित रूप मान सामूहिक रूप मे हुअए।

सम्पन्न गाम बाजितपुर ए दुआरे बुझल जाएत अछि, जे चौबगली गाम सँ सब तरहेँ, जहिना किसानक जिनगी मे तहिना बौद्धिक जिनगी मे सेहो अगुआएल अछिये। जे बात बाजितपुर बला नीक जकाँ बुझै छथि। भेल त नाहि ए। हिसाबक गामक अगुआएल-पछुआएलक हिसाब अछि जे कते जमीन केहेन उपजा दइबला अछि आ ओकर पुरखा अछि। तहिना गाम मे पढ़ल-लिखल मानै शिक्षित हिसाब सँ, कते कोन गाममे अछि। छतीसो वर्ण सँ भेल जातिक वास भूमि छी बाजितपुर। कहब जे भावना धरि लोक छतीसे वर्णन चर्चे करै छथि तेहम तइ सँ भेल जाति केना फड़ल। जइ विचार मे छतीसे वर्ण फड़ल ओ बहिला भ' गेल, किअए त' केना फड़ैए से जे 'सवा लाखे...पिढि कैं विभाजन रेखा दितथि त दोसर रंग होइत। खैर जे अछि।

बाजितपुर मे हिन्दुओ छथि, मुसलमानो छथि, तइ संग एहनो त छथिये जे दुनू दिस छथि। आठ सय बरखक नमहर जिनगी मे गाम अपनो चेहरा देख रहल अछि आ आनो-आन गामक सेहो देखैत रहल अछि। अनेक जाति, अनेक धर्म, अनेक विचार, अनेक रास्ता रहितो बिचारपुर मे जाति-धर्मक कहियो तना-तनी नइ भेल। नइ होइक मुल कारण भेल अछि समाजक बीच बेवहारीक जिनगीक संबंध।

आइ धरि जते लोक, नाच-तमाशा होउ, एकठाम कोनो काजे एकत्रित भ' बैसला, तते आइ धरिक सामाजिक बैसार मे नइ भेल छल। तैँ कहब जे बैसार भेबे ने केल सेहो बात नहिये अछि। कहियो एगला बौद्धिक पानिक आशा सँ धारक मोँह बन्हैत बैसार होइ-छल, त कहियो धरक आपसी झगड़ाक। ओना टुकड़ा-टुकड़ी अनेको देवस्थलक पुजो-पा बैसार सेहो होइते छल। आबि रहल अछि।

तीन-चारि साल सँ दुर्गापूजाक गप-सपक चलि अबैत विचार समाजक परिवेश कैं एक मुहरी बनाउल बुझल छल, तैँ बैसार मे सहमत बनै मे देरी नहियेँ लगत, ई आशा सब समाजदार लोकक मन मे छलनिहेँ।

पृ०-७

एकसंयोग अछि जे सब टोलक लोक माने सब जाइतिक लोक
एकठाम बैसि समाज मे सामूहिक सामाजिक उत्सवक विचार करबा।
वाता-वरण मे गंभीरता छलैक। गंभीरताक कारण भेल जे सबकेँ
बैसारक विचार बुझल छलैन। जइ सँ सब किछु मे किछु विचार कइये लेल छल
जे सँ नइ रहैत त अनेरे ने कियो पुछितथि जे कियो पुछैत, कि भेलै, फल्लाँठाम। त कियो पुछैत रहितथि कि भेलए भेल
कनी होइरा के कहियौ। से सब मानल धरि नइ छल। मुदा लोक पानि
जेकाँ थोड़े अछि जे पोखरि वा इनार मे सेच-मेच छबकल रहैत। मनुख
त मनुख छी औ तें धारक धारा जेकाँ चलैबला छी। ओकर मनुक्खपन थोड़े बदलैबला अछि।
एक गोटे बजला - 'भाए, एबेर अल्लु खेती मे पौरुका
से बेसी खरचा भेल।'

अल्लु खेतीक नाओं सुनिते दोसर गोटे बाजल - 'छोड़
अल्लु-तल्लुक खेती, पौरुका सौंसे चौमास अल्लु रोपलौं
तेहेन पल्ला मारलक जे जे खाधा भेल से गेबे केलौं
जे सालभरि सँ पोसि कै जइ खेत कैं राखने छलौं ओ सेनो गेल आ उपजो त गेबे केलौं।'

तेसर बाजल - 'हौ जखैन कुऔं छइक जे हम सब जुऐंक (मौसमक)
पाशा पर बैसल छी, तखन हार कि जीत हेबे करत। तइ
लै कनबे करइ त के सुनतइ। सब जनिते छथि आ कहैत
करिते छथि जे - 'Indian Agriculture is a gamble of the
monsoon.' बैसारक शुरुहक प्रश्न यैह छल जे दुर्गापूजा गाम मे
हुअए नइ जे विचार करु।

'कियो थोपड़ी बजा त कियो हाथ उठा त कियो मुँहे सँ
हूँहकारी भरि बजला जे हुअए जरूर हुअए।
गामक मध्य इस्कूलक प्रांगण मे पूजा स्थल सेहो निर्धारित भेल।
आठे दिन कलशस्थापनकु दिन बाकी छल।
सात दिन आसिनक अन्हार बीति चुकल छल।
तैँ कान्हिये माटि लेबाक दिन तय भेल। दिन नेरागनक
विचार (माटि लइक) हटि गेल किअए त आठ दिनक बीच
दुर्गापूजा सन पर्व कैं स्थापित करब अछि। कोसी धारक
इमरजेंसी पुल जेकाँ हलाले हाथ लागि गेल।

एकमुहरी उत्साहक माहौल मे बैसार भेल। बैसारक उसार भेला पछाति एक टोलक लोक दोसर
टोलक लोकक बीच टुकड़ा-टुकड़ी बनि-बनि अपन-अपन
विचार उगालै लगला। खैर जे भेल, मुदा गाम एकठाम निश्चय

कथा - विचार भेद - विचारान्तर - पृ०-८

आजुक राति, माने दुर्गापूजा भैसारक राति, सन सुन्दर राति कहियो वाजिदपुरक नहि भेल छल। बेंट धुद्दा हँसुआ-खुरपी जँका कोनो कोनोघरक पछुआर मे फेकल रहै-ए त कोनो कोनचरक अगवास मे तहिना ने अपनो सबहक गाम अछि। जाति-जातिक बीच झगड़ा, झगड़ा किअए से अबन नहि, धर्म-धर्मक बीच झगड़ा, ई टोल उ टोलक झगड़ा, ई सम्प्रदाय उ सम्प्रदायक बीच झगड़ा, तहूँ संग पड़ोसिया बीच परोसपतक झगड़ा, त परिवारोमे पारिवारिक झगड़ा, त दुनू परानी मे स्त्री-पुरुषक झगड़ा, बेटा-बेटी संग बाप-माए, बेटा-बेटीक झगड़ा, एकरे ने कहियौ कि खुरपी कहियौ, चाहे कि बेंट धुद्दा हँसुआ-खुरपी कहियौ, बराबरिये ने भेल। मुद्दा सँ नहि वाजिद पुरक आजुक राति रासिआएल राति जँका भेल, स्त्री-पुरुष बीचक झगड़ा, भरि राति दुर्गापूजा क विचार मे मनरंजन करैत रहल तहिना सबहू परिवार मे, जेकर माने भेल जे जइ परिवार मे पत्नी-पत्नीक बीच सौहार्दपूर्ण जीवन छनि, ओ परिवार सँ आगू बढ़ि टोल-पड़ोसक बीचक मतभेद कें हटबैत गप-सप मे राति बितौलनि।

जेहू गामक समाज स्कजुत्री म' एक धार्मिक क्रियाक सूत्र-पात केलैन, ई एक नव परिवेशक सूत्रपात भेल। जखने समाजक सब एकठाम बैसि एक कदम आगू दिस बढ़ैक विचार मे सहमत भेला, पद्धति सम्मिलित हएत तखने समाजक दिशा निर्देश हएत। आइ धरिक जे एक-दोसरक आम उड़पैद जे प्रक्रिया रहल आ ओ उड़पनिहार कैना चुप-चाप बैसल रहि जाइत। ओहन विचारक लोकक बैसार सैंहो भरि राति चलैत रहल। कैकर अन्हार केकर इजोत माने केकर अन्हरिया (कृष्ण) परब (पक्ष) आ केकर इजोरिया (शुक्ल) परब, से के निर्णय करत। ओ त समाजे ने करैए सकै-ए। पुरानपंथी मात्र साम्प्रदायिके नहि आर्थिको) मइनधाना सब एकठाम म' दुर्गा बनबैक दोसर स्थान पर स्थापित कौ लै भोरहरबे, माने काल्हि समाजक बीच जे माटि लेबाक समय निर्धारित भेल छल, तइ सँ बहुत पहिने दु टा मइँच आ गोटि-पड़रा आरो लोक कें संग केने, मे माटि ल' स्थान

पृ०-९०

स्थापित क' लेलैन।

समाजसूत्र सँ अनभिज्ञ लोक, अपन विचारकेँ टुटैत स्थान (दुर्गास्थान) आ दोसर स्थान कैँ सृजित देखब विरोध स्वाभाविक छल। ~~विसेहे~~ विरोध भेल। गामक समाज अड़ि कैँ अपन विचार पर ठाढ़ भेला। गाम मे दु टा स्थान (दुर्गास्थान) स्थापित भ' गेल। ~~अइ सँ~~ पचास वर्ष ~~मेलोपरान्त~~ बीतलोपरान्त अवनो औहिना दु फाँक अछिये। ~~अछि~~। पीढ़ी बदैलत गेल मुदा विचार भेदक गिरह नहि खुजल।

समाप्त ४।१२।०१८

पा – अनचोकक अन्हार – पृ०-1

दू बजे राति, भोरक आगमन नइ भेल छल रहए। जीवू काका
ओछाइन सँ उठि लोटा-डोल नेने चापाकल (कल) पर पहुँच
दू बेर हेन्डिल चलौलनि कि बिजली गुम भऽ गेल। आदीक
अन्हरिया पखक
मासक अन्हारक चतुर्दशीक अन्हराएल-कजराएल अन्हार, एक
एक हाथ हेन्डिल पर रहनि से तँ जीवू काका अनुमान सँ बुझैत छला
जे चलौने (हाथ-चलौने) कल सँ पानि निकलत मुदा
दोसर हाथ जे खाली रहनि से हेरा गेलनि, हेरा ऐ गेलनि
जे इन्च-इन्च (इंच-इंच) नइ सुझने दोसर हाथे कते कि हएत। हाथे काज कि
ने डोल देखै दियै आ ने लोटा, जँ टपा-टोइया कऽ
कऽ माने टयोरि कऽ, तानिको छोड़ि तइयो ऐ हाथसँ आगू हेना बढ़त। जे भेटियो जाएत, तइओ जाएत केना।
रस्ते अन्हार अन्हार सँ अन्हरा गेल अछि। जइ सँ जेनो कारण
रस्ता
बाट मे रोड़ा बनि ठाढ़ अछि, कतौ ने कतौ ठेस होइत लगबे
करत आ ओंघरा कऽ खसबे करत। तैठाम अन्हार मे
पड़ि गेल छी
जे किछो खोजौं पुछड़ि नइ कऽ औत।

दू बजे राति मे जीवू काका कऽ ओछाइन पर सँ उठैकऽ
कारण अपन सोचक अनुकूल छनि। अपना ढंगे सोचै छथि
अपना हाथे-पएरे चलि कऽ जिनगी बितबै छथि। जइ सँ दोसरा
खुशामदे किएक एहि (अ) विसवासक संग जीबैत रहल छथि।
देशक स्वतंत्र नागरिक कहल जाइ-ए। जेकरा राजनीतिक भाषा मे गद्दीक सुख कहल जाइ-ए। जीवू काका
स्पष्ट सोच छनि जे खान-पानक जे नियम-कायदा
अछि ओ अपना जगह पर भलेँ नीक हुअए मुदा ओकर
नीकपन सबठाम काज दैत सेहो बात नहियेँ अछि। जखन
गाड़ी-सवारी सँ चलैक चलैन जोड़ पकड़ि लेलक अछि
तइ सेहो हम हटल छी, से तँ नहि छी गाड़ी छी
कतौ, टायर-ट्यूब फुफाटत तँ कतौ आगू-पाछुक सवारी
(गाड़ी) से टकराएत, बत कतौ कौनो
खाधियो मे खसि कऽ उनैट जाएत

Ajanta PRODUCTS Officer

नं- २

तेहाम अपन निर्णयें कथवाक जिनगीक कि सफल भेल।

अपन कीर्ति देखन भेल : मुदा मरसा के ? तें ऐहेन रस्ता पकड़ि चलबें चलब सोचह्रो आना विसवासु नहियें अछि

जरखन जिनगीके अविसवासु अछि तखन शताग्र (सौ बर्खे) जिनगी केनो मोक्ष

अइ सँ इती ने कतौ- बीचे मे ओपचराएब अछिये। ताहिना योग तंत्र कें सेहो बुझें छथि। जे आदमी भरि दिन चिमनी पर पजेवा अथवा खेत मे कोदारि पाड़ैत, ओत आ तखन जँ ओ व्यायम कों लगत तखन देहक दशा कि हएत? से त ओहन अछि। बुझते जे कौ-ए। तें अइ क्रिया के सहस्र

(शताग्र) सौ वर्ष (सय बरीस) जीबैक जिनगी क्रिया नइ बुझैत छथि। तैं ई कहब जे बृहस्पति सन गुरु चार्वाक केँ नहि छ। सेहो चार्बाक जेकों बृहस्पति सन गुरु सेहो

चढ़ नहि छनि सेहो केना नइ कहल जाएत। से त छनिहें

चढ़ सेहो, विचार रहैन जेहेन विचार छनि तेहने विचार जीबुओ करैक छनि। तें अपना विचारे मस्ती मे रहैत छथि। सेहो नहि छनि साफ अपन सोच छनि

जे जैह समाज मे श्रमशक्ति चुरा गेल अछि असपस्ट आ लुटाइये रहल अछि माने श्रम चोरक बीड़ाण्य भऽ गेल अछि, तेहाम सँ जइ सँ

घटैत-घटैत श्रमशक्ति ई पंच-तीन चौरा पर आबि गेल अछि तइठाम केँ जते गुणा अपन शक्ति कें संयोगव (संजोगव) ओतेक गुणा वृद्धि ने जिनगी मे भेल। जेठाम

सय वर्ष (वर्ख), जीबक आरुद्दा जिनगी उठड़ि कें (देशक हिसावे माने आयुक गणना हिसाव सँ) पचास- साठि वर्खे पर अँटकल अछि आ तेहाम अपने सय वर्खक

मे रहब तेहाम चुनियाँ कि चुनकी मे नइ अनत, ओ त चुनवे कता

चुनि सँ चुनियों चुन चोत छी। ओहिना नैह ने विद्यापति

खिसिया कें कहलनि जे 'आधा जीवन हम नीन गमाओल'। ऐठाम आबि जीबु करैक अपना मनक विचारक बाट पकड़ि चौबीस घंटाक दिन-राति कें सोलह से अठारह घंटाक अपन दिनचर्याक कोल्हु गड़ि अपन जिनगीक गाड़ी केँ रथ केँ रथी बनि आगू मुँहे ससारि रहला अछि। मने-मन मे एते त विसवास बनले छनि जे कर्मक दुनि छी, जे जते कते से तते पौता पाओत आ जे जेहेन कते से तेहेन पौत आ जे जेना करत से तेना पौत। अहीं दिनचर्याक रा

पृ०- २

कल पर पानियोक आनै आ मुँहो- हाथ धोएक पछाति सँ जीवू काका गेल छैला। दरबज्जा, जेना जीवू काका रहै छथि तहिना से सए गज माने हुँ सब हाथक दूरी पर कल छनि।

कहब जे चार्वाक सन जखन जीवू काका छथि तखन ऐहेन लगरकट बिजली पर सौंसे माना आश्रित किअए भेला जाइ से ऐहेन फेर मे पड़ला। फेड मे पड़ैक कारण भेलनि एक दिस बिजलीक इजोत मे आँखि चौन्हिया गेलनि आ दोसर भकुआएल मने ओछाइन पर सँ उठले रहैथि। ओना बिजली पर आश्रितो छथि आ नहियो छथि। बिजलीक अतिरिक्त सेहो अपन इजोतक ओरियान केने छथि, मुदा से अनचोके मे छुटि गेलनि। फेर कहब जे जखन जीवू काका अपन जिनगी अपना हाथ मे नेने चलै छथि तखन ओछाइन पर सँ उठला पछाति भकुआएल किअए रहला? ओना जीवू काका ऐ बात कें नीक जेकाँ बुझै छथि जे लोक भकुआइ-ए नीन टुटला पछाति। नीनो त नीन छी, कोनो पकला पछाति टुटै ए त कोनो आम जेकाँ कोनाएल- डम्हाइले मे टुटै ए तँ कोनो सोलहनी काँचे मे टुटि जाइ-ए। जे जते काँच मे टुटल ओ ओते भूत बनि लगि भकुआने रहैत छथि। मुदा से जीवू काका कें नहि भेलनि। जीवू काका जनै छथि जे रावणी जिनगीक सहोदरे भाए कुम्भकर्ण सेहो छी, बिना ओकरा मारने रावणी जिनगी रामी जिनगी नइ बनत, मुदा ओकरा जानो सँ मारि देने तँ काजो नहियेँ चलत तेँ ओकरा अधमरू करि कें छोड़ि देने अछि, से केने छथि।

एक हाथे कलक हेन्डिल पकड़ने, दोसर खाली हाथ अन्हार मे बौआएत, जीवू काकाक मनक मे जेना अनचोके मे कजरिआएल इजोत छिटकलनि। कारिख से काजर बनै ए, आ काजर कें लोक आँखि मे ए दुआरे लगबै-ए जे आँखि मे एक चमक सेहो होइ-ए। जेना जेकरा पनीला से आँखिक चमकी जगै-ए, तहिना

पृ०-४

काका कें कुअरिआएल अन्हार मे सैंहैं गेलाह।

जीबू काकाकें विचार मे कुअरिआएल चमकी जगेते जेना भक्क खुजलनि। नइ सँ चलैं ओकर रस्ता फड़िच बुझि पड़ै लगलनि। अपन कोठरी मे आबि अपन भोरक क्रिया-कलाप मे लागि गेला।

पौने तीन बजि गेल, भोरुका चौँहरी जगि गेल। अपन मरीस कालिह साँझे सँ उठि गेल छल, मुदा अबैत अन्हार माने राति, कैँ देख मरीस कैँ पाल दिअबै नइ गेलौं। मन मे-विचारि लेलौं जे जखने भोरक आगमन हएत तखने विदा हएब। सैह केलौं। मरीस कैँ छोड़ लगा पीठ पर चाँढ़ि हैइत-हैइत चलैत विदा भेलौं। जीबू काका जगले छथि, कोठरी सँ निकलि रस्ता पर आबि कहलनि- 'हमरे जेकाँ तोरो कपार छह।'

जीबू काका बेसी काल चिक्कारी (अलंकारिक भाषा) मे बजै छथि, तैँ धाँए दे किछु ने बजलौं। एतबे कहलनि- 'काका जेँ अहीं सन कपार हमरो भ जाइत तँ अही जेकाँ ने हमहूँ आबन ओछाइन पर बैसल (बैसल) रहितौं।'

जीबू काका अपन विचार कैँ समटैत बजला- 'आइये रातिक बात सुनबै चाहलियह।' चाह लिअ।

आब कहू जे ऐहन होए जे काज छोड़ि गप-सप सुनितौं, मुदो सँ जीबू काका कैँ कहबानि केना। एतबे कहलएनि- 'काका, अपना नाचे सब नचबो करै-ए आ अपने देखबो करै-ए।'

नहला पर दहला फेकैत जीबू काका बजला- 'सबके सब नचबो करै-ए आ सबकैँ सब देखबो करिते अछि।'

कहलिएनि- 'पाल खुआ अबै छी तखन निचेन सँ सब गप करब।' आबन जाए दिअ।

गोष्ठी- १६-८-०१८

कथा - हारि केना मानब। पृ० - 9

शारदीय नवरात्रा (आसीनक दुर्गापूजा) चारि दिन पहिने समाप्त भ' गेल, काल्हि पुरनिमा (पुर्णिमा) छी। सुभ्यस्त समय रहने नवरात्रा धुम-धाम सँ सम्पन्न भेल। सूर्यास्त भ' गेल ब्रह्माजी गायित्री-जप शुरू ऐ दुआरे नहि कैने छेला जे इन्द्रासन सन सँ कौलुका भारक आदेशपत्र नहि आएल छलनि।

सूर्यास्त होइते, होइते किअए ताहू सँ पहिने चान (चन्द्रमा) आकाश मे बिन ज्योतियोक उगल छल। ई, एते जरूर भेल जे सूर्यास्त होएते मनोंकरंग आ रंगोक मन मे ब्रह्माजीके लालिमा बढ़ जरूर लगल छलनि। ताहू मे आइ चतुरदशीक (चतुर्दशीक) चान छी। होइतो एहिना छै जे 'उगो चान कि लपकी पुआ'। येह चान ने भोरक सीमा पर पहुँचते पुर्णिमाक (पुर्णिमाक) बनै लगत, आ साँझ होइते पुर्णिमाक (पुरनिमाक) रंग-रूप मे आएत। जे बारहो चान सँ, धवल-चवल, शीतल, शीतचरक संग कोजगराक कौड़ी पाशा (पचीसी) पर बैसल जुआरी सभकेँ सेहो केकरो हँसैबो आत त केकरो कनैबो त जरूर कावै आत। खैर जे आत, ओकर राति छियै जे मन फुड़ते, जेना मन फुड़ते तेना अपन आत। नड़टे नाचह आ कि नाड़ंगा बनि नाचह, से ओ जानय।

ब्रह्माजी ऐ दुआरे गायित्री-बंधन नहि कए पबै छेला जे अपन ब्रह्म मुहुर्तक हिसाब नहि मिलि रहल छलनि। ओ हिसाब छी, आजुक जिनगीक विसर्जन क्रियाक काल्हुक क्रिया मे जोड़ि एकसूत्रता बनाएब। तही बीच इन्द्रासनक सिपाही आबि, एकटा चिट्ठी हाथ मे थम्हा, नमस्कार कैत विदा भ' गेल। चिट्ठी उनटा जखन ब्रह्माजी देखलनि त पहिने हँसी लगलनि मुदा राज्यादेश (शासनक आदेश) मानि राजपत्रक फाइल मे रखलनि। फाइल कैं पुन: उनटा चिट्ठी निकालि पुन: पढ़लनि। लिखल अछि - 'एहेन मनुखक निर्माण करैक अछि, जे आजुक अनुकूल हुअए।'

आइक दिन केहेन छल आ काल्हि दिन केहेन बनत इ विचार असकरे मे ब्रह्माजीक नहि फुरलनि। तेकर कारण इ नहि जे ब्रह्माजी विवेकवान नहि छथि। ठीक-ठीक (सोलह आना)

पृ०- 2

मूल्यांकन करैक क्षमता मैं कमी छलनि जइ सँ निर्णय करैमे बाधा होएतनि। मुदा एते नै मन मे शंका छलनिहेँ जे देवगण सब ऐहेन आबिरहैँ अछिये जे धरती परक मनुख कैं निरमैं काल मुँह देलियै खाइ-पीबै लै, दाँत देलियै कटै लै, कंठ देलियै घोंटै लै, ठोर देलियै ओकरा टाट-फड़क लै, तखन जे बलजोरी ओकरा सब सँ अक्षर निकालि बजेबो कैलक आ अपनो बाजब भूकब शुरू कैलक, तइ मैं हमर विचार रहल। तैँ नीक हएत जे मने चतुर्दशीक चान सेहो उगलें अछि, इमानो कैं आ धरमो कैं बचा लियैं, आ बुधियो-विवेक कैं बजा विचारि लैब नीक हएत। पाँच मिलि कऽ काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। हमरा मनुख निरमैक मात्र भार भेटल अछि आ कि ओइ मनुख कैं बिआह करत' हएत सेहो भार हमरे अछि। ओ बि अपन विधाता अपन पोथी-पतरा देखबे कैं करता। देखियो कैं आ लिखियो कैं करता।

सातहुँ बारहो मासक रूपवान चान, बारहो मासक चन्द्रमाक रूप-रंग मैं मौसमक अनुकूल प्रभावित रहैत छै, तइ मे सबसँ सुभस्त मौसम आसिनक चान कैं रतिभेटैत। चारू गोटे, माने इमान, धरम, बुधि-विवेक, कैं समाद ब्रह्माजी पठा देलनि। जावे ओ चारू पहुँचला तइ बीच मे जे खाली समय भेटलनि तइ मे उपैक गेलनि जे अनेरे विधाताक काजक भाँज मे पड़ि गेलौं। अपन काजक ने जबाब-देह छी आ कि दुनियाँक ठीकेदारी अछि। जखैन इनका (माने विधाता कैं) छुट्टी भेटलनि तखन ओ घर-कनियाँ कपार मे लिखैत रहता। भाव कियो काज करै सँ पहिने छुट्टी पबै-ए आ ओ छुट्टिये भेटला पर काज करै-छथि। ओहुन-ओहुन लोकक भार हमरा बुते उठत। लोको तं लोकै छथि कि ने, खुशामद करि कऽ काजो करा लेता आ उनटा कैं बाजब इ काज फल्लाँ कैं हमरी सिखौने छियैं कि भोए जब एते सिखनैक बुद्धि अपनो छैहे तखन

पृ०- ३

जगत- अपन जिनगीक काज अपने सम्हारैत चलू। जिनगी कोनो अफ्रीका बोन मे आ कि कोनो कुव्यासक पहाड़क झाड़ी मे नुकाएल अछि जे नइ देखब। देखते छी जे एक बीघा खेत वला ५ बीघा बनबै चाहै छथि, हाइ स्कूल शिक्षक कओलेजक बनै चाहै छथि। एकटा कारखाना वला दोसर बनबै चाहै छथि। एतेक दुनियाँ कें एके नजरि मे देखल जाए छी आ अपन जे आँखियो आ नजरियो भरि दिन संगे मे रहै-ए से देखबे ने करै छी। कहै छै तखन इहो बात अछिये जे आँखि ने केकरो अपना कपार मे सटल रहै-ए मुदा नजरि सँ छोड़ि रहै-ए, ओ त नजरिखाने लग ने रहै-ए।

ब्रह्माजीक समाद पबिते इमनदार भाए अपन सब काज छोड़ि दौड़ले पहुँचला।

ओना इमनदार भाएक मन मे ब्रह्माजीक आदेश छेनि तेँ माने छेला जे करता सेँ काब। मुदा ब्रह्माजी त परिवारक अंग बुझि सबकेँ विचारे कें बजौने छेलखिन तेँ बाकी तीनूक, धर्मदेव, बुधीनाथ आ विवेकानन्द, प्रतीक्षा मे प्रतीक्षारत छेलाह। जइ सँ किछु बजै नइ छेला। संजोग बनल तीनू गोरे माते धर्मदेव बुधिनाथ आ विवेकानन्द संगे पहुँचला।

चारू गोरेक बीच मे, ब्रह्मा जी अपन राज्यादेशक राजपत्र रखि बजला- 'एकरा पढ़ि कें सब पाइयो लाए आ विचारो दए जे 'अमुका मनुखक निर्माण केहेन काब?'

चिट्ठी बुधिनाथ पढ़लनि आ सब कियो सुनलनि। ओना सुनि- सुनि जहिना इमनदार भाए बिहुँसल छेला तहिना नेँ विवेकानन्द बिहुँसल छेला आ बुधिनाथो कें ओहन बिहुँसी एलनि मुदा धर्मनाथक मन, कोठीक गोरा तर मे राखल चुनक कोठीक मुँह जहिना चुन संग रहै छै तहिना औएत रहनि। बाजलथि किछु ने मुदा तरे-तर मन मसकनि जे घर सँ ल' क' दुनियाँ धरि केकरो गरदनि कहाँ भेल छैन तेँ हमर भेल छैन। चिड़ै जेकाँ एकोटा पाँखि देह मे सटल ई समय नहि रहै देलक। मुदा तेँ कि हारि मानि लेब। जखन धरती पर जनम लेलौं, सुबहक माता छथि, तखन हमरो ने छथि। माए-बच्चाक सिनेह त दुनू दिसि सँ



विद्धी सुनि सब कियो गुम्मा-गुम्मी भ' विचार करै लगला जे युग सापेक्ष मनुख बनै आ कि मनुख सापेक्ष युग बनै, आजुक मनुखक मुख्य रूप छी। ओना ब्रह्माजी मने-मने मने मे रखने नेने छैला। मुदा युगक प्रभाव त देखबे छैला जे परिवार मे बेटी माए-बाप कैं कहै-ए जे तूं हमर कि केलहु? जौं पुतोहु ऐहन बजै त उचित छै, ओकर सेवा ओकर माए-बाप केलकै। शिक्षान्त भेटा पद्धति हमरो घर आएल। मुदा बेटी जौं ऐहन बजै-ए तै जरूर कोनो बाल विद्यालयक कोचिंगक पढ़ाइक छी है। सत्तरह बापूतक छी सत्तरह रंगक कोचिंग अछिये जइ मे सत्तरह रंगक मनुखो बनबे करत।

आँखिक इसारो सँ ब्रह्माजी इमनदार भाए कैं पुछलनि—जेना इसारे सँ इमनदार भाए विचारैत आएल छैला कि की चौथ द' उठि कैं ठाढ़ भ' बजला—आइ धरिक इतिहास मे छोट-पैघ लगा कै चौदह हजार लड़ाइ भेल अछि, ओ भेल अछि कहियो देव-दानव कहि त कहियो रक्षा (रक्षा) राक्षस कहि। ई भेल अतीत, आगू अछि भविस आ बीच मे अछि वर्तमान।'

इमनदार भाएक बात सुनि धर्मनाथक मन चुनिआएल मन कनी-कनी चुनियालगल। जइ सँ मनक तामस मे मोंमपन एलै। बजला—' अतीत भेल बेतीत आ बेतीत सँ जे अपरतीत भेल सँ भेल प्रीतक पूर्व अवस्था। तही बीच नारद बाबा वीणा नेने, बिनु समादे पहुँच गेला। परिवारो मे एहिना छैइ-ए जे जौं कोनो विचार करै वैसब आ जौं कियो बाहरी लोक आबि गेला त पहिनै इनकर विचार सब सुनिते छी।

ब्रह्माजी नारद बाबा कैं करलनि-भने अहाँ आबिये गेलौं। अहीं भाग हमरा परिवारक। देश-दुनियाँक कि हाल अछि।'

नारदबाबा पहिनै वीणाक तरक कनेठी द' कैं ठीक केलनि। किअए त मन मे उठि गेल छलनि, हाथ मे वीणा अछि, कौन वीणा छी, मुँह सँ फुकैवला सपहरिया सवह छी, आ कि सरस्वतीक दिअनि। सारस्वतक मन

कथा - हारि केना मानब - पृ० ५

रहितो असारतत्व कतऽ सँ आबि जाइ-ए। नारद बाबा अपन विचार मंथन जे कऽ लगला तइ सँ वीणोक हाथ रुकि गेलनि आ मुँहक वाणी सेहो धाती (छिपाली) धऽ लेलकनि, जइ सँ पुछला पश्चातिओ (ब्रह्माजीक) नारदबाबाक मुँह बन्ने रहलनि। नारदबाबा कैं चुप देख बुधिनाथ हुसकी दइत बजला- 'बाबा, तीनू भुवन सँ टहलि-बुलि, देख-सुनि एलौ हेन, आ तइओ मुँह....?'

ओना बुधिनाथक इशारा नारदबाबा बुझि गेला मुदा बुधियार लेल इहो त आफत (आफद) अछिये जे नीको बात कि विचारकेँ सब ठाम नइ बाजल जाइ-ए। अपन दिन-दुनियाँ देखैत नारदबाबा बजला- 'बौआ, पेट मे विचारक पहरि ठहल अछि जइ सँ बजै ले मन तनफनाइ-ए मुदा मुदा अपन झारक मारल.... ! लोक लोक लग मे बजबो केना करत?'

ओना ब्रह्माजी नारदबाबाक विचार सुनि मुस्की मारैत हुसकी दइ देला मुदा विवेकानन नजरि बुधिनाथ पर टिकल छल आ धर्मदेवक इमनदार भाए पर, जइ सँ नारदबाबक बात कियो ने सुनबे केलनि आ ने बुझबे केलनि। जहिना एकटा ऋृषि अपन इमान कैं धरम बुझि सतक बाट धेने चलैत देला। एकटा शिकारी एकटा गाय कैं खेहारने अबै छल। गाइयक दशा देख हुनका दयाक सागर उमड़ि गेलनि। जान बचौने गाय पड़ाएल जाए छल। रस्ताक ओझल सँ आ कि बोन-झाड़क ओझल सँ गाय शिकारीक नजरि सँ ओझल भऽ गेल। ओ (शिकारी) ऋृषि लग मे आबि गाइयक जानकारीक बात पुछलकनि। स्पष्ट शब्द मे ओ ऋृषि जवाब देलकनि जे जे देखलक से बाजत नहि आ जे बाजत से देखलक नहि, तहिना भैया चुपा-चुपी देख इमानदार भाए बजला- 'बाबा, से कि बाबा?'

अपन मजबूरी सँ बेबस भेल नारदबाबा बजला- 'बौआ बात-बोध सँ कौनो विचार छिपाएब पाप छी। तैं तोड़ा सब सँ किछु नै छिपैबइ।'

Ajanta Officer

पृष्ठ - ६

नारदबाबाक उमड़ल मनक सागर कें ~~फुल~~ विवेकोमन, बुधि
नाथो, ~~धर्मनाथो~~ धर्मदेवो आ इमनदार भाए सेहो टकटकी लगा
देखै लगला। नारदबाबाक मन ~~में उनी~~ आगू-पाछू उमए
लगलनि। आगू-पाछू होएक कारण भेलनि अपन तीनू भुवनक रूप-चित्र
देखब। नारदजीक रूप चित्र छनि, भक्तिक तीन ~~मार्गक~~ पद्धति
मे— व्यास पद्धति, इनमन पद्धति आ नारद पद्धति, जइ मे एक पद्धतिक
दाताक रूप मे अपनो छथि। मुदा दोसर रूप, जे देखैत छला तइ मे गामक-घरक पुरुख-पातर
सँ ल' क' मौगी-मेहरि धरिक बीच छथि जे नारद बाबा
एक नम्बर झगड़ लगौन छथि। घरोवला आ घरोवाली
दुनू एक गोरेकें कहै छथिन
दैं सुख-चैन सँ रहै नहि दइ छथि। से ओ चाहे मर्त्य-
अहाँक पति नौनियाइ म' गेल छथि आ दोसर कें कहै छथिन पत्नी अहाँके दै छथि
भुवनक उमए आ कि देवभुवनक।

ब्रह्माजी नारदबाबा पर नजरि फेड़लनि। नजरि फेड़ाइते नारद-
बाबाक मन फुड़फुड़ेलनि। बजला— 'बौआ, नीकोहे काज
त नीक होइते अछि, जे अधलो काज कवनो नीक भ'
जाइ-ए। तहिना नीको काज कतौ अधलो भ' जाइ छै
कतौ अधलो काज नीक होइते अछि। जइ सँ बुझियो नै पेब
रहैत छी जे नीक कि आ अधला कि भेल।
~~धर्मनाथ~~ धर्मदेव बीचे मे टपकल- जेना ?'
नारदबाबा बजला- 'बुद्धदेव आ महावीर जैनक नाम सुनने हेब है कि ?'
'हँ, इतिहासक किताबो मे पढ़नो छी।'
'दुनू सन्त छेला, जहिना भोजन मे सादगी, तहिना
वस्त्र मे सादगी, जहिना विचार मे सादगी, तहिना
बेवहार मे सादगी दुनूकें छलनि। अपन विचारक विद्यालय मे
अध्ययन सँ केको परहेज नहि छल।' कौ छला। खुलल किताब जेकाँ दुनूक
विचारो आ बेवहारो छलनि।'
'हँ, से त छलनिहेँ।'
'दुनू एके युग मे भेला, एके रंग दुनू युग दबरा देने छला।'
'हँ, से तँ देलाहे।'
'मुदा...'
'मुदा कि ?'
'येह जे एक गोरे 'बहुजन हिताए' कहै आ दोसर
गोरे 'सबजन हिताए' मानै छेला।'

पृ० 6

ओना 'बहुजन हिताइ' आ 'सबजन हिताइक' भाँज मे चारू गोरे,
- इमनदार भाए, धर्मदेव, बुधिनाथ आ बिबेकानन्द ओंकरा गेला।
अपने-अपने मने- मन विचारै लागला मुदा ब्रह्माजी बुझि गेला मने
मन मुस्की मारै लागला। सब अपने-अपने विचार मे तेना
फँसि गेला जे बकता कियो रहबे ने केला। जइ सँ
चुपा-चुपी पसरि गेला ब्रह्माजीक मन मे भेलनि जे ऐना
जँ कोनो विचार कौ बैसल आ कियो बजनिहारे ने हेता
तखन विचार कि हएत? नारदबाबा कैँ चरिअबैत बजला-
'नारदजी, इन्द्रासन सँ आदेशपत्र आएल अछि, जे आजुक
मनुख निरमबैक, तइ मे ...?'

नारदबाबाक मन दुनू दृष्टि सँ करुआएल (करुआएल)
छलनि, पहिल- चलैत- चलैत तते थाकि गेल छला जे मन
करुआ गेल छलनि। दोसर, तीनू भुवनक चालि- चलनिक बेवहार
देख मन तेना अगियागेल छलनि जे विचार करिया गेल छलनि। ओही करिआएल मनक बीच ब्रह्माजीक प्रश्न
छलनि। बजला - 'आजुक जेहेन दुनिया अछि तइ मे सबसँ
उत्तम कौटिक निर्माण (मनुखक निर्माण) ओ हएत जे निर्माणार्थीक
(जेकर निर्माण करब) पूँजी (जड़ि) अनुकूल माने गरीबी मे नेपाली ठर्रा आ अमीरी मे कनाडियन रसक दारू पीया
मोटर साइकिलक सवारी पर चढ़ा, एक हाथ मे मोबाइल
आ दोसर हाथ मे सिगरेट चढ़ा, सवारीक हैन्डिल
कैँ दुनू हाथे छोड़ि, अन्हा- गाहीस बाट पर चलाएब नीक
निर्माण हएत।'

ब्रह्माजी बुझि गेला जे नारदजी खिशिया कैँ विचार
देलनि। ओना हुनको विचार कैँ सोलहो आना नहियोँ
मानब सेहो नीक नहिये हएत। किअए त अपने ने बैसल-
बैसल निरमबै छी, मुदा नारदजी तँ तीनू भुवनकेँ घटहिलि
बुलि देखै छथि तैँ देखलाह बजला अछि। अपन
विचार कैँ बेवहारिक बना ब्रह्माजी बजला-
नारदजी, अहाँ विचार सँ सहमत छी तैँ समर्थन
करै छी, मुदा, एहेन मनुखक सँ ते जग-हँसार
हएत। किछु छी ते जबाव देही मे छी कि ने?'
ब्रह्माजीक विचार सुनि नारदजी अपन नामस ...

पृ.-८

कैं मनेँ मन चोरैं ~~मने-मे दबे~~ लगला। मुदा जहिना डुमैबला वस्तु पानि मे जाइते डूमि जाइ-ए आ बिनु डूमैबला अथाहो पानि मे अलगे रहै-ए, तहिना नारद बाबाक मन मे ठेहत रहनि। अपन पल्ला (पाला) झाड़ैत बजला- 'लोको कि लोक छी, जहिना बिनु सींग-सींगहौटीक अछि तहिना बिनु नाङरि-पुछड़ीक सेहो त अछिये, ~~जहिना~~ तेहने--?

ब्रह्माजी बजला- 'बदनामी हएत?'

नारदजी बजला- ~~बदनामी~~ 'जे बदनाम भेल ओ त अपने बदनाम अछि, तखन बदनामीक लाज केकरा हएत? हमरे कियो पद्धति कर्ता कहै-ए आ कियो घर-जरौन, तेकरा हम कि करबै।'

ब्रह्माजी कैं नारदजीक विचार जेना जँचलनि, ~~तहिना मन खुश~~ जँचिते मन मे खुशी उपकलैन जइ सँ मुँह मुस्किएलनि। मुस्की दैत बजला- 'तखन?'

'तखन कि, अहीं कैं लोक कि कहै-ए से बैसल-बैसल बुझबै, कियो बेइमान कहै-ए आ कियो नशाबाज।'

'से केना?'

'जेकरा घर मे बेटीक बीहि अबै-ए ओ बेइमान कहै-ए आ जेकरा बुधि-~~बौफिया~~ भसिया जाइ छै ओ ~~~~ भँगपीबा कहै-ए।'

'ऐ मे हमर कोन दोख।'

'से अपना मने बुझने हएत। बजबै जे भाए, हम त दुनियाँक नजैर मे नर-नारीक सृजन करै-छी, तहिना बुधि-विवेकक सेहो करै छी। तइ से लोक मानत। ओ थोड़े बुझत जे मकान (घर) बनौनिहार कें त पहुँच गेल, मुदा केतो सीमेंट कम रहल आ कि बालुए कम रहल, तइ दुआरे मकान बनौनिहार कामै हएत। ओ त कमो-बेसी करि कें मशाला तैयार कइये लेत।'

ब्रह्माजी- 'तखन?'

नारदजी- 'तखन यैह जे, जे कतौ बदनामी हएत त कहबै जे ~~भाँग पीब~~ भाँग कनी बेसी पीया गेल। तैं हारि थोड़े मानि लेब।'

समाप्त
२।११।०१८

कथा - अप्पन बीरान - पृ० 1

अपने गाम जकाँ हरिहरपुरो। स्वतंत्रता आन्दोलन जहिना सब गाम मे तहिना हरिहरपुरो मे। ओना पाँच सय परिवारक गाम मुदा गामक जमीन, गादी-कलम पोखरिक चौथाइयो (चारिओ आना) हिस्सा पर गौंआँक अधिकार नहि। बारह आना सँ आरे सम्पत्ति पर अनगौंआ जमीनदारक जड़ो-जड़ आ मासोक अधिकार तँ अछिये। आजादी भेला पछाति लगानक वसुली जमीनदारक हाथ सँ निकलि गेल मुदा जमीनपर अधिकार तँ रहबे कएल। गौंआँक बेलगान चलैत खाजगी धरारीक घराड़ीक मात्र संग, किछु गोटेक हाथ मे किछु जमीनो आ मालगुजारी देने खेत मुदा बारह सँ चौदह आना परिवार कें मात्र घराड़ीए टा। तेँ कि गामक जमीन गौंआँक कहियो नहि रहल, से बात नहि। मालगुजारीक चलैत साले-साल नीलाम होइत गेल आ गौंआँक जमीन छिनाइत गेल। जइ सँ गामक बारह आना सँ आरे जमीन अनगौंआँक हाथ मे चलि गेल। गौंआँ खेतिहर किसान नहि बटेदार किसानो आ बटेदार बोनिहारो (मजदूरो) बनि रहि गेल। अधिकांश बोनिहार मुदा जेना-तेना कमाइ खटा आ गौंआँ बहरबैयाक संग जमीन इखिऔलक। जेना-तेना ई जे किछु जमीन पर बकास्तक कंफ्ट (लड़ाइ) तँ किछु पर सिकमी बटाइक तँ किछु जमीन कीनियौं कऽ गौंआँ अनगौंआँक कें गाम सँ हटौलक। बहरबैया कें हटिते गौंआँ नमहर सौंस छोड़लक। गौंआँक हाथ सँ जमीन ससरैक (गौंआँ सँ अनगौंआ) अनेको कारण भेल। किछु मलगुजारीक तँ किछु समाजक जाल-फाँस मुख्य रहल। सामाजिक जालो-फाँस अनेक रंगक रहल मुदा मुख्य रहल मरलाक पछातिक काल्पनिक दुनियाँक बेवहार। काल्पनिक बेवहार ई जे मुइलाक पछातिक खर्चक जे बिधि-विधान रहल ओ समाजक रीढ़ कें तोड़ि देलक। समाजक ऐहेन दबाव रहल जे खेतो-पथार खुशी सँ बेचबैत छल। एक तँ गामक लोकक हाथमे गामक सम्पत्ति (खेत) नहि तैइ पर प्राकृतिक प्रकोप। ओना तीन टा समए मुख्य रूप सँ छल मुदा तीनू मे सेहो ए रंगक समए भेल। एक भेल तीन-तीन, चारि-चारि रंगक समए भेल। एक भेल जे अनुकूल मौसम / अनुकूल मौसमक अर्थ भेल जे गोटे साल ऐहन होइत छल, अरनो होइए जे बारहो मास अनुकूल समए बनैत छल। कोन समए केहेन हवा चलत, कोन समए केहन गरमी पड़त, आ बरसातक रूपे कि रहतै। दोसर तरहक समए बनै ए, सौतिया। जइ ए

पृ० २

प्रतिकूल प्रकृति रूप पकड़लक नइ साल सुसमौर-कुसमौर बनौर लगैत
छल, एक सँ ऐंदी दोसर दही। सौंदि ने रॉकियाह के हैकाल
आ नै दहीक हैकान। सब गोटे साल शुरूहे सँ समौरबगदल
जे अन्त धरि (बेरोंदियोक आ परसातीक) बचने रहि गेल।
जइ सँ मनुक्ख सँ पशु धरि मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ
कैँ तबाह क दइ एत-जे कर्मठ (मेहनती) किसान कैँ मन
तोड़ि दइ ए। दोसर समौर भेल जे अगता मे विगाड़
मध्य सँ सुधरि जाइ ए। आ तेसर भेल जे शुरूह
मध्य बिगड़ल रहल आ अन्त मे सुभि यत्ते (अनिश्चित) भेल।
प्रकृति (प्राकृतिक) ई खेल सब दिन सँ रहल अछैनो अछि।

ओना स्वतंत्रता आन्दोलन मे १९३५ ई० क पछाति
जे ग्रामक लोकक मनसूबा जागल ओ धीरे-धीरे (रसे-
रसे) पसरैत गेल। पसरैत ई जे स्वतंत्रता संग्रामक
मंच पर अवाज उठल जे ग्रामक जमीन गौंआक हेतइ
साधनक (खेतीक) ओरिआन हएत आ नीक जकाँ उपजौल जाएत।
ओकरा ओरिआन हेतइ।

जहिना मनुक्ख जे पारम्परिक जरूरति अछि तहिना मालो-
जाल आ गाछो-बिरीछ छी। ओना अपन इलाका पहाड़ी
नदी सँ छाड़ल अछि, जे किछु ऐहेन अछि जइ मे
बरखो मास पानि चलै ए, आ किछु ऐहेन अछि जे
छओ मसिया छी आ किछु तीन मसिया छी। मुदा अबैत
गेल बढ़ैत गेल, अहँ केँ कोनो ओगार नै भेल।
देशोक भीतर पंजाबो कृषि प्रधान राज्य छी। जतेक
इंच बरखा अपना सबहक हिस्सा मे अछि ओते
पंजाबक हिस्सा मे नइ छै, मुदा खेतीक मूल साधन
पानि कैँ ओ कृत्रिम रूपे बनौलक। इम सब होवक
इतिहासिया पर अपन सम्पन्नता गर्वित रहलौं, अखनो
गर्व छी। जँ सेहो नहि रहल तँ दुनियाँक कोनो भूमध्य
सागरीय जलवायु किछुए ने छैए मुदा जेते लागत
खेतीक उपज अछि, चाहे अन्न हुअए कि तीमन-तरकारी,
फल-फूल हुअए आ कि गाए-महींस, अपना इलाका मे
उपजौक थकित छै ओ दुनियाँ मे केतौ ने छै तैँ
मिथिलांचलक माटि पूजनीय अछि। जे अपन बात अपने
नै बुझत तँ ई अछि दौड़ा-दौड़ी दुनियाँ मे केकरा ओते
फलरबैत छै जे अहाँकेँ बरकत बुझि देत। लोक सिनेमा
स्टारक पंजी बनौलक, खेलवाड़ीक पंजी बनौलक आ

पृ० ३

अपन- बाप दादाक आ कि अपना गाम-घरक।

हरिहरपुरेक दू भाए- मैथरीक परिवार मे सुपतलाल आ कुपतलाल। ओना असलि ओ परिवार सबसँ नीक गाम मे मानल जाइ-ए मुदा हेहर बोनिहार परिवार मे दुनू भाँइक जन्म भेल। बोनिहार परिवार रहितो माए-बाप सुविचार; तेँ आने गरीब परिवारक बच्चा जेँका रहितो, केना बच्चा सियान-चेतन बनि जिनगी बितौत, यएह सुविचारी दुनू परानीकेँ।

बच्चे सँ दुनू भाए मेहनती, जे पिताक देखा-देखी सँ सीखलक (सीखने)। बहुबैयाक धिया-पुता जकाँ प्लास्टिकक खेलौना नहि जे खसिये फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना। ओना बहबैयाक हाथ गाँमाक बीच अएल सम्पत्ति (जमीन) सँ नमहर निसाँस छुटल मुदा तेहल (जमीनक) बाढ़ै त रंग-रंगक बिहंगरा अछिये। एक त ओहिना घटबी होएत। होएत खेत (जमीन) कम घटू बनि गेल, तइ पर घटबी होइक उपाय नइ भेने ओहुक मनो छोट भेल। केना ने घटत। अही कहू जे धान गेहूँक अछि, खादक पाइ नहि अछि, रोपैक ताक सहारन आ उत्पादके कारण खाकी मन (विचार) नहि अभाव (अर्थक) सेहो सहयोगी बनल। खेतक संग मौसमी पानि (बरखा) आ उर्वराशक्ति बढ़बैक (लागत बढ़ै के) छाउर-गोबरक संग अपन पुरान पद्धतिक बीज बपन (बीआ बनाएब)।

(घरबारी-घरक)

अर्थो सँ अपना ऐहमक गृहपति गृहस्त गृहक सब अरिजा सब कलाक सँ सम्पन्न छला तहिना दुनियाक बीच अपन कला-कारी रखितो छला। खेतीक पूर्णताक बीच छलनिहेँ। जे कोना अन्न उपजबैत छला, आ कि तीमन-तरकारी आ कि फल फलहरी, ओकर बीन सँ फल चढ़िक बीचा छलनि। ओना एक रसाइ बूरि केँ जे समयानुकूल, जोड़ाइ ओजार जकाँ पाइन (पनिओरा) नइ चढ़ैल जाएत त ओ मोतिया जाएत। मोतिआएल मोतिआएल एतै मोतिया जाएत। तेँ अपन चीने पद्धतीन समाप्त (समापत) कऽ जाइत। मात्र घर-घरारी छला सुपतलाल पिताक बर्तोल बाट पकड़ि पौसिया गाय बच्चे सँ पोसब शुरू केलक परिवारक खर्चेक भार पिता पर। जहिना बिद्याध्ययनक लेल माता-पिता बेटाक (बच्चाक) अपना लेल सभ दइ छथि तहिना सुपतोलाल दुनू भाइक लेल पिता देखासिन। जहिना पाँच बरख चढ़िते गारजनोक नजरि आ आरो अभिभावकक नजरि विद्यालय दिस बढ़ैत तहिना सुपतोलालक पिता नजरि गेलनि। आजुक समै जकाँ त नहि जे आनोँ आन देशक ... कमा कऽ खाएब केत। एओना बोली-चाली नइ सीखब त कमा कऽ खाएब केत। दुनू भाइक उम्र मे तीन बरखक अन्तर, मुदा ...

पृष्ठ-६

उमेर ओते महत नइ रखैत जते संगी बनि काज संगोइँत चली। (उमेर चढ़ैत पुरि)
पनरह बरखे पुरैत-पुरैत सुपतलाल अपन पोसल गाइयक
सेवा सँ पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सब वस्तुक दाम (रुपैया
मूल्य) कम तेँ तीनिये रुपैये कट्ठा पाँचो कट्ठा जमीन कीनलक।
जइ दिन पिता (सुपतलालक) पाँच कट्ठा जमीन बेटाक देखलनि
तही दिन परिवारक मन भरैत देखि भगवान कैँ प्रणाम केलनि।
आजुक महगीक दौर मे कोन-वस्तुक मूल्य आगू मुहेँ दौड़ रहल
रहल अछि आ कोन पाछु पड़ि रहल अछि, से कहए पड़त।
ओना मोटा-मोटी सब वस्तुक मूल्य (पाइक रूप मे) बढ़ि
रहल अछि। तेँ अपन उपारजित पूँजी कैँ घड़ाघर नइ
बनाएब त चिलहोरिया उपरे सँ झपटि लेत। झपटि केँ लेत
जे अपनो हिया खोलि झपटबे चाहैए छी। आन गाम जकाँ
ने हरिहरपुर अठारह गंडा पोखरि बला अछि ने कोसी-कमलाक
भरैन करल गाम जकाँ, जे एकोटा पोखरि कुमड़ैये उपनैत बिलाइ गेल।
नहि। तइ दुनू सँ हटि हरिहरपुर मे तीन भागक
पोखरि कमलाक भरैन भऽ गेल आ एक भागक तीनू
पोखरि बँचल अछि। ओना नहि हरिहरपुर वलाक विचार रहनि
जे गाम चपगर अछि तैँ जँ गामक चौआइ पोखरि रहुना
(आएत) गामक मुँह-कान नीक भऽ आएत। गामक मुँह-कान
कि? ऐह ने जे वासभूमि मे पाइनिक जमाव नइ हुअए, वसात
बरसाती मासक तरकारी जेँ चौमास हुअए, फुल-फलक गाछी-
(गाछी-कलम) ओसतम अबैक जमीन होए, तहिना
आरो-बारो। मुदा गामक पंजी बनबैत-बनबैत एते औकि
अटकि जाए छलनि जे अठारह गंडा पोखरि कते रखबाक
गामक। तइ संग दोसर प्रश्न उठि जाइन जे सौंसे गामक
मे जते पाइनिक जरूरत अछि ओते कऽ पहुँचाएब। मुदा
गाममे बेसी मुँहगर-कनहगर नहि तेँ दसे-बारह टा
पोखरि खुनौलनि। → हरबाही (खेतक) सीखैक विद्यालय गामे-गाम, बाधे बाध। जइ हरबाह-बाप, बेचहा सँ हरबाही सिखा देत।
पनरह बरखे पुरिते सुपतलाल हरबाही सिखलक। अपन
गाइक बच्चा सँ बड़द बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल
अपना उपर लेलक आ कुपतलाल कैँ गाइयक भार सुम्हा
देलक। एकर माने इ नइ जे काज मे कटा-कटी
भेल। हर काजक जिम्मेदारक रूपमे जिम्मेदारक खगता होइ छै, तइ
डिपार्ट। ओना दुनू काज परिवारेक भेल तेँ परिवारक सभ
काज पर सबकेँ नजरि रहै पड़त, नइ त कमी ओकर
संभावना बढ़िते रहैत रहत।

कथा - अप्पन-वीरान - क्र० ५

हरबाही- सिमटने सुपतलालक परिवारमे तीन आमदनीक, तीन टा बाट खुजल। पहिल हरबाही सँ बाहरक आमदनी, खेपट्टा आ खेतिहरकेँ (खेतीकेँ गाछ) संगी बनने खेतीक संभावना बढ़िते अछि। बटइ-बँटैया। ओ सभ कि ओहेन भठिआइ गेल छथि जे एखनो ने कुकता जे बराबर खेत ओकरो ने देब नीक जेकरा समांगक संग हरबड़ह अछि। ई तँ नै ने एजे कन्याकुमारी सँ कश्मीर आ कश्मीर सँ अरुणाचल सड़क बनाएब, मुदा प्राकृतिक काज (सड़क बनेबाक) छिट्टा-पथिया सँ होए। मुदा छिट्टा-पथियाक काज तँ गामे-घरमे होइते अछि जे पार नै लागि रहल अछि आ, हिस्सी जकाँ मेघ टेकब! गाम-घरमे आंगनो ओहेन घरक कमी नै अछि, जे आँगन सँ दरबज्जा आ दरबज्जा सँ आँगन जाइ-अबैमे बाहरक भसिआ पड़ैत अछि। कन्याकुमारी सँ कश्मीर-अरुणाचल सड़कक जरूरत अछि, मुदा गाम-घरक बाधक (खेतीक जमीन) ओहेन अछि जे दसो-बीसो बीघा जमीन ओहिना समतल नै अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

सुपतलालक भाग जागल। गाममे हाही भेल। ओहेन हाही भेल जे गामक उपजाबाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो धनि-मलिन नष्ट भ' गेल। अहू सँ बेसी गामक गाए-महींस बड़द मरि गेल। ओना सुपतलालक भरल मुहेँ खूँटापर सात-पाँच माल रहने पाँच टा बेचल। अगिलग्गी पद्धति, रौदी-दाहीक पद्धति, जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एके-दुइये गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मनखप लेलौं, सभटा खतम भ' गेल, रौदी-दाही भेने अहाँकेँ पुँजी (खेत) तँ चौरखेड़ हेऽ समुद्रमे नै चलि गेल, मुदा हमर कपार तँ चलि गेल। बिचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा मासमे सकुगौरे सँ लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजा पछाति अनुमानित कूत (उपजा) निर्धारित हएत, सभ हेतु अपन-अपन नजरि रहत। पाँचो बीघा गोरहा खेतमे, कर्मो पहिने भेने गामक चारु भागक पानि बढ़ि कऽ चलि अबैत, जइ सँ आम बाधक जमीन सँ बेसी सुविधा भ' जाइत। सुपतलालक भाग जागल।

पृ० - ८८

मनरवप बटाइ सँ पहिने सुपतलाल कें अपन हीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठा कें बरहमसिया खेती जोकर बनौने सिया ई जे तीनू मौसमक तीनू फसल उपजौत। ओना हरि अनंत हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्क अनन्त अछि। ईहो नै ग' सकैए जे बरहमसिया गाछीए कहि जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैत जे बरहमसिया ओहा कहबै जे साल मे एक बेर उपजा देत। मुदा तेहा मानब उचित हएत। उचित तँ ईएह जे बारहो मास ओइ मे श्रम कएल जाए आ बारहो मास उपज आबै। जँ से नै औत तँ खाली समै मे, जइ समै उत्पादन नइ हएत, उपजौनिहार जीवित कोना रहत? तेकरो तँ उपाइ करए पड़ितै। खैर जे होउ! सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीन कें धरोहर बुझि उपजबैए लगल। गणगुन किसमक जमीन पाँचो कट्ठा मे तरकारी उपजबए लगल। एतेक उपजा होइ जे अपन परिवारक भोजनक अधाक संग नगदो-नारायणा अबैत जाइत।

एक दिन दुनू भाँइ (सुपतलाल - कुपतलाल) घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। रौदियाह समए। दस बजेक पछाति बाध मे लू चलए लगैत। गामो-घर देस ऐहेन सबहक गाछ पत्ता झड़कि-झड़कि अध सुखु बनि गेल। रौदी बाध मे डीहबारक दरस नैहि रोड सँ निकलिते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देखि सिहरि गेल। कुपतलाल बाजल - 'भैया, गाम - बीरान मे गेल। अपनो ने बीसनसाइ भ' जाएत तँइ गामक गाछ-विरीछ आ कि जीब-जन्तु कोना ठाढ़ रहत?'

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बौंहि पकड़ि कहलक - 'बौआ, से कोना बुझै छहक?'

सुपतलालक प्रश्न उत्तर दइ लेल जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करैत रहिना जेठ भाँइक प्रश्न सुनि कुपतलाल बाजल - 'भैया, जखैनि खेतक अन्नै आ कि आनो उपजा नै हएत, तखनि लोक कोना जीवित रहत? बिना कोयला-पानी सँ तँ लोहो चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। जाबो लोक प्रसाद पबै बला।'

कुपतलालक ओझराएल जिज्ञासा देख सुपतलाल बाजल - 'बौआ, अपने दुनू भाँइ छी, आ ई दिआदिनी आँगन छी। चारु गोरे कें अपन-अपन जिनगी ...

अधि पृ० ६

मिलौक काज छै। तहिना ने...

'हँ से तँ छैहे अछि?'

'अपना कुनु माँटि कैँ एतबे कुनु काज छइ। जँ अपन काज पर ठाढ़ हेबइ तँ अहाँ भक्त कुमाल जकाँ हेबइ, नइ जँ पकियो अहाँ फुसा लेबइ तँ सोलहनी हेबइ। भेद-अभेद भेटा जाएत।'

'हँ, से तँ ठीके भैया?'

'बौआ सुनह, जे बात हम कहै छी, ओ तोरा कहला पद्धतिये ने बहुत कुरअरइछ, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात।'

'हैं से तँ ठीके?'

'बौआ- आब तँ सहजे कते दिन सँ खेती ओ छी, मुदा ओहिया नहियेँ कोते रही तहिये सँ ओसो नहरि सुनै छी जे गामे-गाम नहरि बनत, बिजली डैम सँ बिजली बनतै आ ऐहनामक किसान के कारखाना जकाँ चौबीसो घंटा खेतीक काज चलतै।'

'भैया, ई बहुत भेल, दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नइ तँ भगवान सँ एकाकार केना हएत।'

'धुर बुड़िबक, एहिना कुनु छीही, जहिना कारखाना मे चौबीसो घंटा काज छै तहिना खेतियो मे छइ। खेतेक उपजा सँ चौबीसो घंटा कारखाना चलैत ए।'

कृपनारायण जेना अकादि गेल। अकछ्लो केना ने ओकरा आते ओकरा समए छै बाजल- 'भैया, अपन घड़ी-घंटा बजा अपना मंदिर मे पूजा नइ करइ तानै तकु तेहेन तेहन घड़ी-घंटाक अवाज सुनैत रहबइक जे अनेरे कान मे तेते झड़ पड़तइ जे काने कड़ा भेतइ। कानली-कामली बनि अनेरे औना लगतइ।'

कृपनारायणकेँ अकछाइत देखि सुपनारायणक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे मने समरथ मन आ समरथ बुधि छै तेहेन अनेरे भरि दिन तास पर (तासक खेल पर) बैसि रुपैया के (उत्पादन कैँ) कागज बना देत। जरबने अन्न-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सबटा रुपैये बनि जाएत। तखनि कोन जरूरी (खगता) छै जे खेत सँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रस्ते-पेरा...

पृ. ८

गामक ओहन परिसर सुपतलाल- सुपतलालक बनि क' छल, जेना
जे अद्भुत ओहन स्थान जकाँ सहजहि हजारो मंदिरक बीच
गोटे दोनो अद्भुत (अद्भुत) छैक। छैक किसान परिवार।
सुपतलाल दुनू भाए सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्का-
चक्कर मे पड़ि नीक कैँ अधला किछु बनाएब। ने हरबार
धड़ब आ ने दरबारी लाल बनब। मुदा तैँ कि सुपतलाल
गाम कैँ छोड़ि देलक। नै छोड़लक, गामक किसान आबतो
देहनगर किसान कुइर पुसा-ढोली; सबौरक किसान मेला
मे गामक किसान संग जाइते छथि। सालो भरिक डायरी,
खेती-बाड़ी बीक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक
औजार पत्ती अनिते छथि। ओना गौआँक संग सुपतलाल पुरिते छथि
मुदा गाम मे माटि पोखरि, गामक जमीनक किसिम, जमीनक
माटि इत्यादि नै मैने मन कुरकुराइते छनि। गामक
छक्का-चक्कर कैं ओ धुआँ बनहु हागर जकाँ बुझै छथि।
कतौ चाहे देवालय मे चढ़ाउ चाहे भोजनालय मे दुनू ठाम
देखक जनता चरितवान इमानदार अछि तँ कते सरकारी महकमा
चरित्रहीन, आ केतो सरकारी महकमा चरित्रवान अछि
तँ जनता चरित्र हीन। तैँ कि ओहन नै अछि जेहन
ठाम दुनू चरित्रहीनो अछि आ चरितवानो। अछि! जेहन ठाम
अछि तेहन ठाम जिनगीक ऊँचाइ दुबि रहल अछि जेहन ठाम
नै अछि, माटिक धरतीक इर्द-गिर्द घुरि कोल्हुक बड़द
जकाँ घुमि रहल अछि। उपाध्याय आ आचार्यक भेद
मेटा गेल अछि। देखक बहुत नहीकेँ जोड़ि पटखेतीक
पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा बनौल जाए, मुदा
बिपटाक साए रुपैया, किछु ओहि मे गेल, किछु तइ
मे गेल, रुपैया भेटि गोल, एकके बेर सब कहियो
'हरिबोल'। बिहारकेँ समस्या कहियो नइ बुझल गेल
जे खाली बिहारेक पनि चलाउ धारकेँ ढंग सँ पुब सँ
पच्छिम बढ़ि जोड़ि देल जाए बा आ समुचित देख
रेख होइ तँ कि कि बिहारक सिंचाइ खेतीक समस्याक
समाधानक एक बड़ी हइत कि नै?

समै बीतल। अधकमेरे मे सुपतलाल बीमार पड़ल।
एक तँ गाम-घरक जिनगी तै प इलाजक नीक सुविधा
नहि। आठे दिनक बीमारीक पछाति सुपतलालक मन कनी-

कथा - अप्पन - बीरान, पृ०-5

चोरबेड़ै लागल। चोरबैतेन मन मे भेलै जे ऐ अन्है कौंचाक माटिक देहक कोनो ठेकान अछि। कहलनि कुटि भाएत। आ कि पहिने कुपतलाल कें संग सबहक एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सबहक कें दइये देबह। अनेरे मरैकाल माथा पर एकटा बोझ चढ़ल रहत।'

अखनि धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहेन आज्ञा पालक छल ओ जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे करैत आ ओतबे खैत। ओना बड़ भाइक प्रति पूर्ण समर्पण! ओना फल अधला कुपतलाल कें भेल। भेल ई जे कुपतलाल कें कहियो कोनो काज कें करैक (परखैक) रगता नै भेल। जइ सँ सबमे काजक धुरि रहितो ठनइकलाह - उपरलहाक गामक इतिहास नहि बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारके मने उचटि गेलनि जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँ मे अछि।

परिवारक सबमे समांग एकठाम भेल। ओना जइ से सुपतलाल तीन भैयारी सबहक हिस्सा मे आबि गेलइ। मुदा परिवारमे परिवार धरि आपसि एक-दोसरक दुख-दर्द (नीक-अधला) दोसर नै बुझि अपन बनौने तथापि परिवारक गाड़ी केना ससरैत। अन्तिम पत्नी (सुपतलालक) बजली- 'सब दिन ओछाइने पकड़ने रहब आ कि उठबो करब?'

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइ सँ पहिने सिपाही बाटे मे घेरा जाइ-ए तहिना सुपतलालक मन घेड़ा गेल। जिनगीक संगी। जे गाड़ीक एक पहिया रहने चपचपक एक संगी बिनु हेने केतौ फेका जाइ-ए, तहिना सुपतलालकें गुम-सुम देखि कुपतलाल बाजल- 'भैया, राजा-रैयतकें कोनो ठेकान नै छै, जैते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलह से जोतलह। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरले बुझिहह। धुरि ने हमरा देखह, बुझिते तँ तोंही भैने जेबह तखनि खाली टीन ढनढनौने रहत?'

सुपतलालक आ कुपतलालक बेटा बी.एक विद्यार्थी। तीन मास पछाति परीक्षा हेतै, स्नातक भइ जिनगी शुरू करत। अपन आकार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजो (सुकामलाल आर कुकामलाल) बीच बाजल- 'बाउ अखनि धरिक परिवारक गाड़ी खिंचलौं। जे बीमारी सँ

त दुओ नीक, जे नइ सेहत तेँ ओ नीक। जे सभ्हि बीतल ओ अहाँ दुनूक
भेल, जे आयु आदि ओ प्रतिकूलताक भेल। अपनो मन कहै ए जे। एतेक ओ अहाँ दुनूक बीच प्रतिकूलताक संग
की, अपना जनैत ओ त एलौं, एतेक नजका स्नातक बना परिवार के ठाढ़
गाड़ी अनुकूल रहा। मनुक्खक कोशिश चौरिखा नइ देलिऐ। पिचिलौं, मनुख बनि जे आएल ओकरा मेँ नइ देलिऐ।'
मुदा दुनू भाइकेँ देखि एतै त मन खनहन अछिये जे अगिला
गाड़ी खिंचनिहार परिवार मे गडुम्बे गेल। कते परिवार गाम मे
अछि जे तोरा सबहक अहाँ जकाँ कौलेज मे पढ़लक। मुदा अपन
बिचार, अपन काज अनका पर लदैक नहि अछि, देखबैक अछि
करैक अछि। बस एतबे कहब कहै छी।'

सुगमलाल बाजल- 'बच्चू, अहाँ बिचारै कि छी?'

सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजरि सँ सुगमलाल
दिस तकलक, ओहो त कौलेजे मे पढ़ै ए। किछु त अपनो बात जोड़त
मुदा परिवारक अर्थो सँ अनेक परिवार क जेठ-छोटक बिचारक संग बिचार
नइ मिलैबाक चलनि रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप
मानल गेल। मुदा से नहि बाबूक बेटा सुपतलाल, मन मे उठलै दुनू
भाए बिचारि कऽ कहब। तेँ कोनो बिकार मन मे नहि।

सुपतलाल बाजल- 'बौआ, समैक संग चलैक अछि। बहुत
आशा सँ दुनू भाए तोरे सब ले खेत कीनलौं। सम्पत्ति
अजलौं। जेँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुर
मे चलि जेतह। बेसी अखन नइ कहबह, अखन तोरा अपन
परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह, जे तोरे
सब दुआरे अपन खेत बनेलौं, नइ त ओही समै मे बैसल
रहितौं (अबितौं) त जमे ने होइत। मुदा जे भेल, खेतीक
जे साधनक अभाव मे कुलो, ओकरा पुरबैत, गामक रूजे
पुरना रहल अछि ओकरा समयानुकूल बनबैत चलब।
खेत ओहन बिशाल गाछ ओकर पाँति रहै, जे जते ओइ मे स्वाद-पानि
त किसानक खतियान चलतै नइ त सरकारी खजाना
जकाँ तमादी हैतह। खना किसानक देखा कहैछी। देल जाएत ओ निशाल से निशाला बनैत जाएत। तेँ लक्ष्मण रेखाक बीच रहि जाबि चलैत रहबाक ताकाति।'

सुगमलाल- 'तखन?'

'तखन येह जे समाजक जेँ जनी जनइत ओ अमरलतो
जकाँ दुनियाँ मे जनी जाइ-ए, मुदा पहिने ओकरा जड़ि
पकड़बै तखन ने?'

कथा - दिवालीक दीप दृ० १

कातिकक पनरह दिनक अन्हारक (सामूहिक) समूहक दिन अमावश्या छी। आइये रातुक पहिल पहर आ दिनक पाँचम पहर मे लक्ष्मीक पुजा आ दिनक छठम-सातम पहर, आ रातुक दोसर-तेसर पहर मे काली पुजा सेहो छी। कातिक अन्हारक दुख-धंधा मे भरि दिन बौआएल रहलौं। साँझक आगमन होइते गोसाउनिक स्थान सँ घर-ओसार, आँगन-दरबज्जाक संग, माल-जालक घरो आ भण्डारक संग जलाशय (माने-इनार-पोखरि)-जलाशयक संग घाट-धारा होइत समुद्रक घाट पर सेहो दीपक जरत। ऐनाम नव पीढ़ी सँ एकटा बात कहि दिऐं चाहैत छी, आजुक कातिक अन्हार नहि जेनाम डिबियाक बदला जगह बिजली बौल लेलक, बहुत-तेहाइत सेहीक जगह सरकारी चाकर-नकर पासे गाम मे छल नहि छल, आइ सँ तीस-चालीस वर्ष पूर्व, जे पीढ़ी आबन अर्द्ध-वयस मे पहुँच गेल छथि, तइ परिवेशक चर्चे छी। अखन सब कैं नीक हस्त अधिक शरीर-मे किछु श्रम शक्ति किछु ऊर्जा शेष छल तहिना दिने अन्ते धरि छल। सूर्यास्त होइ पर आबि गेल। सूर्यास्त भ' होइ पर छल। आनो श्रम कैल शक्ति सेहो शरीर मे शेष छल आ जिनगीक आसीन क्रिया सेहो शेष छलैहे। क्रियाक सरहद नियम। काजक हरहर (सरहद) नियम, ओहो आइयो सेहो अछि। जे एक काजक पद्धति दोसर काज रोपी। से कटबो नियम नहि अछि सेहो बात त नहिये अछि। ओहो त अछिये जे काजक संचनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइ मे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी कर' पड़ै-ए। मुदा ऐनाम नै घटबीक प्रश्न अछि आ नै बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगी के सुचारु ढंग सँ संचालित करैक। जइ सँ समय पर दीपो जरा सकी आ पावनि सेहो मना सकी।

दरबज्जा पर पएर दइते पत्नी बजली- कृष्णदेव भैया, लक्ष्मी पूजाक हकार द' गेला अछि।

बजलौं- 'कहलएनि नइ जे अपनो किम्हरो सँ अबिते हेता, तइ बीच चाहो पीब लेब, मुँहा-मुँही गप्पो भ' जाएत।

'जहिना माछी- मच्छरक नंगा-चंगा कैने मन कछमछाइ पड़ै-ए तहिना कृष्णदेव भैयाकेँ कछमछाएल देखलएनि,' पत्नी बजली।

मन मे भेल जे अनेरे जे फिंगाफ- फाँगि मन मे बन्है छी से अनेरे। सब साल कृष्णदेव भाए कातिकक दिवाली दिन लक्ष्मीक पुजा करैते छथि आ पान-मखान-मिठाइक हकार दइते छथि। जेबो करिते छी। बजलौं- 'और (आरो) तहिना आइयो जाएब।

पृ०-2

किछु बजला ?'

पत्नी बजली - 'रस्ते-रस्ती बजैत गेला जे ऐम्हरें होएत उदयलाल होएत घर पर जाएब।'

मन मे भेल जे साँझुक पहिल पहरक पुजा लक्ष्मीपुजा छी तखन जे अनेरे गप-सप मे समय गमा लेब तखन समय पर ~~नहि~~ पहुँच कैना पाएब। मुँह बन्न कोने अपन साँझुक नियमित क्रिया कैं अपनबैं ~~बिदा होइ~~ मुड़िते रही कि रस्ता पर अबैत उदयलाल पर नजरि पड़ल। जखन कान मे आबि गेल जे कृष्णदेव भाए, लक्ष्मीपुजाक इकारक माद बिऐनाम सँ उदयलालक ऐनाक बिदा भेला, तखन जँ हम कृष्णदेव भाएक सेती इकारक जानकारी द' देबइ त' ओ दुनू सिरे नै ~~लाभ भेल~~ नीक हएत। ~~[illegible]~~

बजलौं - 'उदयलाल, कृष्णदेव भाए ऐनाम आने साल जेँका लक्ष्मीपुजा छिअनि, ~~ओत~~ इकार छइ। पहिल साँझक पूजा छी तेँ समय पर पहुँचै लै आबन बेसी गप-सप नहि करइ। तोहूँ तैयार हुअ गे, हमहूँ तैयार होइ छी। ओतै निचेन सँ गप-सप करब।'

ओना उदयलाल मजकिया लोक छथि, तेँ ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन सँ कठिन आ गंभीर सँ गंभीर ~~छइहे। किअए त गंभीर सँ गंभीर विचार कें मजाक मजाक मे~~ विचार कें मजाक-मजाक मे उड़ाइयो दइ-ए आ पुराइयो त' दइते छथि। उदयलाल अगुताएले मे बाजल - 'परसाद मे पाने-मखान टा बँटता आ कि नवको ~~कोनो~~ किछु बँटता।'

उदयलालक बात सुनि नहला पर दहला फेकब ~~चालब~~ आ बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं। हमर चुपी देखब आ कि अपन मन मे ~~उद्गार~~ उदयलाल कैँ उद्गार रहै से त' ओइह जाने मुदा फेर बाजल - भाए सहाएब, पग-पग पोखैर कैँ जहिना कमला-कोशी खेलक आ पान-मखान के परवासी भाए खेलानि, तहिना आब एकरा ~~आब एकरा~~ किताबे-कैसेट मे रहए दिऔ।'

ओना मन मे भेल जे बाजी - 'किताबो पढ़निहार कि आब छथि आब त' कैसेट सँ बेसी लोक पढ़ै-ए। जेना, शब्दकोष जइ सँ एते त' लाभ भेबे कैल जे मिथिलाक शब्द मे अंग्रेजीक आदि बढ़बे केलै अछि।' मुदा फेर भेल जे जखने किछु बाजब कि ओ फेर तेसर बात चालि देत। तेँ चुप्पे रहलौं। ओना उदयलाल कैँ समैक पाबंदी (पैबंदी) नइ छथि मुदा काजक पैबंदी रहने जिनगीक गाड़ीक गति ~~कमजोर~~ असमसीर दइहे।

पृ.-३

ओना उदयलाल मजकियल लोक चालि पकड़ि-चलनिहार
लोक जेँका हँसी-चौल (चालि) करैत अछि मुदा तेकरा ओ गपे-
मन मे लोक कैँ फुड़ै छै से बजै-ए। गपोक कि कोनो आड़ि-धुर अछि लोकक मन जे
त किछु और (आरो छी) छी ओ त गति-विधिक क्रिया सँ चलै
ए, जइ सँ उदयलालक जेहने बुधि सकताएल छै बाहिना काजो सकताइल
चालिमे छै। काज करै छै, तेँ विसवास पात्र अछिये। ऐ तरहेँ दोख
उदयलाल मे नहि अछि, जइ सँ मन दुखी नइ होइ-छै
सेहो बात नहिये अछि। कोन क्रियाक लेल कते उच्चारण
हुएत से बेचारा मे नइ छै। ऐ एकर माने ओ इस्कूल काॅलेज
नइ देखलक सेहो बात नहिये अछि। हँ, एते जरूर छै जे
व्याकरण नइ पढ़ने भाषा-बोध मे कनी कमी
रहिये गेल छै। ओना ओ पत्रिका मे पढ़ने छल जे अरस्तू
लग सँ भाषा, आ समाजक विचार होइत आएल, जे
कैहेन शिक्षाक खगता समाज कैँ अछि जइ सँ ओकर जिन्दगी प्रगतिक पथ पर गतिशील रहत। मुदा खैर जे अछि, तइ सँ उदयै-
लाल्हे आ कि अपनो कोन मतलब अछि। मतलब अछि
आँगुका जे कथा अछि तइ मे कैना समय पर पहुँच पूजा मे शामिल
हुएब। जेँ उदयलाल कैँ दरबज्जा पर छोड़ि अपने चलि जाइत, सेहो
कैहेन हुएत। हँसी-खुशी सँ उदयलाल अपने नै आगु बढ़त।
तइ बीचेँ उदयलालक प्रति दोसर विचार उचीड़
कैँ मन मे चिड़ै जेँका पाँखि फड़फड़ौने खसल।
आगु मे खसैत (मनक आगु मे)। विचार सँ मन तिलमिला
गेल। तिलमिला इ गेल जे उदयलाल सन नवजुवक
जे आजुक युवाशक्तिक अंश अछि ओ त जहिना भगवानेक
अंश जेँका तँ जीव, अ युवो मे युवाशक्ति अछिये। चाहे जे हुअए मुदा
उदयलाल समाज मे काजक विचारकेँ बिकुछबै मे लागल अछि, काज
सँ बेसी विकुछबै मे लागल-ए तैँ कालक दोख
देखी त अछिये मुदा झड़-झड़ाइ लोक त ओकरा नहिये कहल
जा सकै-ए। जड़-झड़ाइ जेँका उदयलाल थोड़े अछि, जे समे
अबै सँ पहिने फुटि कैँ तैयारो भ' जाइत-ए आ पकै सँ पहिने झड़िये जाइ-ए।

पृष्ठ- ४

संजोग बनल उदयलाल बाजल- पाँच मिनट मे तोंहु तैयार भ-जा आ हमहु तैयार भ' जाएब। मुदा तैयार भेला पद्धति हम तोहर रस्ता नइ तकबह। सोंझे कृष्णदेव भाए ऐठाम ~~विदा हैब~~। 'चलि जेबह।'

ओना उदयलालक समयक बान्ह ओते सक्कत नइ बुझि पड़ल, मुदा संजोगो त संजोग छी। जँ कियो ओकरा रस्ता मे एतबो पुछनिहार भ' जाए जे भाए, बड़ अगुताएल देखै छिअ, तेकर जबाब ओ आबन तक देत तेकर ठीक नहि छै तैँ बान्ह हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा जँ कियो नइ भेटतै त जहिना बाजल तहिना ओ आगु बढ़ि कृष्णदेव भाएक दरबज्जा प पहुँचते दरबारी (घरवाही) बनि बोकिऐबो किनै। नइ कात सेहो बात नहिये अछि।

पत्नियो सब बात सुनि मने-मन अपनो काजक (कियाक) आ हमरो काजक गोरा-गपसा बैसाइये नैने हेती। जँ किछु अवरोध मनमे होएतनि त बजबे करितथि से किछु नहि आबन धरि बजली। एकर स्पष्ट माने येह ने भेल कृष्णदेव भाए ऐठाम समय प पहुँचबक आदेश दइये देलनि।

जहिना पाँच मिनटक समय उदयलाल देने छल तहिना तैयार भ' घर सँ निकललौं। ~~उदयलाल~~ ओना कहब जे उदयलालक घर कृष्णदेव भाएक घर सँ लग अछि तैँ पहिने पहुँचत, सेहो बात नहिये अछि। किअए त जते समय हमरा ऐठाम सँ उदयलाल कैं जेबाकाल लागत ततबे समय ने हमरो जाए मे लागत। मुदा समय त ओइ सँ पहिने निर्धारित भ' गेल, तैँ मोटा-मोटी दुनू गोरे कैं एकै रंग समय भेटल।

जहिना कृष्णदेव भाए ऐठाम हम पहुँचलौं तहिना उदयलालो पहुँचल। दरबज्जा पर पहुँचै सँ पहिले दुनू गोरेक भेंटो भ' गेल। संगे दुनू गोरे दरबज्जाक अगनेय मे प्रवेश केलौं। कृष्णदेव भाए कैं देखलऐनि जे दुनू परानी हल-चल, हल-चल कऽ रहला अछि। ओइ हलचली मे दुनू परानी मे सँ किनको नजरि हमरा दुनू गोरे पर नहि पड़लनि।

दिवाली कथा — दिवालीक दीप — पृ० - ५

ओना अपना कुर्सि पड़ल जे दुनू परानी कृष्णदेव भाएक नजरि नहि पड़ल। मुदा उनुका मन मे इहो भेल जे सबकेँ अपन-अपन नजरिओ संग आँखियो त अछिये। जइ सँ सोलहनी इहो मानि लेब जे हुनका (कृष्णदेव भाए) नजरि नइ पड़लनि सेहो केना मानब? आँखि रहितो कियो चश्मा लगा दैत छै आ कियो बिनु चश्मेक ओकरा सँ बेसी देखैत छै। मन असमंजस मे पड़िये गेल। मुदा तइ बीचे मे उदयलाल बाजल - 'गौरी भाए, भरिसक कृष्णदेव भाएक नजरि अपना सब पर नइ पड़लनि।'

बजलौं - 'केना बुझै छहक?'

उदयलाल बाजल - 'जहिना अपना सब हुनका भेलियै तहिना ने कृष्णदेवो भाए हुनका भेला। जँ कनियो नजरि पड़ल रहितनि त ओ जरूर किछु ने किछु करितथि।'

उदयलालक विचार सुनि अपनो मने मानि गेल। फेर भेल जे कृष्णदेव भाए कारबारी छथि हुनका नजरि नहि पड़लनि मुदा अपनो दुनू गोरे त समाजक संग हकरियो छी, तखन किअए ने अपन हाजिरी (उपस्थिति) हुनका लग दर्ज करा ली। बजलौं - 'उदयलाल, अपना सब आनि कँ कतौ चुपेचाप बैस जाएब सेहो नीक नइ हएत, तेँ अपन उपस्थिति दर्ज करा लाए।'

उदयलालोक विचार मन मे सेहो विचार ठीक रहल छलै, स्वीकारैत बाजल - 'कृष्णदेव भाए लग चलि कँ चेहरा देखा देला पछाति कतौ बैसि कँ गप-सप करब।'

आगू बढ़ि कृष्णदेव भाए लग पहुँचलौं। उदयलाल तइ बीचे मे बाजल - 'भौजी (कृष्णदेवक पत्नी) भाए साहएब (कृष्णदेव भाए) अ हाथी चढ़ि अहाँ गोर पुजने छी जे भौजी सन संगी हाथ लागल।'

ओना कृष्णदेव भाए पत्नी दिसि तकलखिन मुदा मुँह सँ किछु बकार नहि फुटलनि। बजलौं - 'भाए, कते काज पछुआएल अछि।'

कृष्णदेव भाए बजला - 'समयानुसार काज अपन रस्ते पर अछि, मुदा सूर्यास्तो होइ मे दू-चारि मिनट बाकी अछिये।'

Ajanta Officer

पृ०- ६५

उदयलाल बाजल - भाए सहाएब, ऐनाम हमरा सबकेँ रहैत अहूँ दुनू परानी केँ काज मे (पूजाक तैयारी मे) विघ्नुत हएत आ हमरो दुनू गोरे केँ शर्म हएत जे जेठ भ' क' कृष्णदेव भाए दुनू परानी खाटि रहल छथि आ हम सब ठाढ़ भेल मुँह देखै छी।'

कृष्णदेव भाए बजला -' तोहर कि विचार ?

उदयलाल बाजल -' अहाँ, दुनू परानी अपन पूजाक तैयारी करु आ हम दुनू गोरे दुआर (गेट) पर बैस हकरिया सबहक आगवानी करब।'

कृष्णदेव भाए किछु ने बजला। बुझि गेलौं जे आदेश भेँट गेल। दुनू गोरे अगनेयक (दरबज्जाक आंगन) मे कुरसी पर बैस गप-सप करै विचार केलौं। ओना गप-सपक क्रम मे उदयलाल कबनो-काल फुफुआन जेँका बुझि पड़ैए मुदा वास्तव मे ओ गहिंरगरो अछि गंभीरगरो त अछिये। बजैक ढंग ओ बदलने अछि। सदि-काल हँसि-हँसि बजनो करै-ए आ गंभीर-सँ गंभीर विषय केँ हँसियेः मे उड़ाइयो दइ ए आ पुराइयो त दइते अछि।

सुर्यास्त भेल। बिजलीक इजोत सँ सौंसे जगमगा गेल। कृष्णदेव भाए सेहो घर-आंगन मे बिजली लगौनहि छथि। तइ मे आइ बेसी ओरियान सेहो कैनाइ छथि (केने छथि), बजलौं -' उदय, बुधि बपजेठ होइ-ए। भलें तूँ उमेर मे छोट छह मुदा तूँ बहुत होशियार छह। लोक सभ मे हँसि-हँसि केँ बाजि लइ छअ, मुदा---?'

मुदा सुनि उदयलाल जेना एकाएक गंभीर भ' गेल, जेना ओकर गंभीरता हृदय सँ ऊपर आबि गेल होए, अहिना धरती मे गंभीरता ऐनाः ओकर सृजनशक्ति एते क्रियाशील भ' जाइ-ए जे ओइ मे आँगक बीआ छीटू आ कि बधुआक, ओ बड़बड़ा केँ जनमि जाइ-ए बाजि उदयलाल मे सेहो बुझि पड़ल। उदयलाल बाजल बाजि छथि, किछु ने मुदा अहिना करिमाएल मे रहल अछि घसमुद्र मे लचैक अपन संगी (समुद्र सँ उठैत बादल) पकड़ि संगे

पृ॰-6

विदा होइ-ए तहिना बुझि पड़ल। बजलौं- उदय, बिजली बौलब इ दुजोत कैं दिवालीक दीप-...?'

जहिना समुद्र मे जुआरि उठै-ए, धार मे बाढ़ि अबै-ए, पोखरि इनार मे उद्धाली अबै-ए तहिना उदयलालक मन मे (अगारि) उठल। बाजे लगल- 'भैयारी, तखन ने भै भय-अरि (भय+अरि) होइ-ए जखन सब भैयारी एकमुँहे एक बोल बनि एक-एक काजो करैत आगू मुँहे दिसक दिसि बढ़ब। नइ त कतौ हृदय मे दीप जड़त आ कतौ बौल (बिजली) इजोत प्रकाशित करत। जँ इ दीपक पावनि तर पड़ि जाएत आ प्रकाशक पावनि जगजिआर होएत रहत।'

ओना धरमागती बुझी त उदयलालक विचार सोलहनी नइ बुझलौं, मुदा ओकर बाणीक जे प्रवाह रहै ओकरा रोकि दिशा-हीनो करब नीक नहि बुझि बजलौं- 'हँ, से...?'

जना हमर बात कैं अधडरेड़े पर उदयलाल लोकि लेलक। जहिना चीपल ताना पाइनिक छिरका कैं रोकि लइ ए तहिना। ओना कहब जे पानियो सँ पातर (मेही) ओस होइ-ए जेकरा दुबि अपन मुँहक अमृत बना माथ पर धरि रहै-ए जाधरि सुर्यक अर्घ नहि लइ छै-ए। मुदा से सब बात नहि छल, अपना मन मे अपन पावनिक बनल छल। जे दीपक ज्योति आ

उदयलाल बाजल- 'आइ कातिकक आधा कातिक। दिवाली अमवसिया (अमवासिया) छी। कातिक कैं लोक तेरहम मास कहै छै-ए। किअए? कौनो मास सँ गिनती शुरु कैल पद्धति ओ मास तेरहम भइये जाइ-ए।'

मन मे जेना घोड़दौड़ शुरु भेल, तहिना दुसए लागल। हिसाब त ठीके उदयलाल कहै-ए मुदा बुझल त कातिके टा अछि, जेकरा लोक तेरहम मास कहै-ए। मुदा त अपन विचार कैं नहिये बाजब नीक बुझलौं। किअए ने उदयलाले अपन पनचैती अपने करैत चलत। मुदा उदयलालक बात हम नीक जेँका सुनलौं आ कि अनठाएल-मनठाएल जेँका बुझलौं, सेहो त उदयलाल कैं इशारा सँ बुझाएब जरुरी

पृष्ठ-८

अछियै। उदयलालेक स्वर मे अपनो स्वर मिलबैत बजलौ-
हँ, से त कहिते अछि।'

उदयलाल बाजल- कातिक, किसानी जिनगीक ओ मास छी, आबनो अछि आ पहिने त सोलहनी छल, जे बरसातक बिभिषिका सँ तुरत-तुरत उबड़ल [हुए]। बिभिषिकाक अनेक रूप मे घटैत, कतौ धार-धुर इलाका मे धारक कटनिया कऽ-ए त कतौ अन्हर-तूफानक संग झटबाहि कऽ-ए जेकर संग, चीज-वस्तुक क्षति कऽ-ए त, कतौ बाढ़ि बाढ़ि गामक-गाम कें मेटा दइ-ए, इत्यादि-इत्यादि। तेँ कातिक कें दू देबर भारी मास मानल गेल अछि। ओहुना फसलक उपजक हिसाब सँ सेहो-चैतिक रब्बी-खरीफक पद्धति उपजक सालक आठम मासक दुरी मे सेहो अछिये।'

तइ बीच कृष्णदेव भाए सेहो आंगन मे आबि बजला -' पुजाक समय भऽ' गेल, तेँ अहूँ सब तैयार भऽ' जाउ। जखने हम शंख फुकब कि अहाँ सब देवस्थल पर पहुँच जाएब।'

ओना उदयलालक मन मे रहबे करै जे कृष्णदेव भाए ऐठामक पुजा मे शामिल होइ ले एलौ हेँ, तँ ओ अपना उनकर कन्चिकल्प छैमति बिहिते (बिहीतें) जे करता. हम सब तइ मे ने पाछु-पाछु संग पुरबनि।

बजैक क्रम मे उदयलाल मस्त सँ झुमि रहल छल, जहिना संगीतक अंतिम मोड़ पर ऐला पद्धति संगीतज्ञ झुमै लगै-ए तहिना। मुदा कृष्णदेव भाएक वाणीक अंतिम लड़ीक-कड़ी जोड़ि उदयलाल बाजल-' ओहुके पनरहम दिन कातिकक पुरणिमा छी हएत, जइ दिन कातिक अपन अंतिम सीमा पर पहुँच भाए-बहीनिक पावनि सामा-चकेबा कऽ त अगहन दिस (धानक मास धान-धन) अग्रसर हएत।

उदयलालक मुँहक मिठगर बोल सुनि-सुनि मन मे जेना मीठ-मीठ सुआद अबै लगल। ओना मन मे इहो होइत रहै जे कहीं बीचे मे कृष्णदेव भाए ने शंख फुकि दथि जइ सँ आगुक विचारक बाटे ने रुकि जाए। उदयलाल मने-मन छिकिया लेलक जे आबे कृष्णदेव भाए शंख फुकैक सुर-सार करत तइ बीचे मे अपन विचार कें सीमा पर पहुँचा देब। बीचे मे बजा गेल-
' उदयलाल, आइ त अनहरिये पखक (पक्षक) ने पावनि छी

कथा — दिवालीक दीप — पृ०-5 अनहरिया

ओहिना प्रश्न ठेलौं तहिना उदयलाल जबाब दइत बाजल- अन्हरिया
पखक सामूहिक रूपक पर्वक अंतिम दिन पर्व छी। अन्हार मे सब किछु
हेरेबे नइ करै-ए, मेटबो करै-ए। ओहि मे रहैत छी ज्योति
पुंज। जे पर्वक पर्व छी दिवाली दिनक दीप पर्व।'

ओना उदयलालक विचार सुनि मनक कुइ-कन्ह छँटै लागल
मुदा कुहो- काइ कि साधारण अछि ओ त मैल वस्त्र जेँका
अछि, जेकरा जते बेर साबुन लगा धोबै तते ओकर
मैल छँटैत जाएत आ चमक अबैत जाएत। मुदा तइ संग
मन मे इहो शंका त उठिये रहल छल जे तैँ कुहुँ-सुहुँ-
कौ जे समय चाही, जे समय एहि गतिये पड़ाएल जाइ-ए जेकरा
पकड़ि चलब कठिन त अछिये। ओना विचारो आ क्रियोक सेहो
अपन गति अछिहे मुदा से गति निर्भर करै-ए कर्ता पर।
जेहेन कर्ता भर्ता करै-ए तेहेन धरता (धर्ता) पबिते अछि।
बजलौं —' उदय, अही प्रकाश पुंज (दिवालीक दीप).....?'

आगूक विचार पेटे मे छल तइ बीचे मे उदयलाल
आगूक विचार केँ लोकैत बजै लागल —' भाए, पहिल साँझ
लछमी पूजा छी, दिना राति मे कालीपूजा सेहो हएत, आ भोर
होइते गोवर्धन पूजाक आगमन सेहो भइये जाएत। माल-जालक घरो मे आ
बहरो मे दुभि धानक संग फुलो-पात सँ भरल
पूरल बसारक (कोठा-कोठली) पूजा सेहो छीहे।'

बजलौं -' हँ, से त छीहे।'

उदयलाल बाजल -' तैँ कि पावनि बिसरजन भ' जाएत। प्राते
भने दोसर दिन भरदुतिया छी, जे भाइ- बहीनिक भरै-पूरैक पावनि
छी। सब बहीन नौतहारिनी भेली आ सब भाय नौतपुरा भेला।'

ओना जइ सूढ़िये उदयलाल बजै छल तइ सूढ़िये अपनो
नइ बुझैं छलौं मुदा भकुआएल बोध केँ जेना-जेना भक-
पन कमैत जाइ छै आ मन फरीच होएत जाएत छै, तहिना
बुझए लागल, जइ सँ उदयलालक विचार सुनै मे नीक
लागिये रहल छल। बजलौं -' हँ, से त छीहे!'

उदयलालक विचार जहिना सइ भेटल, तहिना सहटैत
सहीट मे आबि बाजल -' भाय, परिवारक आंगनक
बीच आंगन मे अड़िपन सजि आसन ओछा
दुनू हाथ मे सिनूर-पीठार लगा पानक पात पसारि फूल अच्छत पान-मखान

सँ दुनू भाए-बहीन अपन संबंध कैँ पूजित करिते छथि।' बजलौं -' ई त अहाँ सँ पूजित होएत आबि रहल अछि।' उदयलाल बाजल - ई भाए-बहीनक पावनिक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।'

बुझु बजलौं त किछु नहि मुदा मुड़ी जरूर डोला देलियै। ओना उदयलाल कैँ अपन विचार मे सहक-संग समाधन सेहो भेटल होए तहिना भेलै। मुस्की दैत बाजल- प्रातःकाल (माने भरदुतिया क प्राते) सँ छठि पावनिक विधि करण शुरू हएत। माघ-मड़ुआ बाड़ब (बरिआतीक पावनिक गप नहि कहै छी) सँ विधि करण शुरू होएत उगैत-डुबैत दुनू सूर्यक अर्घ्यदान होएत, सामा-चकेबाक संबंधक सोहर-समदाउनक शुरूआतक संग अड़िपनक बीच हर-कोदारि खुरपी, हँसुक संग (खड़ाँउ) खरामक सेहो पुज्य होइत देवत्थानी देवक आगमन बीच देव उठान (देवोत्थान) सेहो होएते अछि। तैकर पछाति हनुमान जन्मोत्सव (जनमोत्सव) सहरले कोशी-कमलाक स्नानक ... सामा-चकेबाक विदाई होएत तैहीबीच कृष्णदेव भाए महाभारतक कृष्ण जेकाँ कातिकक दसहरा शंख फूकि देलखिन। दुनू भाए १ ठाँ कैँ विदा भेलौं।

समाप्त
२८।१०।०१८

कथा - रेहना चाची - पृ० 1

दिन लइसँत किसुन भाए, लौफा हाट सँ घुमै बेर जरकी दीप पहुँचला तँ रस्ता (बाटपर)
पर ठाढ़ रेहना चाची पर नजरि पड़लनि। कोराक बच्चा (प्रपौत्र) केँ
रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत। चाची रेहना चाचीक अवाज
सुनितैसे किसुन भायकेँ सात-आठ वर्ख पहिलुका चाची (रेहना चाची) बुझै पड़लनि मुदा सत्तरि वर्खक
झुर-झुर भेल शरीर, ओ धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ
मुँहक झुराबी देखि शंको भेलनि। ओना सात-आठ वर्ख सँ
किसुन भाय रेहना चाचीकेँ नैहि देखने रहथि तैँ हुँ-नैहि मे
मन फँसल रहनि। फँसलो अपितें देलनि। एक दिन मे तँ राज-पाट उनटि जाइ-ए, सात-आठ वर्ख भेल। मुदा मन वैरागी-वैरागी तरसैत, तरंगी होइत; लड़गैत जे
रेहना चाचीक अवाज छी। जग्गा भरि हटि रस्ते (बाटे) पर साइकिल
दस दहिना पएरक भरे ठाढ़ केने, रेहना चाची पर आँखि गड़ौने
मने-मने विचारिते छला कि अनायास मुँह फुटलनि-
'रेहना चाची ?'

रेहना चाची सुनि चाची बच्चा पर सँ नजरि उठा चारू
दिस नजरि खिसौलक खिड़ाबलनि। दहिनबारी भाग साइकिल
पर ठाढ़ भेल पर नजरि पड़लनि। चेहरा सँ चिन्ह (चीन्ह) नै सकली,
मुदा कान मे किसुनक अवाज ठेकलनि। अवाज ठेकिते बोल
फुटलनि - 'बौआ, किसुन छी ?'

'बौआ किसुन' सुनि किसुन भायकेँ जी मे जान एलनि,
जान अबिते जीह पर रखल तीस वर्ख पहिलुका रेहना
चाचीक रूप-रंग-बोल ठेकलनि। ओहे (वैह) रेहना चाची
जिनकर जिनगीक दुनियाँ दहिन भाग लखनौर उत्तर बेरमा
पूब कछुबी (कछवी) आ पछिम सुखेत धरि देखलनि। ठैह देखलनि
हुनकर कर्मभूमि आ दीप देखलनि पतभूमि। (पतिभूमि)। एक तँ
ओहुना दीप ओहन गाम अछि जइ मे छोटक घराड़ीओ
घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइ सँ रस्तो-पेरा (बाटो-बाट) घरारियेँ
बनि सुरख ऐ-ए। पहिने घराड़ी पर घर रखलाने
जाइ-अबै से आकि चलै-फिड़ै ले बाटक (रस्ताक) खगता होइ-ए। बाटक काज तँ
एक पेड़िओ, खुरपेड़िओ (पेड़ीओ, खुरपेड़ीओ, चुरपेड़ीओ सँ) चलि सकै-ए, मुदा घराड़ी बिना
घर बाँसक खुजा बनि थोड़े रहत एत। घराड़ी भरि
जमीन मे बास बसौनिहारि रेहना चाचीक जीविका व्यवसाय
देखलनि, भोरे अँगना-घरक काज सम्हारि (अपन जवाबदेही)
पथिया मे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक पारस
हिसाब सँ निकलि जा एक अनिया जलता, पैरुआही डोरा,

पैयाही

पृ. २

पेइयाही मूइयाँ लऽ गामक सीमान टपि आन सीमान धरि भरि दिन गमा साँझ कऽ' फेरि अपन सीमान मे पहुँच जाइ छेली। मिथिलाक जे गौरव गाथा अछि दुआर पर आएल बाट-बटोही, मुरखल-दुखल, जे खाइ बेर (जखन जे समय रहै) पहिने हुनका आग्रह करियनि। ओना खाधुरीक अपन- राज-पाट छै। जे से नै छै तँ ओइठामक कोटा (मोजैतक) हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरि-यान, पहिने लोक क' छिमए तँ खवि नतहारी जकाँ तँ नहि। मुदा हिस्सा मे वरवरा तँ लोक निमाहिते अछि। कोनो गाम अबै सँ पहिने रैहना चाची बिसरि जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की। परिवारक परिवारक बीच खाली कारोबारक संबंध नै। घंटा-घंटा बैसि रैहना चाची अपनो जिनगीक आ अनको जिनगीक खिस्सा पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आबैत छेली।

साइकिल पर सँ उतरि किसुन भाइ, स्टैण्ड मे साइकिल ठाढ़ करैत बजला -' चाची गोड़ लगै छी?'

किसुन भाइक गोड़ लागब सुनते ऐने केलनि जे असिरवाद दितथिन, से बदलैया उनटा क' पुछि देलखिन -' बौआ माए नीके छथि कि ने। जहिया सँ गाम छुटल, कारोबार गेल, चीन्हो-पहचीन गेल।

रैहना-चाचीक बात सुनि किसुन भाइक माथ चकरेलनि। अछिना एक जनिया, दुजनिया, बडुअनिया ओदाइनो-बिछोहन चकराइलै आ खेतो खारिहान। किसुन भाइक माथ चकरेलनि जे गाम छुटल। गाम किऐ छुटल। गुम-सुम भेल किसुन भाइ रैहना चाचीक झुर-झुर भेल चेहरा, जेना खेसारी बदामक बीडिया झुर-झुर भेलो पछाति गरदी चटनीक रूप लैत अपन जिनगी चैन सँ गमबैत चाहै-ए, तहिना चाचीक मन फुलकैत। मुदा बिना कुकनों तँ नहिने लोक कुहैत। किसुन भाए पुछलखिन -' चाची, गाम केना छुटल?

किसुन भाइक प्रश्न सुनि रैहना चाची के एको किछिया बिसबिसी नेने लगलनि; जेना नव जीवन पाबि किओ नव सिर सँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइ-ए तहिना, भगिन जमाए पाबि रैहना चाची खुशी छथि।

पृ०- ३

मुदा पेट मे पैरे लौ झगड़ा उठि गेलनि। झगड़ा ई उठलनि जे बीतल
मैजेक्षटल सत बात अछि आ बाजल जा सकए आकि नहि। ओना आब
ओइ बातक कहतो जरूरत नहियोँ जकाँ अछि मुदा इतिहासकेँ काल-खंड विहीन
भइयेँ जाएत। मन बेकाबू (रेहना चाचीक) मे' गेलनि। मुदा विसवास देलकनि।
विसवास ई देलकनि जे अबैया दिन सुखैया त अछिहे अपन जिनगीक इतिहास भइयोँ रोज दिन
जिनगी लूटि लेत बात। बजली- ओना खरबी कुहने देहो ढह-ढरा गेल, मुदा मन आबो अइ-ए जे
सब छोड़लौं। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी। उमर लगल जे आब गेलौ
गामक लोकक कारोबारे या चलैये रस्ता कटि-खोंटि गेल।'

एक संग किसुन भाइक मन मे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलनि,
मुदा ओहिना मुड़ी आ टाँग कटल लाश (लहाश)केँ परखब कठिन
भइ जाइ-ए तहिना रेहना चाचीक बात सुनि भेलनि। छीना-झपटी-झपटी
कि छीना-छीनी, ओइह ने जे ओहिना प्रखर वक्ता सभ अपन मेंहिका
चाउर मे मोटका चाउर कैहि काज ससारि लइ छथि आ कि
मोटको चाउर मे मेंहीका केहि दइ छथिन। मुदा अनेरे मन बौआबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-
'चाची, अहिया जे गेल, से गेल, आब नीके छी कि ने?'

किसुन भाइक बात सुनि रेहना चाची निसमित भइ गेली। निसमित
ई अर्थ मे भेली जे घैरह देह छी, अपन गाम लगा पाँच-गामक
लोक सँ हबो-गब कौ देलौं, आ खैनो-पीनो कौ देलौं, सब कपाड़ सम-सूर सँ
ते छिनाइये गेल कि ने। ओना आब अपन उमेरो ने रहल जे
माथ पर पथिया लइ चारि गाम घुमि रोजगार करब। रेहना चाची बजली-
'आत्मा-भगवाने भगवान अजार हेरि लेलनि, मुदा केतेक अपन बेटा-पोता
बैरर बेसने, कौआ ओहो ने देलो केलनि।'

रेहना चाचीक उत्तर किसुन भाय नीक जकाँ बूझि सकला तेकर
कारण भेलनि जे लगले सुतलकहि (सुतबाक) जे बेटा-पोता हेरि
लेलनि आ लगले सनतरा जे प्रप्रोंग बच्चा छी आ भागिन
जमाइक परिवार मे रहै छी। मन कैँ सोझरबैत किसुन भाइ बजला-
'चाची हमरा ओहिना मन अछि, जखनि माइओ आ अहूँ एके
लीन वैसि सेबो करी आ नीक-अधला गप्पो करी।'

किसुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सन्तरि
कालेक जिनगी बिजलोक। जकाँ मन मे चमकलनि। करिआइल मेघ
बदरिआइल मौसम, खदिआइल राति मे
बीच-बीच मे जेना बिजलोका चमकै-ए तहिना ओ
अपन इजोतक संग अनाज कोत कहैत ए जे उम वाली
इजोत छी, आकि पीड़ी! पीड़ी दुर-देखाक
होइ-ए वाली लगल। सतत अपने सात मे
कि सतक। वकिल एक देलत। आ त अपने

पृ०-४

रेहना चाचीक आँखि मे आइ किसुन भायकेँ ने अइ चलानि छने बइ। दिन सेहो झुक-झुका गेल। सूर्य तँ डूमि गेल मुदा लाली औहिना पसरल। किसुन भाए बजला – 'चाची, अखनि तँ दिन निसचित ए नइँ भेल, मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ निऔंन करै छी।'

किसुन भाइक निऔंन सुनि रेहना चाचीक मन हरुकलनि। मन हरुकलनि ई जे ओइ (पहिलुकें) जुग-जमाना रहल आ कि ओइ सँ नीको-अधला भेल। नीक अधलाक बीच रेहना चाची बोझक तर पड़ि ~~बौकिया~~ मेली ~~औचिया~~ ओली। जे किछ संबंध छल, कोरा-कौंछ तर केते दिन किसुन भायकेँ नेने छी पाबैन मे पवनौट रहुएलौं, अपने कते खेलौं, तेकर कोन हिसाब। जिनगीमे ओही भरोसे कौतलछि आब ओतै पहुँच पाबूक सके छी। केना पाबि सकै छी? जेहेन लोक अधला काज करै छल, तेहेन गंगा जल सँ सिकत कऽ नीक बनौल जाइ छल, मुदा आइ लोक अबेनो बनौल जाइ-ए। मुदा मोहन तँ जरूर सिखा गेल तेहेन कि, उपाए इएह। ~~सँ नीक बनौल जाएत। ... रेहना चाचीक मन ओझरा~~ रेहना चाचीक मन ओझरा गेलनि। मुदा सोझका नजरि जकाँ जेना मन मे (रेहना चाचीक मनमे) भुकभुका दनि उगलानि। उगलनि ई जे जँ कहीं दाजेक चर्चा पाछु पड़ि जाएत आ अनेरुए फजिलोइ गप सोँझ पड़ा देत तइ सँ नीक जे ~~कामक नागरि पकड़ि धार पार होउ~~। बजली – 'बौआ, दोओं-कौड़ी लेबइक हेन ?'

दोआ-कौड़ीक बात सुनि किसुन भाइक मन पुलकलनि। बजला – 'चाची, अखनि गपे-सप (विआहक) उठल हेन, ओ सब गप पछुआएले अछि, जखनि विआह मे ऐबे करब, तखनि सब गप बुझा देब।'

किसुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मन मे उठलनि, जेते अल्ला-मियाँ, परिवार सबकेँ झाँपन-तोपन दइते रहलनि ततै ने नीक। भगवान सबकेँ नीक करथुन। बजली – 'किसुन बौआ, देखते छह जे आब अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै ओकर नहि रहलौं, मुदा पोताक विआह देखैक मन तँ होइते अछि, से .....।'

रेहना चाचीक बात सुनि किसुन भाए गुम भऽ गेला। ~~बिचार कै~~ गुम इ भऽ गेला जे कि रेहना चाचीकेँ एहेन काज मे निऔंन करा कऽ जाए पारब। कि समाज एकरा पसिन करत? ~~समाज बदलल, समाज~~ जे दुरकाल समै बनल जा रहल अछि ओ भरिआएल जरूर अछि। मुदा जाबत तर पड़ल औंगरी ओ जँ निकालि नहि ~~सकब~~, त जेब, त जाँतक काजे केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या त पीसिया हएत आ कि त औंगरी पिसाइत। ~~मुदा~~ भबिस भबिस देख।

कथा - अकाल (मे पड़ल छी) - नारी चित्रण - पृ० - १

किरिण फुटिते सुगापटीवालीक माथ पर, दस-बारह टा छिट्टा-पथिया गेटल देखि बौंकी दीदी - दुइलखिन - दुइली - आइ भोरे-भोर केम्हर दिन उगल, हए सुगापटी वाली ?

बौंकी दीदीक- बोल जना सुगापटीवालीक मन के हौंड़ि देलक। ओना बंटा-बंटा भरि बौंकी दीदी लग कोसी सुगापटीवाली अपनो आ अपन परिवारे टाक नहि, देश-दुनियाँक गप्पो-सप भेंत आ कइस तेबाइस खैनो भेंत। स्वासथ्य पावनिक ठकुआ आ भोजकाजक लड्डू त अइबाधे (अइबेध) क' बौंकी दीदी पुतोहू सब से चोरा क' सुगापटीवाली ल' रखबे भेंत। दसो-बारहो टा छिट्टा-पथियाक गेट भत ऊपर से उताड़ि सुगापटी वाली अँगनाक मुँहथरि पर रखलक। भत पसौना छिट्टा स ल' क' बसहीला, बहाउर केबाक संग सगतोड़ा सगाधुआ चढ़िक गेट। करीब महीना दिन पछाति बौंकी दीदी कें सुगापटीवाली से भेंट भेल छलनि, तैं मास दिनक गप्पो-सप बाकीये, जे बात सुगापटी वाली कुर्हैत आ दीदीओ। माथक छिट्टा उताड़ित (उतैड़ते) दीदीक नजरि सुगापटीवालीक मुँह पर पड़लनि। मनहुआएल मरल मुँह मौलाएल फूल जकाँ बुझि पड़लनि। मुदा बजली किछु ने, नइ बजैक कारण भेलनि जे अपने मन से बुझलनि जे जरूर कोनो बेर-बिपति (बिपैत) मे बेचारी पड़ल अछि। आन दिन केहेन लहटमारि मुँह देखै छलियै आ आइ किअए धुमनाइल मोलाइल बुझि पड़ै ए। देना बेचारी कें बेथाक बात बुझि भारो लटकाबियै। तइ से नीक किअए ने दोसरे-तेसरे बात बुझि गपक धार (बिचारक धार) मे भसिया दियै। अनेरे त अपने अपने सब, बाजि जाएत। तइ मे एक मासक कथा-पुराण पड़ु भाइल अछि। जखने पैछला गपक (अंतिम गेंटक) नांगरि पकड़ा देबइ कि अनेरे ने बड़बड़ाए लागत। तइ मे जे अपना बुझैक अछि से बुझि-परोखि लेब। सैह सोचि दीदी बजली - 'कनियाँ, कतै कतेऽ हेराएल छेलहुँ जे एते दिनक पछाति नजरि पड़लहुँ ?'

बौंकी दीदीक प्रश्नक उत्तर नइ देने सुगापटीवाली उचित नइ बुझलक, उचित ऐ दुआरे नइ बुझलक जे प्रश्नक उत्तर बिनु पौने प्रश्नकर्तौक मन मे उठि जाएत जे भरिसक कोनो बातक कचोट हमरा से नै भेल हेतै तँए नइ बजै ए। मलिन मनक बात रखैत सुगापटी वाली बजली - दीदी, हिनका से लाथ कोन? लोक कें बेटा सोग सहल जाइ छै मुदा धन सोग नइ सहल जाइ छै। ऐबेर भगवान हमरा सब के जबर मे द' देलनि।' कहि सुगापटीवाली गाल दिश बहैत नोर कें आँचर से पोछै लगली। मुँह पर आँचर पड़िते आइक

झपा गेलनि। मुदा बौकी दीदीक मन ओतै लटकल जे बेधाउकपा कतेक ओत। मुदा से कते- कत बौदीक लाखा जकाँ छिड़िआयल। छिड़िया गेल।

शिकार फसैत नइ देखि बौकी दीदी दोसर बाण छोड़लनि। बजली- 'कनियाँ आब त अपना अरनाड़ो बीत गेल, आब किअए मन पसौना छिद्दा आ सगतोड़ा (धुआ) पथिया बीनै (बीनौ) छह?'

भरि मुँह बौकी दीदी ऐ दुआरे ने बजैत जे जखन हमरा कुनो कुते केकरो सेनीक नइ पाएल होइ ए तखन अनेरे किअए केकरो जिनगीक सोग-पीड़ा जगा पीड़ित करबै। मुदा बौकी दीदीक बाणि सुबाणि भेलनि। जना बेमारी मे पड़ल किओ, कष्ट सँ भीतरे-भीतर कुहरैत अपन वेथा मू-मुमाएत तहिना सुगापटीवालीक मुँह मुमुआएल- 'दीदी, हिनका त अपन पेटक बात सब दिन कहै छिअनि, तैँ नइ कहिऐनि सेहो नीक हएत। बड़का अकाल मे पड़ि गेने कुचियो बाँआ गेल अछि?'

सुगापट्टीवालीक बात सुनि बौकी दीदी सहमली, मुदा जे मन मे छोड़ि से अखनो नइ बुझि पड़नि। बजली- 'अखन जेना मन फुड़ै छै आबि जाइ-ए। अकालोक कि जड़ि-पालो अछि।'

बौकी दीदीक बात सुनियो क' सुगापटीवाली अनठौलक। ओना आनि क' नइ अनठौलक, भेलइ इ जे अखन पथियाक चर्चा दीदी केलनि तखन सुगापटीवालीक मन अपन वेथा मे तेना जे सुधियो-कुधि घुसुकि गेल छलैक। मुदा दोसर प्रसंग पछाति ओइह अपन हिस्सेदारी मंगैत आगू आबि बाजल- 'दीदी, महिना दिन पहिने, इ सब (छिट्टा-पथिया) बनेने छलौं, किअए त महीना दिन रोजगार अमबेचा टोकरी बनबै मे लगौ छल, नफगर काज। चारि टा पेटी आ चारि टा कारा मे टोकरी बनि जाइ-ए। दिन-राति खटि क' पाँच-दस हजार हाथो-मुट्ठी मे बचा लइ छलौं, से तइ मे अकाल पड़ि गेल।'

सुगापटीवालीक बात बौकी दीदीक मन मे धँसलनि। मन मे धसिते जना फुन-फुनी चोलकनि। फुन-फुनी इ चोलकनि जे आपनो हैसियत सभ-मे कते-दिन आ कते राति अन्न बिनु कटल अछि। दिन त कटि गेल मुदा ओकर भीतर जे सोग-पीड़ा अछि, से त कटबे ने केलनि। पाबनि-तिहार के कहै जे, अनदिनो बेचारी कै एक मुट्ठी खरखाड़ ले छटते दिये पावनि मे पकवान छटते छिऐ, जँ कहीं राति मे मानस नइ भेल होए त केना छआयल मन-एक मनकेँ भारी बोकरा (पथियाक जाक) ल' क' बेचै जाएत। तइ मे बड़का छिट्टा (भने पसौना) आब के लेत। लगनो त लगिचाइये गेल। बड़ भदवरिया आइओ भोजो तै नीक उठाइके रखि लइ।

पृष्ठ - २

मासे-मास (खूब) भेड़ (धापक भोज) पछुआ सालक अंत होएत-होएत भोज निबटा लइ-ए। तहिना अमतोसे भरिया अछि। तेहने साग धुआँ धुनि सेहो अछि। एक त फड़ाएल साग दोसर कफ-हैरक धर, सेहो बनिते जाइ-ए। अहाँ के एक त भदवारि मे लोक साग खाइ-ए कि पिल्लू। फड़-फड़ खनाइ-ए। त भदवारि ओइ पिल्लू कें हे अर्थ सागक पिल्लू लोक पिल्लू नहि बुझि फड़ै किअए नहि बुझैत मौसमक पिल्लू नहि बुझै। पिल्लूक अर्थ उ नहि जे केवल गंदे जगह पिल्लू होइ-ए, पैदा होइ-ए, सागे सँ लए अमृत फल धरि पिल्लू पैदा होइ-ए, तेहेन एकटा थर्मामीटर नापि कें। रहै-ए। जहिना रंग-रंगक बौंसं रंग-रंगक फाड़ा, पोलू, माछी, इत्यादि पैदा होइ-ए, तहिना रंग-रंगक गुणो अवगुण त पैदा करिते अछि। बौकी दीदी

बौकी दीदी बजली- 'कनिया, गप-सड़क्का पाछुओ हेतइ; पहिने इ कहइ जे रौतुका खेलहा घर कि भुखल?'

बौकी दीदीक बात सुगापटीवाली कें अनसोंहात जेहाँ बुझि पड़लनि। पड़ल अनसोंहांत इ जे अखन भोरे छै, रौतुका भुखल हुअए आ कि भरि पेट खेलहा, आब ने लोक मुँहो-कहाय बुझत आ मानसक (खेवाक) ओरियानो (ओरिओनो) करत। अखन जे बाजिये देब जे भुखल छी, त दीदीयों येह ने बुझती जे कनी बिलमि जाए, सेहो कि भुजा भुजबते छी, खा कु' जइहइ।' मुदा काल्से मन उनहि गेलइ, जे तीन-तीन चारि-चारि दिनक पावनिक उठुआ, आ भोज-काजक लड्डू त सेहो दीदी रखने छथि। सामंजस्य करैत सुगापटीवाली बाजलि- 'हिनका ऐ एगाम (बौकी दीदी एगाम) खाइ-पीबै मे कोनो कि लाज-धाक होइ-ए। अखन मन हएत मांगियो कु' खा लेब।'

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदीक मन थमलनि। मन थमिते आगूक बात (वेथा-कथा) सुनैक इच्छा भेलनि। मुदा बाइ रे मिथिलांगना, कठिन सँ कठिन (भारी-सँ भारी) दुख-पीड़ाक बोझ माथ मे समेटि रखने रहै छथि, मुदा पति वा परिवारक बीच नहिये रखैक राखब नीक बुझै छथि। ओना नीको त अछिये। पुरुष हुअए आ कि नारी, जौं अपना दुख-पीड़ाक निराकरणक ओरियान अपने करै त ओ घी-ओ से चिक्कन बाट चलब भेल। मुदा जौं ने अपने की आ ने परिवारक बीच राखी त ओ दुखद जरूर भेल। बौकी दीदी बजली- 'कनिया, कहैन कहलहुँ बड़का अकाल?'

बड़का अकाल सुनि सुगापटीवाली चौंकि गेलि। चौंक इ गेलि जे हवा-बिहाड़ि कें लोक अनितो देखै-ए आ भाइतो देखै-ए, मुदा भेल कतौ, आ बजरि गेल अपना उपर। हजारो-लाखो बीघाक गाछी-कलम (आमक) नइ फड़ल, किसानक साल भरिक उपज मारल गेल। मुदा अपन त किछु ने नोकसान भेल, मुदा तैं कि जिनगी नइ मारल गेल। अपनो परिवारो समाजोक जिनगी त मारले गेल अछि।

पृ०-४

सबेरे-सबेरे (भोरे-भोर) सकाल-अकालक चर्चे चलाबब नीक नहि। ई त दुखक
निषय छी।
तेकालक छी। मुदा बौकियो दीदी रगड़ाइए। रगड़ि क' सुनबे चाही।
विचित्र स्थिति देख सुगापट्टीवाली बाजलि- दीदी, दुख-बेथा
कि कतौ पड़ाएल जाइ-ए, अभागी लोकक त भाग्येमे लिखल छै,
गरीब-लोकक जनमो-करमो छियै
अखन भिनसुरका समै छी, जँ पछिया बिका जाएत त बौकी
आ अपनो
बच्चाक मुँह मे जाबी नइ लगत। बेचि क' घुमै काल (बेर)
किस्सानी सुना देलनि।
खेबो करबनि आ अकालोक किस्सा।
सुगापट्टीवालीक विचार बौकी दीदी कें पँचलनि। मनो कहै
विस (विष) विर्ख (विषी) चोन्ने
मुदा तइओ मन मे तेहेन खुट-खुटी रहनि, जे पनचैती त मानै
छी मुदा खुद्दा गरब अहीठाम। फेर दोहरबैत बौकी दीदी बजली- कनियाँ
छौंड़ो-छुँड़ि जे कहि देने रहबइ कि अकने, ते अपनो विचारब
पहिने
आ तोरो सँ खनिसतर सुनब पहिने सुनि लेब।
बौकी दीदीक रगड़ देखि सुगापट्टीवाली बाजलि- दीदी,
आमो
ऐ बेर आम नइ फड़ने महीना दिनक खेनाइ पर आफत भ'
आ रोजगारो चलि गेल।
गेल। एक वा चारि-टा पेटी (बौकक पोरक) आ चारि टा कारक
आ चारि टा कैमची सँ
एकटा टोकरी बनि जाइ छै। भरि दिन मे चालिस-पचासो टा बना लइ छलौं। दिन-रातिक
(आमक) महीना दिनक काज नइ परि जे बेपारी आ किसानसे
काज पसरल रहै छल। राति क' डिबिया लेसि क' खाइ-बेर तक काज कौं,
चलै छल। टोकरीक दामक संग-संग किसानो आ बेपारियो ततेक पाकल आम दइ छलै जे
ऐठाम आइ छी, आ छोटा-छोट पाकल आम द' दइत छलौं, मुदा
से ऐ बेर नइ भेल।
बौकी दीदी कें सेहो तीन बीघा गाछी-कलम। ओना
परिवारक हिसाब से बौकी दीदी कें बेसी गाछी-कलम छनि, मुदा
किसानी जिनगी मे सब रंगक खेतीक अपन महत छै। कहाइत
बौकी दीदी कें
दुआरे बेसी-गाछी कलम छनि। सुगापट्टीवालीक सुर मे सुर
(सुर मे सुर) मिलबैत बौकी दीदी बजली- कनियाँ बिनु
भाग तेहने अपनो भाग मे भ' गेल।
रहनो जेहने तोहर कपार तेहेना रहनो अपनो कपार। भाग आ तोरो।
एके रंग भेल कि ने। अखन हमहीं टा किअए, हजारो-लाखो किसान
छाती मे मुक्का मारि जीबिते छथि, आ तों कि मरि जेबह।
समै कतौ दूर चलि गेल। फेर आम फड़त, तोहर टोकरी
क' धंधा चलबे करतह। भेल त बीच मे किछु दिन,
तइ ले अनेरे सोग-पीड़ा मन मे किअए रखने छह। बिसरि
जाह।
~~बौकी दीदीक ... जिनगीक~~ चौरि छौन
बौकी दीदीक बात सुनि सुगापट्टीवालीक मुरझाएल मुँह
खिलिया गेल। पछियाक भाव मे उठा सुगापट्टीवाली- किसनी-गा
किस उठा बढ़ौलक।



परिचय : पाण्डुलिपिकार

नाओं : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र)

जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती)

सम्मान/पुरस्कार : 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

साहित्य लेखन : 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक- लघु कथा संग्रह।



परिचय : सङ्कलन कर्त्ता

नाओं : उमेश मण्डल- जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : प्रारम्भिम शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए.- एल.एन.जे. कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)। एम.ए. (मैथिली), बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुर। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (UGC NET- June: 2015), **प्रकाशित रचना :** निश्तुकी (पद्य संग्रह), संस्कार गीत, विध-बेवहार गीत आ गीतनाद (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक पहिल संकलन), मिथिलाक जीव-जन्तु/वनस्पति और जिनगी'क डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त लोकगीतक रेकार्डेड ऑनलाइन ऑडियो और वीडियो डिजिटल संकलन। **सह सम्पादक :** विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका एवम् विदेह-सदेह पत्रिका- ISSN 2229-547X VIDEHA. संग सम्पादन : (1.) विदेह मैथिली विहनि कथा (विदेह-सदेह- 5), (2.) विदेह मैथिली लघुकथा (विदेह-सदेह- 6), (3.) विदेह मैथिली पद्य (विदेह-सदेह- 7), (4.) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (विदेह-सदेह- 8), (5.) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (विदेह-सदेह- 9), (6.) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (विदेह-सदेह- 10) **सम्पर्क-** तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06, निर्मली, पिन- 847452, जिला- सुपौल।

उपरोक्त पोथीसभक e-version videha.co.in आ pothi.com परसँ download कएल जा सकैत अछि।

₹ 500



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

